मँगनीके मियाँ

लेखक—

रामचन्द्र वर्मा

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका ८३ वाँ ग्रन्थ

मँगनीके मियाँ

[एकांकी प्रहसन]

लेखक

बाबू रामचन्द्र वर्मा

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय

चैत्र, १९९२

अप्रैल, १९३५

मूल्य बारह आने

प्रकाशक—नाथूराम प्रेमी
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-कार्यालय
गिरगांव–बम्बई

मुद्रक—रघुनाथ दिपाजी देसाई
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
६ केळेवाडी, बम्बई नं० ४

निवेदन



यह 'मँगनीके मियाँ' चार दृश्योंका एक प्रहसन है जो श्री० लैरी ई० जान्सन कृत Her Step-husband नामक अँगरेज़ी प्रहसनका छायानुवाद है। मूल पुस्तकमें पाश्चात्य समाजका जो दृश्य था, उसे भारतीय रूप देनेके लिए इस छायानुवादमें अनेक परिवर्तन और परिवर्धन करने पड़े हैं और बहुतसी ऐसी बातें, जिनके लिए हिन्दू समाज तथा संस्कृतिमें कोई स्थान नहीं है, बिलकुल छोड़ देनी पड़ी हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मूल लेखककी कल्पनाशक्ति और सूझ बहुत ही अद्भुत है और इसी लिए इस प्रहसनमें परिहासकी सामग्रीके अतिरिक्त वैलक्षण्य भी कम नहीं है। और इन्हीं सब बातोंके विचारसे इस प्रहसनको भारतीय रूप दिया गया है। आशा है, हिन्दी-प्रेमी पाठकोंका इससे यथेष्ट मनोविनोद होगा।

काशी
१८ फरवरी, १९३५

निवेदक—
रामचन्द्र वर्म्मा

पात्र-गण



कुसुम—रमेशकी रोमान्स-पसन्द पत्नी
कमला—कुसुमकी सखी
दुलारी—कुसुमकी मौसेरी बहिन
रमेश—कुसुमका असली पति
अशोक—कुसुमका बनावटी पति
मोहनलाल—कुसुमका नाना, जमींदार
रामूँ—नौकर
भोला पाँड़े—जेलसे छूटा हुआ चोर
थानेदार, आगन्तुक, आदि



द्विजेन्द्र-नाटकावली

मेवाड़-पतन	(ऐतिहासिक)	॥।=)
दुर्गादास	,,	१)
शाहजहाँ	,,	१)
नूरजहाँ	,,	१=)
राणा प्रताप	,,	१॥)
ताराबाई	,,	१)
चन्द्रगुप्त	,,	१)
सिंहल-विजय	,,	१॥)
सीता	(पौराणिक)	॥=)
भीष्म	,,	१।)
अहल्या (पाषाणी)	,,	१=)
सुहराब रुस्तम	,,	॥=)
भारत-रमणी	(सामाजिक)	॥।=)
उसपार	,,	१।)

प्राप्तिस्थान—

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई

मँगनीके मियाँ

पहला दृश्य



[स्थान—कुसुमके घरकी बाहरी बैठक। कमरेके बीचमें एक छोटा टेबुल और उसके आसपास तीन चार कुरसियाँ पड़ी हैं। टेबुलपर एक ग्रामोफोन टेढ़ा पड़ा है। प्रायः चीजें बिखरी हुई हैं। दो तीन दरवाजोंपर परदे टाँगनेकी खूँटियाँ तो लगी हैं, पर उनमें परदे नहीं हैं। टेबुलपर एक छोटी घड़ी भी है जिसमें पौने सात बजे हैं। रामूँ नामका एक लड़का टेबुल और कुरसियाँ झाड़-पोंछ रहा है और चीजें सजाकर ठिकानेसे रख रहा है। कुसुमकी सखी कमला कपड़ोंकी एक गठरी लेकर बीचवाली दीवारकी खिड़कीपर आती है और खटखटाती है। रामूँ खिड़की खोलता है।]

कमला—क्यों जी, तुम कौन हो? कुसुमके नये नौकर?

रामूँ—जी हाँ।

कमला—कुसुम कहाँ है?

रामूँ—अन्दर कपड़े बदल रही हैं। मैं जाकर उन्हें आपके आनेकी खबर दूँ? अपना नाम बतला दीजिए।



कमला—मेरा नाम कमला है। मैं पड़ोसमें ही रहती हूँ। पर अभी उन्हें जाकर ख़बर देनेकी जरूरत नहीं।

रामूँ—जी हाँ, मालकिनने पहले ही कहा था कि आप आती होंगी।

कमला—देखो, मैं ये चीजें लाई हूँ। ये ले लो। (कमला गठरीमेंसे परदे आदि निकालकर रामूँको देती है। फिर एक शीशा निकालकर रामूँकी तरफ बढ़ाती हुई) देखो, इसे सँभालकर टेबुलपर रख दो। टूटने न पावे। (चाँदीकी एक थाली निकालकर) और लो, यह चाँदीकी थाली है। देखो, काम बहुतसे हैं और समय बिलकुल नहीं रह गया। जल्दी जल्दी सब काम निपटाने हैं। लाओ वह परदे मुझे दो; मैं दरवाजोंमें लगा दूँ। पर नहीं, पहले यह ग्रामोफोन उठाकर उधर खिड़कीके पास ले आओ। इसे ठिकानेसे रख दूँ।

रामूँ—बहुत अच्छा।

(कमला एक तिपाई खिड़कीके पास रखती है और रामूँ ग्रामोफोन उठाकर उस तिपाईपर रखता है।)

कमला—क्यों जी, रमेशजी घरमें हैं या नहीं?

रामूँ—जी, मैंने तो अभी तक उन्हें नहीं देखा।

(कमला एक कुरसीपर खड़ी हो जाती है। रामूँ उसे एक परदा देता है और कमला वह परदा टाँगती है। इतनेमें एक ओरसे कुसुम आ पहुँचती है।)

कुसुम—वाह बहन कमला, तुम भी धन्य हो। तुम्हें आये कितनी देर हुई? भला तुमने मुझे बुलवा क्यों न लिया? अकेली ही सब काम कर रही हो। मैं भी आकर कुछ मदद कर देती। (रामूँको ओर देखकर) क्या नाम है जी तुम्हारा? मुझे तो नाम भी जल्दी याद नहीं रहता।



रामूँ—जी, मेरा नाम रामूँ है।

कुसुम—हाँ ठीक, रामूँ रामूँ। हाँ जी रामूँ, जरा उस कमरेमें जाकर देख आओ, लड़का सो रहा है न!

रामूँ—जी हाँ, मालूम तो होता है कि सो गया है। रोनेकी आवाज तो नहीं आती।

कुसुम—उसके चुप रहनेसे ही मत समझ लो कि वह सो गया है। उसने सारा बिछौना तर कर डाला होगा और मुँहमें कम्बल लेकर चबा रहा होगा। जरा जाकर देख आओ तो।

रामूँ—बहुत अच्छा।

(रामूँके हाथका परदा कुसुम ले लेती है। रामूँ जल्दी जल्दी अन्दर जाता है।)

कमला—यह लड़का तो बहुत होशियार जान पड़ता है। यह तुम्हें कहाँसे मिल गया?

कुसुम—यों ही भाग्यसे मिल गया। कामकी तलाशमें घूम रहा था। मैं बाजारसे अपने साथ लेती आई। काम करनेमें खूब तेज और होशियार है। जबसे आया है, तबसे बराबर काम ही कर रहा है और सब काम बहुत ठिकानेसे करता है। थोड़ी देरमें बच्चा भी इससे खूब हिल-मिल गया है। कहाँ तो वह जल्दी किसीके पास जाता ही नहीं था और कहाँ इसे छोड़ता ही नहीं। घण्टों इसके साथ चिपटा रहा। जहाँ यह जरा इधर उधर हुआ कि, वह रोया। पर इसकी गोदमें जाते ही हँसने लगता है। कहीं इसके कान पकड़ता है तो कहीं सिरके बाल नोचता है। दम-भरके लिए भी इससे अलग नहीं होना चाहता।

कमला—तब तो तुम्हें चाहिए कि इसे हमेशाके लिए रख लो। आखिर तुम्हें एक लड़केकी जरूरत तो है ही।



कुसुम—हाँ बहन, जरूरत तो बहुत है, पर रख कैसे लूँ। जो कुछ तनख्वाह आती है, उसमेंसे एक पैसा तो बचने ही नहीं पाता। जैसे तैसे काम चलाना पड़ता है और पहली तारीखका आसरा देखना पड़ता है। फिर नौकर कैसे रखूँ और मजदूरनी कैसे रखूँ। पर देखो, आज वे अभी तक दफ्तरसे नहीं आये। रोज तो इस समय तक आ जाया करते थे। पर आज काम है तो उन्होंने भी देर लगा दी। हाँ, यह तो बतलाओ, तुम्हारे मि० मदन कब तक आवेंगे।

कमला—बहन, यह तो मैं तुमसे कहना भूल ही गई थी। आज वे नहीं आ सकेंगे।

कुसुम—वाह, भला यह भी कोई बात है कि वे न आवेंगे! नहीं कैसे आवेंगे! उन्हें जरूर आना पड़ेगा।

कमला—वे यहाँ हैं ही नहीं, तो फिर आवेंगे कहाँसे! वे दफ्तरके एक जरूरी कामसे दोपहरको ही इलाहाबाद चले गये। वहाँ कोई नया होटल बननेवाला है—बहुत बड़ा। उसीका ठेका लेनेका कुछ बन्दोबस्त करेंगे।

कुसुम—उनके बिना तो रमेशका सारा मजा ही किरकिरा हो जायगा। जब दोनों मिल जाते हैं, तब इन लोगोंकी खूब मजेसे कटती है। (कमलाकी लाई हुई चाँदीकी थाली हाथमें लेकर) यह थाली तो बहुत बढ़िया है। कहाँसे ली थी?

कमला—यह तो मेरे ब्याहके समय ही बाबूजीने दी थी।

कुसुम—तब ठीक है। भला मेरे भाग्यमें ऐसी चीजें कहाँ! घरवालोंकी मरजीके बिना ब्याह करनेमें यही तो एक भारी टोटा रहता है कि कुछ मिलता-जुलता नहीं।

कमला—तो क्या तुमने अपना ब्याह सिर्फ अपनी ही पसन्दसे किया था ?

कुसुम—हाँ बहन, बात तो ऐसी ही है।

कमला—तब तो तुम्हारा ब्याह खूब मजेदार हुआ होगा।

कुसुम—उँह, उसमें मजेदारी क्या रक्खी थी ! यों ही जैसे तैसे हो गया। बड़ी बड़ी बाधाएँ उठ खड़ी हुई थीं।

कमला—बाधाएँ कैसी ?

कुसुम—इन्हीं नानाजी और मौसीके कारण। मैं लखनऊमें अपने नाना और मौसीके साथ रहा करती थी और वहीं स्कूलमें पढ़ने जाती थी। उसी समय रमेशसे मेरी जान-पहचान हो गई और धीरे धीरे प्रेम भी बढ़ गया। जब इन्होंने मौसीसे ब्याहके लिए कहलाया तो उन्होंने और नानाजीने भी साफ इन्कार कर दिया।

कमला—तो फिर तुम लोगोंने अपनी इच्छासे चोरी-छिप्पे ब्याह कर लिया होगा।

कुसुम—हाँ बहन, हुआ तो ऐसा ही। बस तभीसे नानाजी भी और मौसी दोनों ही हम लोगोंसे बहुत अप्रसन्न थे। मौसी मेरा ब्याह लखनऊके एक बड़े धनवान् युवकसे करना चाहती थीं। उनका नाम सेठ रतनचन्द था। वे लखपती थे और उनकी एक मिल चलती थी, कुछ जमीनदारी भी थी। उनका प्रेम भी मुझपर बहुत अधिक था। पर मेरा दिल तो इनसे लग चुका था। इसलिए मैं उनकी तरफ देखती भी नहीं थी।

कमला—तब तो तुम्हारे नानजीने रमेशको देखा भी न होगा।

कुसुम—नहीं वे देखते कहाँसे। ब्याहके बाद इन्होंने मौसी और

नानाजीके नाम एक पत्र भेजा था जिसमें उनसे बहुत तरहसे क्षमा माँगी थी और उनसे आशीर्वादके लिए प्रार्थना की थी। यह भी लिखा था कि यदि आप लोग हमें क्षमा कर दें तो हम एकाध महीनेके लिए लखनऊ आवें और आप लोगोंके पास रहें। पर उस पत्रसे उन लोगोंका क्रोध और भी बढ़ गया। उन्होंने उत्तरमें एक बहुत ही अपमानजनक पत्र लिख भेजा। तभीसे ये भी इतने नाराज हो गये कि फिर आज तक इन्होंने उन्हें कोई खबर नहीं भेजी। मेरी एक और मौसेरी बहन है जिसका नाम है दुलारी। अब नानाजी और मौसीने उसे अपने पास बुलाकर रख लिया है। आज नानाजीके साथ वह दुलारी भी आवेगी।

कमला—फिर नानाजी और मौसीके साथ तुम्हारा मेल कैसे हुआ?

कुसुम—जब यह लड़का पैदा हुआ, तब मैंने एक पत्र मौसीके पास भेजा था। उस समय मौसीने इसके लिए सोनेकी एक जंजीर भेजी थी। तभीसे बराबर चिट्ठियाँ आती जाती रहती हैं। भले याद आया। मैंने वह जंजीर कहाँ रख दी? वह जंजीर लड़केके गलेमें पहना देनी चाहिए। (कुछ देर सोचकर) याद ही नहीं आता कि कहाँ रखी है! रामूँ! ओ रामूँ!

रामूँ—(सामने आकर) जी हाँ।

कुसुम—लड़का सोया है न?

रामूँ—जी कुछ पता नहीं चलता। मुन्नू भइया न तो अँगूठा चूस रहे हैं और न रोते ही हैं। चुपचाप आँखें बन्द किये पड़े हैं। मालूम नहीं कि जागते हैं या सोये।

कुसुम——खैर तो फिर वह सो ही गया होगा। अच्छा जरा एक काम करो तो। रसोईघरमें जो छोटी आलमारी दीवारके साथ लगी है, उसमें चाँदीकी एक डिबिया रखी है। उसमें बच्चेकी सोनेकी जंजीर रखी होगी। वही जंजीर निकाल लाओ। और देखो, जरा साबुनसे उसे साफ भी करते लाना।

रामू——जी बहुत अच्छा। (जाता है)

कुसुम——बहन, तुमने कमरा खूब सजा दिया। अब यह देखने लायक हो गया है।

कमला——जरा ठहर जाओ। यह एक परदा इस मेहराबमें और लगा लूँ, तब देखो। (कमला खिड़कीके पाससे एक कुरसी खींच लाती है और उसपर खड़ी होकर मेहराबके आगे परदा लगाती है।)

कुसुम——बहन, तुम तो इस समय मनमें मुझपर खूब हँस रही होगी कि मैं तुमसे चीजें मँगनी माँगकर और इस तरह अपना कमरा सजाकर अपना अमीरी ठाठ दिखलाना चाहती हूँ।

कमला——अजी जाने भी दो, इन बातोंमें क्या रखा है। मेरा तुम्हारा कुछ दो थोड़े है। आपसदारीमें इस तरहकी बातोंका ख्याल नहीं किया जाता।

कुसुम——यह तो तुम्हारी उदारता है। पर मैं भी लाचार थी। यह मौका ही ऐसा आ पड़ा कि बिना तुमसे सहायता लिये काम नहीं चल सकता था। तुम यह तो जानती ही हो कि हम लोग प्रारम्भसे ही गरीब थे। गरीब तो अब भी हैं, पर पहले हम लोगोंके दिन बहुत ही कष्टसे बीतते थे। उन्हें यहाँ जल्दी तो कोई नौकरी मिली नहीं; और पासकी पूँजी भला कितने दिन चल सकती थी। इससे

हम लोगोंको कभी अभी उपवास तक करना पड़ा । वे दिन याद करके अब भी कलेजा काँप जाता है । पर अब परमात्माकी दयासे किसी तरह दाल-रोटी तो मिल रहती है ।

कमला—सबके दिन इसी तरह फिरते हैं । हम लोगोंकी भी किसी समय यही दशा थी । प्रेम एक ऐसी चीज है जिससे आदमी सब प्रकारके कष्ट बहुत प्रसन्नतासे सह लेता है । इन बीती हुई बातोंको जाने दो । पर बहन, मैं देखती हूँ कि तुम्हारे नाना और मौसीका कलेजा भी बिलकुल पत्थरका ही है । वे जानते थे कि तुम लोग इतने कष्टसे दिन बिता रहे हो । पर फिर भी उन लोगोंने तुम्हें कुछ भी सहायता न दी ।

कुसुम—नहीं बहन, यह बात नहीं है । हम लोगोंने उन्हें यह पता ही नहीं चलने दिया कि हम कष्टसे दिन बिता रहे हैं । यही तो इसमें सबसे ज्यादा मजेदार बात है । वे लोग यही समझते थे कि हम लोग बहुत सुखपूर्वक अपने दिन बिता रहे हैं और अब भी वे लोग यही समझते हैं । इसी लिए तो उन लोगोंके आनेपर मुझे इतनी सजावटकी जरूरत पड़ रही है ।

(कमला परदा टाँगकर कुरसीपरसे नीचे उतरती है और कुरसी खींचकर टेबुलके सामने ठीक तरहसे रख देती है ।)

कमला—पर उन लोगोंने यह कैसे समझा कि तुम बहुत सुखसे दिन बिता रही हो ?

कुसुम—अभी मैंने तुमसे सेठ रतनचन्द्रका जिक्र किया था न ! जब मैंने इनके साथ विवाह कर लिया, तब रतनचन्दने भी एक दूसरी लड़कीसे ब्याह कर लिया । उसका नाम विमला है । वह मेरे साथ ही स्कूलमें पढ़ा करती थी । उसे बड़ा अभिमान था

और वह सदा खूब डींग हाँका करती थी। वह प्रायः मुझे पत्र भेजा करती थी और उन्हीं पत्रोंके द्वारा मुझे यह जतलाना चाहती थी कि वह खूब ठाठ-बाटसे और अमीरोंकी तरह रहती है। कभी लिखती थी कि मेरी हवेली ऐसी शानदार है और कभी लिखती थी कि मैंने ऐसा बढ़िया बँगला खरीदा है। अब बहन, तुम्हीं सोचो कि ऐसे मौकेपर मैं उससे कब दबनेवाली थी। मैं भी उत्तरमें उसे इसी प्रकारकी बातें लिखा करती थी जिससे वह समझे कि मैं भी उससे कुछ कम नहीं हूँ।

कमला—(हँसकर) नहीं, नहीं, ऐसे मौकेपर दबना भी नहीं चाहिए। हाँ, यह तो बतलाओ कि तुमने बरतन निकालकर कहाँ रखे हैं।

कुसुम—वह सामने दालानमें रखे हैं। हाँ, तो मैं भी विमलाको बड़े बड़े पत्र लिखती थी जिनमें खूब लम्बी चौड़ी बातें रहती थीं। मैं भी लिखती थी कि मैं ऐसे बढ़िया बँगलेमें रहती हूँ, इतने नौकर हैं, इतनी मजदूरनियाँ हैं। मुझे पत्र लिखना खूब आता है। अगर तुम मेरे लिखे हुए पत्र देखो तो चकित हो जाओ। तुम समझो कि मैं उपन्यास लिखनेवाली कोई बहुत बड़ी लेखिका हूँ। कसर इतनी ही है कि मुझसे लिखनेमें कहीं कहीं ह्रस्व-दीर्घकी कुछ भूलें हो जाती हैं।

कमला—तब तो तुममें बड़े बड़े गुण हैं।

कुसुम—कहाँ तो दिन-भर चौका-बरतन और घरके काम-धन्धे करते करते मेरी जान निकलती थी और कहाँ रातको विमलाको पत्र लिखा करती थी जिनमें अपने बँगले, बाग, नौकर-चाकर और

घोड़े-गाड़ी आदिके सम्बन्धमें शेखियाँ बघारा करती थी। क्यों, है कि नहीं मजेकी बात ?

कमला——तुम्हारी सभी बातें एकसे एक बढ़कर और अनोखी हैं।

कुसुम——अभी और मज़ेदार बातें तो तुम्हें बतलाई ही नहीं। जब मैं लिखती थी कि मैंने दो नये नौकर रखे हैं, तब वह लिखती थी कि मैंने चार रखे हैं। जब मैंने उसे लिखा कि मैंने आठ हजारका नया बँगला खरीदा है, तब उसने लिखा कि मैंने बारह हजारकी नई मोटर खरीदी है।

कमला——मतलब यह कि वह हमेशा तुमसे चार कदम आगे ही बढ़ी रहती थी।

कुसुम——कुछ पूछो मत। मुन्नूके होनेपर मैंने उसे लिखा कि मुझे एक लड़का हुआ है। उसने उत्तरमें लिख भेजा कि मुझे दो लड़के एक साथ हुए हैं!

कमला——(हँसकर) तुम किसी तरह विमलाको मात नहीं कर पाती थीं।

कुसुम——पर बहन, मैं भी उससे कभी दबी नहीं। मैंने लिखा कि मैंने अब अपने बागमें भी बिजली लगवा ली है और दो काश्मीरी रसोइये नौकर रखे हैं। पर कहाँके रसोइये और कहाँकी बात! मैं खूब जानती हूँ कि बड़े बड़े लखपतियोंके घरोंमें भी स्त्रियाँ अपने हाथसे रसोई बनाती हैं। पर बहन, एक बात है। मैं तो सिर्फ मज़ाकके लिए विमलाको ये सब बातें लिखा करती थी। मैं कभी किसीको अवस्थाके सम्बन्धमें धोखा नहीं देना चाहती थी। और मुझे स्वप्नमें भी इस बातका ध्यान नहीं था कि वह मेरे पत्र किसी औरको दिखलावेगी।

कमला—तो क्या उसने तुम्हारे पत्र किसीको दिखलाये भी थे?

कुसुम—ज्यों ही मेरा कोई पत्र उसके पास पहुँचता था, त्यों ही वह उसे लेकर दौड़ी हुई मेरी मौसीके पास जाती थी। बस यही कारण था कि मौसी समझती थीं कि हम लोग बहुत सुखसे रहते हैं। हमारे यहाँ नौकर-चाकर, गाड़ियाँ और मोटरें आदि हैं। आज वह लोग यहाँ आ रहे हैं। अब उन लोगोंके सामने यहाँ कुछ तो होना चाहिए। पर क्या बतलाऊँ, अभी तक कम्बख्त रसोइया ही नहीं आया।

कमला—तो फिर रसोइयेका क्या इन्तजाम होगा?

कुसुम—मैंने हिन्दू होटलवालोंसे एक रसोइया तो ठीक कर लिया है। और मैनेजरने मुझसे कहा भी था कि वह ६ बजे तक यहाँ पहुँच जायगा। पर सात बज रहे हैं और रसोइयेका अभी तक कहीं पता नहीं है। (कुछ ठहरकर) और देखो, आज अभी तक वह भी दफ्तरसे नहीं आये। न जाने कहाँ चले गये। बहन, तुम यहीं बैठी रहो, मैं जरा रसोईघरसे होती आऊँ।

[एक ओरसे कुसुमका प्रस्थान। दूसरी ओरसे रमेशका प्रवेश। रमेश किसी विचारमें मग्न है, इसलिए कमलापर उसकी दृष्टि नहीं पड़ती।]

कमला—आइए रमेशजी, नमस्ते।

रमेश—(चौंककर) कौन? कमला? (चारों ओर चकित होकर देखता हुआ) क्षमा करना। मैं कुछ और ही विचारमें डूबा था, इसलिए भूलसे तुम्हारे घर चला आया। (रमेश लौटकर बाहर जाना चाहता है।)

कमला—(हँसकर) नहीं नहीं। आपने भूल नहीं की है। आप अपने ही घरमें आये हैं।

रमेश—(चकित भावसे इधर-उधर देखता हुआ) हैं, यह माजरा क्या है ? घर तो मेरा ही है, पर इसमें सजावटका सब सामान तुम्हारे यहाँका दिखाई पड़ता है। मुझे अपने घरकी तो कोई चीज़ ही यहाँ नहीं दिखाई पड़ती।

[कुसुमका प्रवेश]

रमेश—(कुसुमको देखकर) कमसे कम यह तो यहाँ हैं।

कुसुम—(बिगड़कर) आखिर तुम आज इतनी देर तक रहे कहाँ ? मैं कबसे तुम्हारा रास्ता देख रही हूँ।

रमेश—रास्तेमें एक काम था, इसलिए जरा देर हो गई।

कुसुम—खैर, जो हुआ, सो हुआ। पर अब ज्यादा बातें करनेका समय नहीं है।

रमेश—(घड़ी देखकर) अभी तो सवा सात ही बजे हैं। कोई बहुत ज्यादा देर तो नहीं हुई। तुम इतनेमें ही घबरा गईं।

कुसुम—तो भी अब तुम्हें बहुत जल्दी करनी चाहिए। रामूने तुम्हारे कपड़े निकाल रखे हैं। जल्दीसे कपड़े बदल लो।

रमेश—रामूँ कौन ?

कुसुम—रामूँ नौकर।

रमेश—नौकर कैसा ? और कहाँसे आया ?

कुसुम—अभी बहुतसी बातें तुम्हें बतलानेको हैं, पर क्या कहूँ, समय बिल्कुल नहीं है। जो कुछ मैं कहती चलूँ, वह करते चलो।

रमेश—(हँसकर) बहुत अच्छा सरकार। जो हुकुम। बतलाइए मुझे क्या क्या करना होगा। (कुसुम टेबुलपरसे एक तार उठाकर देती है।) रमेश पढ़ता है—

Reaching 8 P. M. with Dulari. Will stop with you over night. Proceeding Calcutta to morrow morning.
Mohanlal.

रमेश—तो क्या आज तुम्हारे नानाजी आ रहे हैं?

कुसुम—हाँ।

रमेश—और यह दुलारी कौन है?

कुसुम—यही वह मेरी दूसरी मौसेरी बहन है जिसे नानाजीने आजकल अपने पास रखा है। पर अब तुम्हें बहुत जल्दी करनी चाहिए।

रमेश—आखिर बतलाओ भी कि मुझे क्या करना होगा।

कुसुम—तुम्हें उन लोगोंको लानेके लिए स्टेशन जाना होगा।

रमेश—पर यह तो मुझसे कभी न हो सकेगा।

कुसुम—यह क्यों?

रमेश—पहली बात तो यह है कि उन्होंने यही नहीं लिखा कि वे किस स्टेशनपर आवेंगे। यह भी पता नहीं कि वे रेलसे आवेंगे या मोटरसे आवेंगे या हवाई जहाजसे आवेंगे।

कुसुम—मजाक रहने दो। यह मजाकका वक्त नहीं है। पर यह तुम ठीक कहते हो कि उन्होंने स्टेशनका भी नाम नहीं लिखा। तो फिर अब करना क्या चाहिए?

रमेश—करना कुछ भी नहीं चाहिए। चुपचाप घर बैठे रहना चाहिए। उन्हें हमारा पता तो मालूम ही है। आप ही माँगते-खाते यहाँ आकर पहुँच जायँगे।

कुसुम—पर उन्होंने तार दिया है। यदि उन्हें कोई लेने न जायगा तो वे मनमें नाराज होंगे। खैर, रहने दो। पर अब तुम जल्दीसे जाकर कपड़े बदल लो।



रमेश—देखो कुसुम, मैं तुम्हें किसी तरह नाराज नहीं करना चाहता। पर तुम्हारे नानाजीके सामने मुझसे यहाँ न रहा जायगा।

कुसुम— तो क्या यह चाहते हो कि जब वे यहाँ आवें, तब मैं उन्हें अपने घरमें न आने दूँ?

रमेश—नहीं नहीं। वे तुम्हारे नाना हैं, तुम उन्हें शौकसे अपने घरमें रखो। वे जब तक चाहें, तब तक बहुत खुशीसे यहाँ रहें। मुझे कुछ भी आपत्ति नहीं है। पर जब तक वे यहाँ रहेंगे, तब तक मैं यहाँ नहीं रह सकूँगा। मेरी उनकी पटरी किसी तरह बैठ ही नहीं सकती।

कुसुम—वाह! यह भी कोई बात है!

रमेश—नहीं प्यारी कुसुम, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मैं उनके सामने यहाँ नही रह सकूँगा। जब मेरा उनका सामना होगा, तब मेरा मुँह बन्द न रह सकेगा और कुछ न कुछ कहा-सुनी हो ही जायगी। मुमकिन है कि मेरे मुँहसे कोई ऐसी-वैसी बात निकल जाय, इसलिए उनके आनेपर मेरा यहाँ न रहना ही ठीक है। कमला, शायद तुम्हें तो ये सब बातें नहीं मालूम होंगी। पर इनके इन्हीं नानाजीने और इनकी मौसीने हम लोगोंके ब्याहमें बड़े बड़े बखेड़े खड़े किये थे।

कमला—हाँ, इस तरहकी कुछ बातें तो अभी बहन कुसुमने मुझे बतलाई थीं।

रमेश—मुझसे जहाँ तक हो सका, मैंने झगड़ा बचाया और कोई अनुचित बात नहीं होने दी। यहाँ तक कि ब्याह होनेके बाद मैंने पत्र लिखकर उनसे क्षमा भी माँगी और हर तरहसे मैं

उनके सामने दबा। मैंने यह भी लिखा कि मैं लखनऊ आकर कुछ दिनों तक आपके पास रहना चाहता हूँ। क्यों कि मैं नहीं चाहता थी कि हम लोगोंमें किसी तरहका बिगाड़ हो। पर उन्होंने मेरे पत्रका ऐसा अपमानजनक उत्तर दिया कि मेरा मन फट गया। इसी लिए अब मैं उनका मुँह भी नहीं देखना चाहता। अगर मेरा और उनका सामना हुआ तो जरूर झगड़ा हो जायगा। और ऐसा होना ठीक नहीं है।

कुसुम—तुम जो कुछ कहते हो, वह सब ठीक है। पर जरा यह भी तो सोचो कि लड़का होने पर उन्होंने सोनेकी जंजीर भेजी थी और तबसे बराबर उनके पत्र आते रहते हैं।

रमेश— वे एक नहीं लाख जंजीर और पत्र भेजा करें। पर मेरे कलेजेपर उनकी बातोंसे जो जख़्म हुआ है, वह इस ज़िन्दगीमें थोड़े ही भर सकता है। जरा तुम्हीं सोचो कमला, जो कुछ मैं कहता हूँ, वह ठीक है या नहीं। मुझे इस बातका दुःख नहीं है कि उन्होंने मुझे अपने घर नहीं आने दिया। उनका घर था। वे जिसे चाहते, उसे अपने यहाँ आने देते और जिसे न चाहते, उसे न आने देते। पर उन्होंने मेरे पत्रका जो उत्तर दिया, वह बहुत ही अपमानजनक था। वह अपमान मैं कभी भूल नहीं सकता। मेरे मनमें तो उसी समय आया था कि लखनऊ पहुँचकर दाढ़ी पकड़कर उन्हें घसीटता हुआ गोमती तक ले जाऊँ और वहीं गला दबाकर उन्हें ....(गला पकड़कर नदीमें डुबानेका नाट्य करता है। कमला हँसती है।)

रमेश—नहीं कमला, यह हँसनेकी बात नहीं है। उनकी बातें याद करके मेरा खून खौलने लगता है।

कमला—क्षमा कीजिए रमेशजी । हँसनेकी बात तो नहीं है; पर आपका अभिनय देखकर मुझसे अपनी हँसी रोकी नहीं गई।

कुसुम—लेकिन अगर तुम यहाँ नहीं रहोगे तो फिर आखिर रहोगे कहाँ ?

रमेश—पहले तो मैं सिनेमा चला जाऊँगा और तब वहाँसे किसी होटलमें या किसी मित्रके यहाँ जाकर रात बिता दूँगा।

कुसुम—लेकिन मैं नानाजीसे क्या कहूँगी? यदि मैं उनसे यह कहूँ कि तुम उनसे नाराज होनेके कारण यहाँसे चले गये हो, तो उनको दुःख होगा। और अगर मैं उनसे बनाकर कोई बात कहूँ तो शायद तुम भी मेरा झूठ बोलना पसन्द न करोगे।

रमेश—नहीं, मैं यह नहीं चाहता कि तुम किसी दशामें भी झूठ बोलो। तुम कह सकती हो कि मैं यहाँ नहीं हूँ; और इसमें कुछ भी झूठ नहीं है। तुम कह देना कि मै बाहर गया हूँ। और यह भी ठीक ही होगा।

कुसुम—(कुछ देर तक सोचकर) अच्छा जो होगा, वह देखा जायगा। मुझे याद आता है कि मैंने एक पत्रमें विमलाको लिखा था कि तुम बहुत लम्बे-चौड़े और हृष्ट-पुष्ट हो और तुम्हारे बाल भौंरेकी तरह काले और खूब घुँघराले हैं।

रमेश—(खूब हँसकर) शाबास बहादुर।

कुसुम—पर यह तो बतलाओ कि तुम भोजन कहाँ करोगे ?

रमेश—तुम मेरे लिए किसी बातकी चिन्ता न करो। मेरे लिए खानेकी जगहकी कमी नहीं है। जहाँ होगा, वहीं खा लूँगा।

कुसुम—अच्छा तो फिर तुम जल्दीसे निपटकर तैयार हो जाओ,

क्योंकि उन लोगोंके आनेका समय हो रहा है। (रमेश उठकर जाना चाहता है) हाँ देखो, आज मैंने तुम्हारा कमरा नानाजीके लिए खाली कर दिया है और अपनी कोठरी दुलारीके लिए खाली कर दी है। बच्चेका पालना भी वहाँसे हटाकर बड़े कमरेमें रखवा दिया है।

रमेश—गुसलखाना तो जहाँका तहाँ है न ?

कुसुम—गुसलखानेकी अब तुम्हें जरूरत ही क्या है ? अब इतना समय भी नहीं है कि तुम स्नान कर सको। जाओ, जल्दीसे कपड़े बदल लो। (बाहरसे दरवाजेके खटखटानेकी आवाज आती है) लो, मालूम होता है कि नानाजी भी आ गये।

रमेश—(घड़ी देखकर) यह तो हो ही नहीं सकता। अभी सिर्फ सवा सात बजे हैं। अभी तो उनके हिसाबसे स्टेशन पहुँचनेमें ही पौन घण्टेकी देर है।

कुसुम—हाँ, यह तो ठीक कहते हो। खैर; तुम जाओ और जल्दीसे मुँह-हाथ धो लो। देखो, जो दो नये धुले हुए तौलिये मैंने निकालकर रखे हैं, वे नानाजी और दुलारीके लिए हैं। तुम उनसे हाथ-मुँह मत पोंछना। तुम्हारे लिए पुराना अँगोछा अलग रखा है। उसीसे काम चला लेना।

रमेश—(हँसकर) जो हुकुम सरकारका। (प्रस्थान)

कुसुम—(फिर दरवाजेके खटखटानेकी आवाज सुनकर) मैं समझती हूँ कि रसोइया आया है। (दरवाजा खोलनेके लिए जाना चाहती है।)

कमला—नहीं नहीं, दरवाजा खोलनेके लिए तुम मत जाओ। न जाने कौन हो। रामूँको भेज दो।

कुसुम—हाँ, तुम ठीक कहती हो। (दूसरी ओर मुँह करके पुकारती है।) रामूँ !

[रामूँका प्रवेश]

कुसुम—देखो, बाहर कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

[रामूँ दरवाजेकी तरफ जाता है।]

कुसुम—(कुछ घबराकर) रसोइया भी आ गया। अब आगे क्या करना चाहिए ?

कमला—तुम घबराओ नहीं। मैं सब व्यवस्था कर दूँगी। तब तक तुम उससे बातें करो। मैं जाकर रसोईघरकी व्यवस्था देख आऊँ।

[कमलाका प्रस्थान। दूसरी ओरसे रामूँका प्रवेश।]

कुसुम—बाहर कौन है ?

रामूँ—जी, एक आदमी है। कहता है कि मैं रसोई बनानेके लिए आया हूँ। लेकिन वह रसोइया तो नहीं माॡम होता। निरा उचक्का माॡम होता है।

कुसुम—उचक्का माॡम होता है ? खैर, जाओ और उसे यहाँ बुला लाओ।

[रामूँ बाहर जाता है। कुसुम कुरसीपर अमीरी ठाठसे तनकर बैठ जाती है। रामूँके साथ भोला मिसिर लँगड़ाता हुआ आता है।]

भोला—सरकारकी जय होय !

कुसुम—तुम्हें हिन्दू होटलके मैनेजरने भेजा है ?

भोला—हाँ सरकार। मनीजर साहब ई चिट्ठी भी दिहिन हैं।

[भोला कमरके फेटमेंसे कागजका एक टुकड़ा निकालकर कुसुमको देता है। इतनेमें अन्दरसे बच्चेके रोनेकी आवाज़ सुनाई देती है।]

कुसुम—रामूँ, बच्चा रो रहा है। जरा जाकर देखो तो क्या बात है। [रामूँका प्रस्थान।]

भोला—क सरकार, ई घरमें बाल-गोपाल भी हैं ?

कुसुम—हाँ।

भोला—(मारे खुशीके उछलकर) वाह सरकार, वाह ! ई तो बहुत बढ़िया बात है। सरकार, बाल-गोपालसे हमार जिउ बहुत खुस रहत है। पहिले हम जहाँ काम करत रहे, उहाँ एक्को बाल-गोपाल नाहीं रहे। एहीसे उहाँ हमार मन तनिकौ नाहीं लगत रहा। गंगा कसम ! हमें ऊ घर जैसे भूतखाना लगत रहा, भूतखाना ! भला जहौ कौनो घर है जहाँ बाल-गोपाल न होयँ ! हाँ सरकार, तो कै ठे बाल-गोपाल हैं ?

कुसुम—मेरा एक बच्चा है।

भोला—(और भी प्रसन्न होकर) ठीक, ठीक ! ऐसे छोटेसे घरमें एक बाल-गोपाल बहुत है। दुई खण्डका बड़ा मकान होय तो दुइ बाल-गोपाल, तीन खण्डका मकान होय तो तीन बाल-गोपाल; और चार खंडके पक्की हवेली होय तो चार बाल-गोपाल। पर ऐसे छोटे बँगलामें एकै बाल-गोपाल ठीक रहत हैं। पहिले एक जगह हम काम करत रहे; तो उहाँ छः बाल-गोपाल रहे। और सबके हमहीके खेलावैके पड़त रहा। बड़ी आफत रही। नाकन दम होय जात रहा। तबौ हम सबके खेलावत रहे। मलकिन कहैं मिसिर, हमारे नाँव भोला मिसिर है न, भोला मिसिर। तौन मालकिन हमसे कहैं—मिसिर, लड़िका लोगनका जेतना काम तुम करता है, ओतना एक महतारी भी नहीं कर सकता। हम कहैं—सरकार, लड़िका लोगका खेलावै क अक्किल चाही अक्किल। और सरकार, बातौ ठीक है।



कुसुम—ठीक है। बैठ जाओ। यह बतलाओ कि तुम्हें रसोई बनाना तो अच्छी तरहसे आता है न ?

भोला—ए सरकार, भला कौनो कहैक बात है। पानी भरतकै और चूल्हा फूँकतकै तो हमारा बाल पक गवा बाल। (फिर उठकर खड़ा हो जाता है और जमीनसे प्रायः डेढ़ हाथकी ऊँचाई तक हाथ लटकाकर बतलाता है।) सरकार, जबसे एतना बड़ा रहेन, एतना बड़ा, तब्बैसे आप समुझ रखीं कि............हाँ ाँ ाँ। सरकार।

कुसुम—तुम्हारे पास कोई सरटिफिकेट भी है ?

भोला—का कहेन सरकार ?

कुसुम—जिन लोगोंके यहाँ तुमने काम किया है, उन लोगोंकी लिखी कोई चिट्ठी भी तुम्हारे पास है जिससे माळूम हो कि तुम अच्छा काम करते रहे ?

भोला—साटिफिटिक, साटिफिटिक ! अरे सरकार उ तो गठरिन क गठरिन रहा। एतना बड़ा बड़ा पुलिन्दा ! (दोनों हाथोंसे आकार बतलाता है।) सब बाप-दादाके बखतका रहा, बाप-दादाके बखतका। पर मुदा सरकार, अब हमका कहन। हमारा भाग फूट गवा भाग। हमारे घरमें आगि लग गई आगि ! तौन सब जरि गवा।

(रोनीसी सूरत बना लेता है।)

कुसुम—अच्छा, तो जिन लोगोंके यहाँ तुमने काम किया है, उन लोगोंके नाम बतला सकते हो ?

भोला—का फुरमाएन सरकार ?

कुसुम—जिन लोगोंके यहाँ तुमने पहले काम किया हो, उनके नाम बतला सकते हो जिसमें जरूरत पड़नेपर मैं उनसे तुम्हारे बारेमें कुछ पूछ सकूँ ?

भोला—सरकार, अब के ऊ लोगनके नाम लेय। ऊ सब मरि गयेन।

कुसुम—क्या सबके सब मर गये?

भोला—ले सरकार, अब कुछ पूछौ मत। (जोरसे सिरपर हाथ मारकर) हमारे ई फुटहा भाग। हम जहाँ जात हैं और दस पाँच दिन काम करत हैं कि हमारे मलिकै मर जात हैं। एक दुइ नाहीं, बीसन पचीसन जगाह ऐसै भवा है। ले अब हम का बताईं। आप मालिक ठहरीं। आपसे झूठौ नाहीं बोल सकित। बाकी बात ऐसनै है।

कुसुम—तब भला तुम्हें क्यों कोई जल्दी अपने यहाँ रखने लगा!

भोला—दोहाई सरकारकी। ऐसन जिन कहीं। हम बहुत जगाह काम किया है। अब तो हम इहै चाहित हैं कि कौनो आप ऐसन बढ़िया मालिक मिलै और बाकी जिन्दगी आपै किहाँ बीत जाय। अब फिर कौनो ससुराका मुँह न देखै क परे। सरकार, हम बड़ा गरीब हयन। दोहाई मालिककी। अब हम आपके चरन छोड़के कहीं जाय नाहीं सकित।

कुसुम—लेकिन हमारे यहाँ तो सिर्फ दो ही दिनके लिए रसोईदारकी जरूरत है।

भोला—ए तो सरकार दुइए दिनमाँ हम मलकिनके ऐसन खुस करन कि मलकिन आपै हमै न छोड़िहैं।

कुसुम—तुम दो दिनकी तनख्वाह क्या लोगे?

भोला—अब सरकार, दुइ दिनक तनखाह कौन! हम सरकार क सब काम करब। जिउ खुस होय जाई। जौन इनाम-इकराम बख्स

मिल जाई, तौने बहुत है। बाकी सरकार, एक धोती और एक कुरता जरूर मिलै क चाही। नया न होय तो पुराने सही। आसिरबाद करब आसिरबाद। बाल-गोपाल नीके रहैं। हाँ मालकिन। हम त सरकार एहिमें खुस हैं कि रहीसनके घरमें रहें और खूब खिजमत करें खिजमत। लेवै देवैके फिकिर सरकार छोड़ दें। हमें जौनै मिल जाई, तौनै बहुत है।

कुसुम—अच्छा, तुम जरा यहाँ बैठे रहो। मैं अभी अन्दरसे आती हूँ। [प्रस्थान]

[कुसुमके जाते ही भोला उठकर खड़ा हो जाता है और इधर उधर देखकर दरवाजेके पास जा पहुँचता है और उसमें लगे हुए तालेको उलट-पुलटकर देखता है। फिर खिड़की खोलकर बाहरकी तरफ झाँकता है। फिर खिड़की बन्द करके टेबुलके पास आता है और एक एक करके चाँदीकी थाली, फूलदान और घड़ी उठाकर देखता है। थाली और घड़ी इस तरह हाथमें लेता है कि मानों तौलकर अन्दाजसे उसका वजन जानना चाहता है। फिर टेबुलका दराज खोलकर उसमेंके कागज-पत्र निकालकर देखता और फिर उन्हें वहीं रखकर दराज बन्द करता है। पर निगाह उसकी बराबर उसी दरवाजेकी तरफ रहती है जिस दरवाजेसे कुसुम अन्दर गई थी। उसे खटका लगा रहता है कि कहीं कोई आ न जाय और देख न ले। इसी बीचमें दूसरी तरफसे रामूँ वहाँ आ पहुँचता है और थोड़ी देर तक चुपचाप उसकी सब कार्रवाई देखता रहता है।]

रामूँ—वाह, यह कौन कायदा है! चलो, चुपचाप अपनी जगहपर बैठो।

भोला—हें हें भइया, कुछ नाहीं, तनिक देखत रहली है। अरे हम इहाँक रसोईदार हई न रसोईदार।

रामूँ—अरे अभी तुम्हारी नौकरी कहाँ लगी है? लगो अभीसे सारे

घरकी तलाशी लेने। अभी मालकिन देख लें तो कान पकड़कर घरसे निकाल दें। आने दो मालकिनको, अभी कहता हूँ न सब हाल।

भोला—अरे नाहीं भइया, ऐसन नाहीं करे के। दोहाई मालिककै।

[भोला दोनों हाथोंसे रामूँका हाथ पकड़ लेता है और उससे अनुनय-विनय करता है।]

रामूँ—अरे हाथ छोड़। मेरा हाथ छोड़।

भोला—दोहाई रामूँ भइयाकी। मलकिनसे जिन कहे। नाहीं त हमारे नोकरी चल जाई, नोकरी। गला काट ले, पर कोई क रोजी न लेय।

रामूँ—तुम्हें काम करना हो तो सीधी तरहसे यहाँ बैठो। और इधर उधर चीजोंको हाथ लगाओगे तो मैं मालकिनसे कह दूँगा।

[कुसुम और कमलाका प्रवेश।]

कुसुम—रामूँ, क्या बात है?

रामूँ—जी यह टेबुलका दराज खोलकर उसमेंसे कागज निकालता था।

भोला—झूठ, झूठ, सरकार, बेलकुल झूठ। भला हम ऐसन काम कर सकित हैं! एनकर मतलब ई है कि हम यहाँ काम न करी। ई अकैले इहाँ राज करें।

कमला—बहन, मेरी समझमें तो तुम इस आदमीको बिदा कर दो तो बहुत अच्छा करो। लँगड़ा आदमी ऐबी होता है और धोखा देता है।

भोला—दोहाई लच्छिमी कै। हम गरीब मर जाब। हम गवा रहे जरमनीकी लड़ाईमाँ। उहाँ गोली लागि रही। तौन ई पैर बेकाम होय गवा है। दोहाई मालकिनकै। हमारी नोकरी न जाए पावै।

कुसुम—क्या तुम लड़ाईपर गये थे ?

भोला—हाँ सरकार, हम झूठ नाहीं कहित। लड़ाईयौके साटी-फिटिक रहा। तौनों ससुरा जरि गवा। नाहीं तो देखाय देतेन।

रामूँ—जी, यह अव्वल दरजेका झूठा मालूम होता है। यह लड़ाई-बड़ाईपर कहीं नहीं गया है। मेरी समझमें तो यह जेलकी हवा खा चुका है। वहीं इसके पैरोंमें बेड़ी-डंडा पड़ा होगा। इसीसे लँगड़ाता है। यह क्या लड़ाईमें जायगा!

भोला—अरे जा जा, अपना काम देख। मलकिने दयावान हैं। तोहरी बातनमें नाहीं आवैवाली हैं। (कुसुमसे) दोहाई सरकारकी, हमारी नोकरी न छूटै पावै।

कुसुम—नहीं नहीं, अब मुझे रसोइयेकी जरूरत नहीं है। तुम जाओ, दूसरी जगह काम ढूँढ़ो।

भोला—अरे नाहीं सरकार, ऐसन नाहीं कहे के। गरीब बाम्हन मर जाई।

कमला—(बिगड़कर) चलो, निकलो यहाँसे।

भोला—हेंह! ई बड़ी आई हैं निकालैवाली। तोहार का मकदूर है? हमें मलकिन बोलाइन हैं। मलकिन नोकर रखिन हैं। ई आई हैं उहाँसे (मुँह चिढ़ाकर)—"निकस जाओ, निकस जाओ।" आपन मुँह नाहीं देखतिन।

कुसुम—(बिगड़कर) अबे निकलता है यहाँसे या धक्के खायगा।

रामूँ—बचा याद रखना, थाना बगलमें है। अभी हाथमें लोटा पकड़ाऊँगा और पुलिसके हवाले कर दूँगा। सारी शेखी निकल जायगी। हट दूर हो यहाँसे।

भोला—अरे हम अपनै चल जात हई। ऐसन कबाड़िन किहाँ हम लोग नाहीं काम करित। हम बड़े बड़े राजा बाबू किहाँ काम किहा है। हमरे का नोकरीकी कमी है? जिउ-जाँगर सलामत रही तो तोहरे ऐसे हजार जने हमारे खुसामद करि हैं। (कुसुमसे) त क मालकिन, सचौं चल जाई? न देबू नोकरी?

कुसुम—(बिगड़कर) अबे जाता है कि मार खायगा?

भोला—अच्छा जाता हई। बाकी फिर काम लगै तो हमहींके बोलैहः।

[भोला लँगड़ाता हुआ जाता है। उसके पीछे पीछे रामूँ भी दरवाजे तक जाता है।]

भोला—(दरवाजेके पास पहुँचकर रामूँसे) अरे जाः। लाज नाहीं लगत! हमरे गरीब बम्हने क लगल-लगावल नोकरी छोड़वाय देहलः। तोहार सत्यानास होय जाई सत्यानास!

रामूँ—(मारनेके लिए हाथ उठाता हुआ) अबे जा सत्यानाशके बच्चे! क्यों तेरी शामत आई है!

[भोला चला जाता है। रामूँ फिर लौटकर कमरेमें आ जाता है।]

कुसुम—बहन, मैं तो मनमें बह[illegible] थी। देखो, कम्बख्त पहले कैसी मीठी मीठी बातें कर[illegible] था और [illegible] कैसी तोतेकी तरह निगाह बदल ली!

रामूँ—बड़ा भारी बदमाश [illegible] ऐसे आदमी [illegible]का पाकर लोगोंका गला काटनेसे भी नहीं चूकते।

कुसुम—यदि इस समय मदन यहाँ होते तो इसकी बातें सुनकर हँसते हँसते लोट जाते। (रामूँसे) क्यों जी, क्या यह सचमुच जेल काट आया है?

रामू—जी हाँ, इसमें क्या सन्देह है ! आपने देखा नहीं, उसकी आँखें कैसी खूनियों और डाकुओंकीसी थीं !

कुसुम—खैर, अब उसका जिक्र छोड़ो । (कमलासे) क्यों बहन, मैं देखती हूँ कि बिना रसोइयेके तो अब बड़ी बेइज्जती होना चाहती है।

कमला—बेइज्जती किस बातकी ? कोई बहाना गढ़कर काम चलता किया जायगा । मैं कह दूँगी कि रसोइयेके पैरमें बहुत बड़ा फोड़ा हुआ है जो चीरा गया है और वह अस्पतालमें पड़ा है ।

कुसुम—आखिर बहानोंकी भी कोई हद है ! कहाँ तक बहाने किये जायँगे ? मोटरके बारेमें कहा जायगा कि वह मरम्मतके लिए गई है । हारमोनियमके लिए कहना पड़ेगा कि एक पड़ोसी मँगनी माँग ले गया है । अब ऊपरसे रसोइयेके लिए एक और बहाना करना पड़ेगा कि अस्पतालमें पड़ा है। भला वे अपने मनमें क्या कहेंगे ?

कमला—हाँ, एक अड़चन तो जरूर खड़ी हो गई है । यदि मदन इस समय यहाँ होते तो वे अवश्य कोई उपाय करते । यदि और कुछ न होता तो वे स्वयं ही थोड़ी देरके लिए रसोइये बन जाते । पर वे तो यहाँ है ही नहीं ।

कुसुम—(कुछ देर तक सोचनेके उपरान्त अचानक) रमेश !

कमला—(घबराकर) क्यों क्या बात है ? खैरियत तो है ?

कुसुम—मैं सोचती हूँ कि यदि मदन रसोइयेका काम कर सकते थे तो फिर रमेश ही क्यों न थोड़ी देरके लिए रसोइये बन जायँ ?

कमला—क्या वे रसोइया बनना मंजूर कर लेंगे ? और फिर उनसे इस कामके लिए कहेगा कौन ?

कुसुम—वे मुझसे इतना अधिक प्रेम करते हैं कि जो कुछ मैं उनसे कहूँगी, वह सब वे मान लेंगे । मेरी बात वे कभी टाल ही

नहीं सकते। और कहनेके लिए क्या हुआ है! मैं स्वयं उनसे कहूँगी। भले ही पहले कुछ आना-कानी करें, पर अन्तमें उन्हें.... ।

कमला—मदनका नाम तो मैंने इसलिए लिया था कि वे इस तरहके कामोंमें बहुत होशियार हैं।

कुसुम—रमेशके किये तो कोई काम नहीं हो सकता। पर आज यह काम उन्हें करना पड़ेगा। इसमें रखा ही क्या है! सिर्फ नाना-जीके सामने खाना परोसना पड़ेगा। यों घरके मालिकके रूपमें भी उनका यह कर्तव्य था। वही काम जरा रसोइयेके रूपमें कर देना होगा। फिर सुबह तो नानाजी चले ही जायँगे।

कमला—(हँसकर) बात तो ठीक है। मजेमें काम निकल जायगा। जरा उनसे कह देखो।

[कमीज पहने हुए रमेशका प्रवेश।]

रमेश—भला कोई चीज तो ठिकानेसे अपनी जगह रखी हुई मिलती! मेरा कोट, टोपी, छड़ी वगैरह सब चीजें कहाँ हैं?

कुसुम—प्यारे, अब तुम्हें कोट और टोपीकी जरूरत ही नहीं पड़ेगी। तुम्हें यहाँसे जाना नहीं होगा। यहीं रहना होगा।

रमेश—(प्रसन्न होकर) क्यों क्या तुम्हारे नानाजीका तार आ गया? अब वे नहीं आवेंगे?

कुसुम—आवेंगे क्यों नहीं। आते ही होंगे। पर मैंने एक और उपाय सोचा है। जरा शान्त होकर बैठो तो मैं तुम्हें सब समझा दूँ।

[कुसुम बड़े प्रेमसे रमेशका हाथ पकड़कर उसे एक कुरसीपर ले जाकर बैठाती है। रमेश बैठना नहीं चाहता, पर वह दोनों हाथोंसे उसे दबाकर बैठाती है और स्वयं भी एक कुरसी खींचकर उसके बहुत पास जा बैठती है।]

कुसुम—हाँ प्यारे देखो, बात यह है कि..............

रमेश—बस बस, तुम अपना प्यार और यह दुलार रहने दो। मैं तुम्हें खूब पहचानता हूँ। जब तुम्हें कोई ऐसा वैसा काम मुझसे कराना होता है, तब तुम इसी तरहका प्यार दिखलाती हो। मुझे तुम्हारे ऐसे प्यारसे डर लगता है।

कुसुम—तो क्या तुम यह समझते हो कि मैं हृदयसे तुमसे प्यार नहीं करती?

रमेश—प्यार तो करती हो मगर..................।

कुसुम—बस, फिर मगर वगर मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहती। मैंने और कमला बहनने मिलकर एक बहुत अच्छी सलाह की है। बड़ी अच्छी बात है। उससे तुम्हारी भी इज्जत रह जायगी और मेरी भी। अब बतलाओ कि तुम वह बात सुनना चाहते हो या नहीं?

रमेश—भूमिका तो बहुत हो चुकी। अब असल बात बतलाओ।

कुसुम—पर पहले यह बतलाओ कि तुम मेरी बात मानोगे, या नहीं?

रमेश—आखिर बात भी तो सुनूँ।

कुसुम—नहीं, पहले कसम खाओ कि मेरी बात मानोगे।

रमेश—बिना कसमसे ही तुम्हारी बातें माननी पड़ती हैं। फिर कसम किस लिए खाऊँ? जो कुछ कहना हो, जल्दीसे कह डालो।

कुसुम—आज जब नानाजी आवेंगे, तब तुम्हें थोड़ी देरके लिए रसोइया बनना पड़ेगा।

रमेश—इसका मतलब?

कुसुम—मतलब कुछ भी नहीं। तुम्हें कुछ करना-धरना नहीं ३। खाली लोगोंको भोजन परोसना होगा जिसमें नानाजी समझ

जायँ कि इनके यहाँ एक रसोइया भी है। बस, यही समझ लो कि इज्जतका मामला है!

रमेश—बस बस रहने दो। देख ली तुम्हारी इज्जत भी और मुहब्बत भी। (खड़े होकर) कहाँ तो मैं तुम्हारे नानाजीका मुँह भी नहीं देखना चाहता और कहाँ तुम मुझे उनके सामने रसोइया बनाकर खड़ा करना चाहती हो। यह सब सिनेमावाले तिरिया-चरित्तर रहने दो। मैं जाता हूँ। मुझसे इस तरहकी खिदमतगारी न हो सकेगी। मैं तुम्हारी बातोंमें नहीं आनेका।

कुसुम—यही तो तुममें ऐब है कि तुम पूरी बात भी नहीं सुनते और नाराज हो जाते हो। जरा शान्त होकर सुन तो लो। भले आदमीके घरमें एक रसोइया रहना जरूरी है। नहीं तो नानाजी कहेंगे................।

रमेश—नानाजी क्या कहेंगे खाक! बड़े बड़े अमीरोंके घरमें भी रसाइये नहीं होते। फिर उसने किनसे कहा कि हमारे यहाँ रसोइया है? क्या तुमने उन्हें लिखा था?

कुसुम—प्यारे, यही तो बात है जो मैं तुम्हें समझाना चाहती हूँ। मैंने उन्हें तो नहीं लिखा था, पर हाँ विमलाको अवश्य लिखा था। और उसने नानाजीसे जरूर ही कहा होगा। अब आज अगर वे यहाँ रसोइया नहीं देखेंगे तो अपने मनमें क्या कहेंगे? मुझे झूठी और गप्पी कहेंगे। भला मेरी यह बेइज्जती तुमसे देखी जायगी? और फिर सिर्फ रातभरकी तो बात है। सबेरे तो वे चले ही जायँगे।



रमेश—तुम बहुत दिक करती हो। मुझे रसोइया बनाकर अपने नानाजीके सामने खड़ा करना चाहती हो।

कुसुम—बस, तभी तो मैं कहती हूँ कि तुम कुछ समझते नहीं। मैं तुम्हें कब उनके सामने खड़ा करनी चाहती हूँ! मैं तो उनके सामने रसोइया खड़ा करना चाहती हूँ। तुम्हें तो वे पहचानते नहीं। फिर इसमें हर्ज ही क्या है? प्यारे, बस यह जरासी बात मान लो। बस, सब ठीक हो जायगा।

रमेश—आखिर मुझे करना क्या होगा?

कुसुम—बस खाली रसोइयेकी तरह आकर भोजन परोसना होगा।

रमेश—तुम जानती हो कि मुझे उनकी शक्लसे नफरत है। और इसी लिए मैं रातभर घरसे बाहर रहनेको तैयार हो गया था। और तुम चाहती हो कि मैं उनके सामने नौकर बनकर खड़ा होऊँ, उनके सामने सिर झुकाऊँ, उनका हुक्म बजा लाऊँ और चलते वक्त वह अगर मुझे कुछ इनाम दें तो वह भी हाथ पसारकर ले लूँ।

कुसुम—पर तुम्हें थोड़े ही ये सब काम करने पड़ेंगे।

रमेश—तब और किसे करने पड़ेंगे?

कुसुम—रसोइयेको।

रमेश—आखिर रसोइया तो मुझको ही बनना पड़ेगा।

कुसुम—देखो प्यारे, मैंने तुम्हारे लिए कैसे कैसे कष्ट उठाये हैं। तुम्हारे लिए घर-बार, सब कुछ छोड़ा। क्या तुम मेरी यह जरासी बात नहीं मानोगे? मैंने कमला बहनसे भी सलाह कर ली है। वे भी कहती हैं कि यही तरकीब सबसे अच्छी है। देखो, प्यारे अब इन्कार मत करो। नहीं तो.................................।

[रोनासा मुँह बना लेती है।

रमेश—देखो, अगर तुम मुझे रसोइया बनाओगी तो सारा बना-बनाया खेल बिगड़ जायगा। मैं तो यह भी नहीं जानता कि रसोइया किस चिड़ियाका नाम है। फिर रसोइयेके काम मुझसे कैसे हो सकेंगे?

कुसुम—अरे तो नानाजीने ही कब रसोइयेकी शक्ल देखी है। तुम जिस हालतमें रहोगे, तुम्हें खाना परोसते देखकर नानाजी यही समझेंगे कि इनके यहाँ रसोइया भी है। देखो, मैंने बहन कमलासे इतनी सब चीजें मँगनी माँगकर यह कमरा दिनभर मेहनत करके सजाया है। और अब तुम जरासी बातके लिए मेरी और अपनी दोनों-की इज्जतमें बट्टा लगाना चाहते हो। प्यारे, हाथ जोड़ती हूँ, आज मेरा कहना मान लो। फिर कभी कोई बात न मानना।

रमेश—(विवश होकर) क्या बताऊँ। तुम बहुत तंग करती हो।

कुसुम—(प्रसन्न होकर) बस बस! अब तुम भी किसी मौकेपर मुझे तंग कर लेना। पर आज मेरी बात मान लो।

रमेश—इस समय तो मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ। पर याद रखना, अन्तमें तुम्हारा सारा भंडा फूट जायगा।

कमला—(आगे बढ़कर हँसती हुई) आप मेहरबानी करके भंडा न फोड़िएगा। बाकी सब बातें हम लोग सँभाल लेंगी।

रमेश—जी हाँ। मैं सब समझता हूँ। आज आप दोनोंने मिल-कर मुझे खूब बनाया है। आने दो मदन भाईको। किसी दिन तुम लोगोंसे इसकी कसर निकाली जायगी। खैर; अब यह बतलाओ कि मुझे करना क्या होगा।

कुसुम—तुम्हें कपड़े दूसरे पहनने होंगे। (कमलासे) बहन, तुम अपने यहाँके किसी नौकरके कपड़े मँगवा देतीं तो बहुत—

रमेश—(बिगड़कर) देखो जी, यह सब मुझसे नहीं होगा। मैं नौकरोंके कपड़े नहीं पहनूँगा। चाहे तुम्हारे नानाजी खुश हों और चाहे नाराज।

कमला—नहीं नहीं। कपड़े बदलनेकी जरूरत नहीं। यही कपड़े ठीक हैं। आजकलके रसोइये क्या धोती और कमीज नहीं पहनते? मामूली कमीज है। और इसमें है क्या?

कुसुम—खैर यही सही। पर कमसे कम एक साफा तो बाँध लें।

कमला—हाँ यह अलबत्ता एक बात है।

रमेश—फिर निकाला न तुमने झगड़ा!

कुसुम—इसमें झगड़ा क्या है? साफा तुम्हें सजता भी खूब है। सिर्फ बाँधना पड़ेगा जरा दूसरी तरहसे। (रामूँको बुलाकर) अलमारीमें सबसे ऊपरवाले खानेमें एक साफा रखा है। जरा मैला सा है। वह निकाल लाओ तो। (रामूँ साफा लाने जाता है।)

कुसुम—(रमेशसे) हाँ देखो प्यारे, अगर बाहर कोई दरवाजा खटखटावे तो तुम्हें कष्ट करके खोलने जाना होगा।

रमेश—यह मुझसे न होगा। आखिर रामूँ किस लिए है?

कमला—हाँ, यह ठीक कहते हैं। रसोइयेका काम दरवाजा खोलना नहीं है। यह तो नौकरों और खिदमतगारोंका काम है।

कुसुम—खैर, ऐसा ही सही।

[रामूँ साफा देकर चला जाता है। रमेश बहुत खिन्न चित्तसे साफा बाँधता है।

कुसुम—वाह! जरा शीशेमें देखो तो सही। कैसे अच्छे मालूम होते हो। प्यारे, मैं तो कहूँगी कि तुम सदा साफा ही बाँधा करो।

—और इसी तरह नौकर बने रहा करो। क्यों यही न!

कुसुम—तुम मेरे प्राण हो, सर्वस्व हो, मेरे और सारे घरके मालिक हो। भला तुम्हें मैं ऐसी बात कह सकती हूँ? मैं तो यही कहती थी कि साफा तुम्हें बहुत भला लगता है। आगे तुम्हारी मरजी।

कमला—तो फिर अब इन्हें जल्दी जल्दी समझा दो कि क्या क्या करना होगा; क्योंकि अब नानाजीके आनेका समय भी तो हो गया है।

कुसुम—हाँ देखो, जब नानाजी आवें, तब तुम इस तरह चलकर दरवाज़ेके पास पहुँचना। (चलकर दिखलाती है।) फिर दरवाज़ा खोलकर इस तरह एक तरफ हट जाना। (हटकर दिखलाती है।)

कमला—अजी ये खुद होशियार हैं। इन्हें ज्यादा बतलानेकी जरूरत नहीं।

कुसुम—(रामूँको बुलाकर) देखो जी, ये हमारे यहाँके नये रसोई-दार हैं। ये जो जो काम बतलावें, वह सब तुम्हें करना होगा। और सिर्फ चार थालियाँ लगाना। (कुसुम और कमलाका प्रस्थान।)

रमेश—क्यों जी, तुम्हारा नाम रामूँ है न? तुम्हारी नई मालकिन कैसी हैं और इस घरका क्या हाल-चाल है?

रामूँ—अरे भाई, कुछ पूछो मत। मुझे तो इस घरका कुछ पता ठिकाना ही नहीं लगता। मालकिनका स्वभाव तो अच्छा है, लेकिन वह बहुत जल्दबाज़ मालूम होती हैं। न जाने किस बुरी साइतमें मैंने इस घरमें पैर रखा है कि जबसे आया हूँ, एक मिनट भी साँस लेनेकी फुरसत नहीं मिली। दिनभर सफाई, सजावट, सब सामान यहाँसे वहाँ और वहाँसे यहाँ उठाकर रखना। क्या बतलाऊँ! और फिर सबसे बढ़कर एक देवसे कुश्ती लड़ना।

रमेश—देव कैसा ?

रामूँ—अभी तुम नये आये हो। तुम क्या जानोगे! दो-चार दिन रहोगे तो आप ही पता लग जायगा। मालकिनका एक लड़का है। है तो अभी छोटा ही, पर कुश्ती लड़नेमें पूरा देव है! दिनभर मुझे नोचता-खसोटता रहता है। वह पाँच पाँच मिनटपर ऐसे ज़ोरसे चिल्लाता है कि माल्रम होता हैं कि बिजलीघरका भोंपा बजता हैं।

रमेश—बड़ा खेलवाड़ी लड़का जान पड़ता है।

रामूँ—खेलवाड़ी है? जरा उसे गोदमें लो तो पता चले। तुम्हारे सारे बन्धन ढीले न कर दे तो कहना। अब तो तुम इस घरमें आ ही गये हो। आप ही एक दो दिनमें पता चल जायगा। खैर; देखो अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारा कुछ काम कर दिया करूँ तो फिर तुम्हें भी मेरा कुछ काम करना पड़ेगा।

रमेश—हाँ हाँ, क्यों नहीं।

रामूँ—हाँ पहले यह बतलाओ कि तुम्हें किसीने इस कुरसीके साथ बाँध तो नहीं दिया है न ?

रमेश—इसका क्या मतलब ?

रामूँ—मतलब यही है कि जबसे तुम आये हो तबसे मैं देखता हूँ, तुम नवाबकी तरह कुरसीपर बैठे रहते हो। नौकरी कुरसीपर बैठकर नहीं होती। उठो जरा काम करो।

रमेश—जो कहो, वह करूँ।

रामूँ—पहले तो ये कुरसियाँ ठीक तरहसे टेबुलके चारों तरफ लगाकर रखो। और वह सामनेवाले दालानमें दो कुरसियाँ और रखी हैं। वह भी उठा लाओ। [रमेश लापरवाहीसे कुरसियाँ ठीक करता है।]

रामूँ—अगर तुम इसी तरह सब काम करोगे तो हो चुका! कुरसी तक ठीक तरहसे रखनेका शऊर नहीं है। चलो, उधर कोनेमें बैठो। इन लच्छनोंसे तुम्हें यहाँ नौकरी कैसे मिल गई? और आगे जहाँ रहते होगे, वहाँ क्या काम करते होगे!

रमेश—अरे भाई, मैं तुम्हें क्या बतलाऊँ। इस तरहकी नौकरीकी बिपत तो मुझपर आज यह पहले-पहल पड़ी है। तुम्हें अपना दोस्त समझकर कह रहा हूँ। किसी तरह निबाह देना; और किसीसे यह बात कहना मत।

रामूँ—मुझे किसीसे कहनेकी जरूरत न पड़ेगी। तुम्हारे लच्छनोंसे सब लोग आप ही समझ जायँगे कि तुम्हें काम-धन्दा करना नहीं आता। मैं तो समझता हूँ कि तुम्हारी नौकरी बहुत जल्दी छूट जायगी।

रमेश—भाई, मुझसे जो कुछ भूल हो जाय, वह मुझे बतला देना।

रामूँ—तुम्हारी भूल तो पीछे बतलाऊँगा। पहले तुम्हें एक और बात बतलाता हूँ। इस कमरेमें जो यह सारा सजावटका सामान देख रहे हो, वह सब मँगनीका है, मँगनीका। सारी सजावट पड़ोसिनका सामान मँगनी माँगकर की गई है। और सब सामान बगलवाले मकानसे इसी खिड़कीके रास्ते आया है।

रमेश—ऐसी बात!

रामूँ—और नहीं तो क्या तुम समझते हो कि यह सब सामान इन्हीं बीबी साहबाका है?

रमेश—भाई, मैं नया आदमी ठहरा। मुझे यह सब क्या मालूम!

रामूँ—मैं तो समझता हूँ कि खाली वह बचा बीबी साहबाका है।

बाकी सब कुछ मँगनीका है। यहाँ सब काम मँगनीकी चीजोंसे चलाया जाता है।

रमेश—यह तो बड़ी अच्छी तरकीब है।

रामूँ—पर खैरियत यही है कि मालकिनका स्वभाव कुछ ऐसा बुरा नहीं है। पर मालिकको तो अभी तक देखा ही नहीं। अगर आते तो देखता कि वह कैसे हैं। पर मेरी समझमें हैं वह निरे बुद्धू।

रमेश—यह तुमने कैसे जाना?

रामूँ—अरे, इतनी मामूलीसी बात तुम नहीं समझ सकते? जब दो पहरको मैं यहाँ आया था, तब यहाँ भूत लोटते थे। पाँच छः घण्टेमें बीबीने सारा अमीरी ठाठ जमा लिया और मियाँका अभी कहीं पता ही नहीं है। अब तुम्हीं बतलाओ कि इनके मियाँ बुद्धू नहीं हैं तो और क्या हैं।

रमेश—हाँ भाई, बात तो तुम ठीक कहते हो।

रामूँ—अच्छा, तुम ठहरो। मैं जरा अन्दरसे एक चीज ले आऊँ।

[रामूँका प्रस्थान]

[थोड़ी देर बाद दरवाज़ा खटखटानेकी आवाज़ आती है। कुसुम और कमला दौड़ी हुई आती हैं।]

कुसुम—रमेश, देखो माल्म होता है नानाजी आ गये।

रमेश—(घड़ी देखकर) अभी कहाँसे आवेंगे? अभी तो सिर्फ सवा सात बजे हैं।

कुसुम—आज इस घड़ीको क्या हो गया है! जब देखो, तब वही सवा सात। (जल्दीसे घड़ी उठाकर कानके पास ले जाती है।) अरे, यह तो बन्द है! अब क्या करूँ?

रमेश—चाबी दो चाबी।

कुसुम—देखो नानाजी आ पहुँचे और अभी यहाँकी तैयारी ही पूरी नहीं हुई। रामूँ, रामूँ! (रमेशकी ओर देखकर) तुम जल्दीसे उठकर खड़े हो जाओ। (रमेश उठकर खड़ा होता है।) यहाँ मत खड़े रहो। वहाँ दरवाजेके पास जाकर खड़े हो जाओ। पर दरवाजा मत खोलना। और देखो, ऐसी जगह खड़े होना कि दरवाजा खुलते ही नानाजीकी निगाह तुमपर पड़े। उन्हें देखते ही जरा अदबसे झुक जाना।

[रामूँका प्रवेश।]

कुसुम—रामूँ, जल्दी जाकर दरवाजा खोल। (रमेशसे) देखो, बहुत समझदारीसे काम लेना। कोई बेवकूफी मत कर बैठना।

रमेश—तो क्या तुम मुझे इतना बेवकूफ समझती हो?

कुसुम—नहीं नहीं, तुम हो तो बहुत समझदार। पर फिर भी जरा सचेत कर देती हूँ।

कमला—पर कुसुम, तुम्हारे दोनों हाथोंमें आटा लगा हुआ है। जरा हाथ तो धो डालो। नहीं तो वे समझेंगे कि तुम खुद ही आटा गूँध रही थीं।

[कुसुम जल्दीमें अपनी साड़ीके पल्लेसे ही हाथ पोंछती है। इतनेमें दुलारीके साथ मोहनलाल आ पहुँचते हैं। कुसुम आगे बढ़कर पहले नानाजीके चरण छूती है और तब दुलारीको गले लगाती है।]

कुसुम—नानाजी, आप अच्छे हैं न? रास्तेमें तो आपको बड़ा कष्ट हुआ होगा।

मोहनलाल—हाँ बेटी, मैं अच्छा हूँ। रास्तेमें कोई कष्ट नहीं हुआ। लखनऊसे गाड़ी सीधी यहाँ आती है। तुमने दुलारीको पहचान लिया?

कुसुम—वाह, भला मैं अपनी बहनको न पहचानूँगी! दस बरस बाद देखा है तो क्या हुआ। सयानी हो गई है, पर चेहरा-मोहरा तो नहीं बदला।

मोहनलाल—(कमलाकी ओर संकेत करके) और ये कौन हैं?

कुसुम—ये मेरी पड़ोसिन बहन कमला हैं। बहुत भली आदमी हैं। मुझपर बहुत दया रखती हैं। (दुलारीसे) बहन, तुम्हें तो रास्तेमें कुछ कष्ट नहीं हुआ?

[दुलारी कोई उत्तर नहीं देती। केवल चकित होकर चारों ओर देखती है।]

मोहनलाल—रेलमें दिनभर धूप लगी थी और धूल भी बहुत उड़ती थी, इससे इसके सिरमें दर्द हो रहा है।

कुसुम—(दुलारीसे) तो फिर चलो, अन्दर चलकर थोड़ी देर लेट रहो। मैं अभी सिरमें लवेंडर लगा देती हूँ।

दुलारी—(गँवारपनसे) मैं लवेंडर पवेंडर नहीं लगाती। मैं कोई मेम थोड़े ही हूँ।

कुसुम—अच्छा न सही। पर चलो लेट तो रहो। (रामूँसे) रामूँ, इन्हें अन्दर ले जाकर इनके सोनेका कमरा दिखला दे।

रामूँ—जो हुकुम सरकार!

[दुलारीको साथ लेकर रामूँ अन्दर जाता है।]

कुसुम—(रमेशको लक्ष्य करके) अजी मिस्सरजी।

[रमेश दूसरी ओर देखता है।]

कुसुम—(रमेशके पास पहुँचकर) अजी मिस्सरजी, सुनते हो? जरा यह सब सामान तो अन्दर पहुँचा दो।

रमेश—(चकित होकर) कौन—मैं—यह सामान........ (कुछ सँभलकर) कहाँ पहुँचाना होगा?

कुसुम—उसी कमरेमें जिसमें मेहमान लोग ठहरते हैं।

रमेश—किस कमरेमें ?

कुसुम—अजी वही मेहमानोंके ठहरनेका कमरा जो पच्छिमकी तरफ है। (नानाजीसे) नानाजी, ये हमारे मिस्सरजी कुछ ऊँचा सुनते हैं, इसीसे कोई बात जल्दी इनकी समझमें नहीं आती।

[रमेश सामान उठाकर अन्दर ले जाता है।]

कुसुम—मैं तो इन कमबख्त नौकरोंके मारे तंग रहती हूँ। दिन भर इन्हींके साथ बकबक करनी पड़ती है। इससे अच्छा तो आदमी अपने हाथ काम कर ले, इतना भूँकना तो न पड़े। यहाँ ठिकानेके नौकर भी नहीं मिलते। नानाजी, अबकी आप लखनऊ जायँ तो एक बढ़िया काश्मीरी रसोइया और एक दो अच्छे खिदमतगार भेज दें तो बड़ी दया करें।

मोहनलाल—अरे बेटी, तुझे क्या मालूम कि वहाँ नौकर कितने मँहगे हैं। और फिर वे पूरे चोर होते हैं चोर। इसीसे तो हमारे यहाँ घरका सारा काम तुम्हारी मौसी और ये दुलारी मिलकर कर लेती हैं। बेटी, मैं तो कहूँगा कि तुम भी सब काम आप किया करो। नौकर-चाकरोंके भरोसे न रहा करो। ये चुराते भी हैं और काम भी नहीं करते।

कुसुम—क्या कहूँ नानाजी, नौकरोंसे काम लेनेकी ऐसी बुरी आदत पड़ गई है कि अब मुझसे तो एक तिनका भी नहीं हिलाया जाता। चुराने-खाने दीजिए। बेचारे कहाँ तक चुरायँगे और कहाँ तक खायँगे। पर हाँ, काम तो ठिकानेसे करें। मुझे तो न भूँकना पड़े। हाँ तो नानाजी, अब आप अपने कमरेमें चलिए न।

मोहनलाल—बेटी ठहरो, जरा मुझे साँस तो लेने दो। (एक कुरसीपर बैठकर) कुसुम, तुम्हारा मकान तो खूब अच्छा है।

कुसुम—(पासकी दूसरी कुरसीपर बैठकर) सब आपके चरणोंकी दया है।

मोहनलाल—इसमें सजावट तो खूब है। ये परदे तो बहुत बढ़िया हैं।

कुसुम—यह सब कमला बहनकी कृपा है। (कमलासे) वाह बहन, तुम खड़ी क्यों हो? बैठती क्यों नहीं? (हाथ पकड़कर कुरसी पर बैठाती है।) ये सब परदे इन्होंने पसन्द करके खरिदवाये हैं।

मोहनलाल—इनकी पसन्द तो बहुत बढ़िया है। और ये चाँदीकी थालियाँ और कटोरियाँ भी बहुत खूबसूरत बनी हैं।

कुसुम—फिर आप जानते हैं कि बनारस इस तरहकी चीजोंके लिए कितना मशहूर है।

मोहनलाल—हाँ है तो सही। ये सब तुमने खरीदी थीं या बनवाई थीं?

कुसुम—जी, ये सब मेरी सासके समयकी हैं। कुछ नई भी बनवाई हैं, पर वह आज निकाली नहीं।

मोहनलाल—कुसुम, तुम्हारा मकान तो सचमुच इन्द्रकी पुरी है।

कुसुम—सब आपके कदमोंकी बदौलत है। अभी तो परसाल एक नया बँगला खरीदा था, पर वह शहरसे बहुत दूर पड़ता है, इस लिए किरायेपर दे दिया। मेरा तो मन नहीं था कि किरायेपर दूँ। पर उन्हें यही मकान बहुत पसन्द है। वे इसे छोड़ना ही नहीं चाहते।

मोहनलाल—हाँ, यह तो बतलाओ कि रमेशजी हैं कहाँ?

कुसुम—वे आज ही बाहर चले गये हैं। अगर आपका तार और आध घण्टे पहले आया होता तो मैं उन्हें रोक ही लेती। पर क्या करूँ। और फिर उनका काम भी ऐसा है कि उन्हें ज्यादातर बाहर ही घूमना पड़ता है। घरमें तो वह दस-पाँच रोज़ भी नहीं ठहरने पाते। आज मंसूरी हैं, तो कल कलकत्ते हैं। कहके जाते हैं कि दिल्ली जाता हूँ और तीसरे दिन तार भेजते हैं बम्बईसे।

मोहनलाल—हाँ भाई, काम-धन्धेवाले जो ठहरे। और यह तो बतलाओ, तुम्हारे लड़केका क्या हाल है?

कुसुम—आपकी दयासे बहुत अच्छा है। इस समय तो सो रहा होगा।

मोहनलाल—लेकिन बेटी, एक बात है। रमेशके यहाँ न रहनेसे तो बड़ी गड़बड़ी होगी। मैं सिर्फ उन्हींसे मिलनेके लिए यहाँ आया था। मुझे उन्हींसे बहुत जरूरी काम है।

कुसुम—पर आपने तो तारमें लिखा था कि आप कल सवेरे ही कलकत्ते चले जायँगे। अगर आप एक-दो रोज़ रुकते तो मैं तार देकर उन्हें बुलवा लेती।

मोहनलाल—अगर बुला सको तो बहुत ही अच्छी बात है। और नहीं तो फिर एक-दो रोज़ उनके आने तक मुझे यहाँ रुकना ही पड़ेगा। क्योंकि मैं उन्हींसे मिलनेके लिए लखनऊसे चलकर इतनी दूर आया हूँ।

कुसुम—अगर कुछ हर्ज़ न हो तो आप मुझको ही बतला दीजिए कि उनसे कौन-सा जरूरी काम है।

मोहनलाल—बात यह है बेटी, कि तुम जानती हो कि मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। ज़िन्दगीका कोई ठिकाना नहीं। इस लिए मैं चाहता हूँ कि अपनी सारी जायदाद तुम्हारे लड़केके नाम लिखकर निश्चिन्त हो जाऊँ। जायदाद कौन बहुत बड़ी है। यही आठ दस हजार रुपये हैं और सौ सवा सौ बीघे जमीन है। पर हाँ, उसकी लिखा-पढ़ी हो जाय तो मेरी फिक्र छूट जाय। और यह काम बिना रमेशके यहाँ आए हो नहीं सकता। अगर तुम उन्हें किसी तरह बुलवा सको तो जल्दी बुलवाओ। मैं चाहता हूँ कि कल ही सब लिखा-पढ़ी करके कलकत्ते चला जाऊँ। नहीं तो उनके आनेतक दो तीन रोज़ मुझे यहीं ठहरना पड़ेगा।

(कुसुम मन ही मन बहुत प्रसन्न और उत्सुक होती है। कमला और रमेश बहुत ध्यानसे सब बातें सुनते रहते हैं।)

कुसुम—क्या बतलाऊँ, नानाजी मेरी समझमें नहीं आता कि क्या उपाय करूँ। आज अगर वे यहाँ होते........या आज अगर उनका पता मुझे मालूम होता....। अब मैं कुछ कह नहीं सकती। आप जरा बच्चेको तो देख लें।

मोहनलाल—(कुरसीसे उठकर) हाँ हाँ जरूर। पर देखो, तुम रमेशको जल्दी बुलानेका उपाय करो।

कुसुम—जी हाँ, मैं उसका उपाय करती हूँ।

[मोहनलाल उठकर अन्दर जाते हैं। रमेश और कमलाकी ओर चिन्तित भावसे देखती हुई कुसुम भी उनके पीछे पीछे जाती है।]

कमला—रमेशजी, यह तो बड़ी बेढब बात हुई।

कुसुम—मैं तो पहले ही समझता था कि कोई न कोई बेढब बात

होगी। यह जो कुछ करती है, उसीमें एक न एक झगड़ा निकल आता है।

कमला—आखिर अब करना क्या चाहिए?

रमेश—यही तो मेरी समझमें भी नहीं आता। अब कुसुम ही कोई उपाय सोचेगी। कुसुममें और कोई दोष नहीं है। यदि दोष है तो एक यही कि वह सदा बड़ी बड़ी तरकीबें सोचा करती है और बड़े बड़े मन्सूबे बाँधा करती है।

कमला—मन्सूबे बाँधा करती है?

रमेश—हाँ, बिलकुल शेख चिल्लियोंकेसे मन्सूबे बाँधा करती है। कभी कभी तो मैं सोचता हूँ कि यदि यह सिनेमाके लिए कहानियाँ लिखनेका काम करती तो बड़ा नाम पैदा करती। बातें गढ़ना और डींगें हाँकना तो इसे खूब ही आता है। कभी कभी तो इसके इन्हीं मन्सूबोंके कारण मुझे अपमानित और लज्जित भी होना पड़ता है। एक बारकी बात तुम्हें बतलाऊँ। जब पहले-पहल हम लोगोंका ब्याह हुआ था, तब हम लोग यहाँ आकर चौकके पास एक दूसरे मकानमें ठहरे थे। जब खर्चकी तंगी होने लगी तब मैंने दो तीन कमरे एक दूसरे भले आदमीको किरायेपर दे दिये। उसकी बीबीसे कुसुमकी खूब पटने लगी। बातों बातोंमें यह उससे एक दिन कह बैठी कि हमें तुम मामूली आदमी मत समझना। हम लोग ताल्लुके-दार हैं। लखनऊमें हमारे कई इलाके हैं। हमारी सारी सम्पत्ति हमारे जेठके लड़के दबा बैठे हैं और वे हम लोगोंकी जानके दुश्मन हो रहे हैं। इसी लिए हम लोगोंको भागकर यहाँ आना पड़ा। अमुक अमुक राजा हमारे रिश्तेदार हैं। उन लोगोंकी सहायतासे हम लोगोंने

दावा किया था जिसका फैसला हाइकोर्टसे जल्दी ही होनेको है। इलाके मिल जायँगे तो हमें लाखों रुपये सालकी आमदनी होने लगेगी। वगैरह वगैरह।

कमला—(हँसकर) यह तो बहुत बढ़िया बात थी। इसमें हर्ज़ ही क्या हुआ ?

रमेश—हर्ज़ जो कुछ हुआ, वह तो मैं ही जानता हूँ। वह आदमी मेरे दफ्तरके मेनेजरका दोस्त था और अक्सर मेरे दफ्तरमें आया-जाया करता था। उसने ये सब बातें दफ्तरवालोंसे कह दीं। बस तबसे दफ्तरवाले मुझे ताल्लुकेदार साहब और राजा साहब आदि कह कहकर चिढ़ाया करते हैं। और सचमुच अब भी शहरमें बहुत से लोग ऐसे हैं जो यह समझते हैं कि मैं एक बहुत बड़े ताल्लुकेदारका लड़का हूँ।

कमला—पर कुसुमने यह बात तुम्हारा मान बढ़ानेके लिए ही तो कही होगी।

रमेश—हाँ, यह ठीक है कि इन बातोंमें उसका कोई बुरा उद्देश्य नहीं था। और मैं उसकी कोई शिकायत नहीं कर रहा हूँ। उसकी और सब बातें अच्छी हैं; पर यही एक ऐसा दोष है जिससे मुझे कभी कभी बहुत परेशान होना पड़ता है।

[दौड़ी हुई कुसुम आती है।]

कुसुम—(रमेशसे) प्यारे, ये सब बातें तो तुमने सुन ही लीं। पर अब यह बताओ कि हम लोगोंको करना क्या चाहिए।

रमेश—(कुरसीसे उठकर) घबराओ मत। मेरी समझमें तो यही आता है कि तुम उनसे सब बातें साफ़ साफ़ कह दो और उन्हें बतला दो कि यह सारा मज़ाक था।

कुसुम—अरे तब तो सारा बना-बनाया खेल ही बिगड़ जायगा। हँसी-मज़ाक और छल-कपटसे तो नानाजी बहुत ही चिढ़ते हैं। अगर उन्हें असल बात बतलाई जायगी तो वे आग-बबूला हो जायँगे और इसी समय बोरिया-बँधना बाँधकर चलते फिरते नजर आवेंगे। वे तो किसीको हँसी-मजाक करते हुए भी नहीं देख सकते। हम लोगोंको कोई दूसरी तरकीब सोचनी पड़ेगी। और जैसे हो, मुन्नूके नाम सारी ज़ायदाद लिखवानी पड़ेगी। और सच पूछो तो असल वारिस भी वही है।

रमेश—तो फिर तुम्हीं बताओ कि किया क्या जाय? तुम्हारे नानाजी तो कहते हैं कि जब तक वे मुझे देख नहीं लेंगे, तब तक वे यहाँसे टलेंगे नहीं।

कुसुम—नहीं, वे अपना यह विचार बदल भी सकते हैं। उन्होंने लखनऊसे सीधा कलकत्तेका टिकट खरीदा है। वे चार-पाँच रोज़से ज्यादा यहाँ ठहर ही नहीं सकते।

रमेश—पर इससे क्या होता है। चाहे वे जनम-भर यहीं रहें और चाहे यहाँसे जाकर महीने दो महीने बाद लौट आवें, मैं अब तो सदा उनके सामने रसोइया ही रहूँगा। अब तो उन्होंने मुझे अच्छी तरह देख ही लिया है।

कुसुम—पर एक तरकीब मेरी समझमें आती है।

रमेश—वह क्या?

कुसुम—तुम बाज़ारसे एक नकली दाढ़ी खरीद लो और वही लगाकर यहाँ आ जाओ और कहो कि मुगलसरायमें गाड़ी छूट गई थी, इसीसे मैं जा नहीं सका और लौट आया।

कोई

रमेश—(बिगड़कर) बस, तुम्हें तो इसी तरहकी खुराफ़ात सूझा करती है।

कुसुम—आखिर इसमें बुराई ही क्या है। तुम आध घण्टेके अन्दर नकली दाढ़ी लगाकर यहाँ पहुँच सकते हो और कह सकते हो कि गाड़ी छूट गई। बस, फिर सवेरे ही सब लिखा पढ़ी हो जायगी।

रमेश—तुम ज़रा अपनी अक्ल ठिकाने करो और देखो कि तुम्हारी इन्हीं चालाकियोंके कारण कैसे कैसे झगड़े खड़े हो सकते हैं।

कुसुम—तो क्या तुम यह चाहते हो कि मुन्नूको यह सम्पत्ति न मिले?

रमेश—यह कौन कहता है कि मुन्नूको सम्पत्ति न मिले। इससे उसके पढ़-लिखकर लायक बननेका ठिकाना हो जायगा और वह सयाना होकर कोई अच्छा रोज़गार कर सकेगा। या कमसे कम उसकी दाल-रोटीका तो ठिकाना रहेगा। पर मेरे चेहरेमें एक ऐसी विशेषता है कि चाहे मैं लाख भेस बदलूँ, पर फिर भी लोग मुझे पहचान ही लेंगे। अगर मैं दाढ़ी लगा लूँगा तो तुम्हारे नानाजी यही कहेंगे कि इस रसोइयेकी दाढ़ी पानीमें रोपे हुए धानकी तरह बढ़ती है।

कुसुम—(कमलासे) फिर तो बहन, तुम्हीं कोई उपाय सोचो।

कमला—मैं तो कहती हूँ कि पहले सब लोग खा-पी लो। तब तक कोई न कोई उपाय समझमें आ ही जायगा। इस समय घबराहटमें कोई उपाय नहीं सूझेगा।

बत कुसुम—हाँ, यह तो तुम ठीक कहती हो। तुम्हें भी बहुत भूख

लगी होगी। बस नानाजी आवें तो भोजन परोसा जाय। दुलारी तो आज खायगी नहीं। उसके सिरमें बहुत तेज़ दर्द है। मैं रामूँसे जरा कह दूँ। (पुकारती है।) रामूँ !

[रामूँका प्रवेश]

रामूँ—जी हाँ।

कुसुम—देखो, तीन ही आदमियोंका भोजनका इन्तज़ाम करना।

रामूँ—बहुत अच्छा। (रामूँका प्रस्थान)

रमेश—(चकित होकर) तीन ही आदमी क्यों ?

कुसुम—और नहीं तो क्या ! नानाजी, कमला बहन और मैं।

रमेश—और मैं ?

कुसुम—तुम हम लोगोंके साथ थोड़े ही खाने बैठोगे। तुम तो बादमें रसोईघरमें रामूँके साथ खाओगे न !

रमेश—ठीक है। मैं समझ गया। पर मुझसे तो अब रहा नहीं जाता। मेरा तो मारे भूखके दम निकला जा रहा है।

[रमेशका प्रस्थान]

कुसुम—(कमलासे बहन), देखो मेरी समझमें एक बात आती है। पर यह बात मैं रमेशके सामने तुमसे नहीं कह सकती थी। जायदाद तो बच्चेके नाम लिखी जायगी। रमेशका तो उसमें कोई खास काम है नहीं। क्योंकि उसमें रमेशके दस्तखत वगैरहकी तो जरूरत पड़ेगी ही नहीं। नानाजीने जो पत्र रमेशको लिखा था, उसका उन्हें बहुत दुःख है और असलमें वे रमेशसे माफी माँगना चाहते हैं। और जायदाद तो वे बच्चेको देंगे ही। कागज-पत्र चाहे, रमेश अपने हाथमें लें और चाहे और कोई ले। कोई

कमला—लेकिन इससे क्या ? आखिर रमेशको तो उनके सामने आना ही पड़ेगा।

कुसुम—तुम अभी तक मेरा मतलब नहीं समझीं। मैं कहती हूँ कि अगर कोई और आदमी भी आकर उनके सामने खड़ा हो जाय और कहे कि मैं रमेश हूँ, तो काम चल जायगा। वे उसीको रमेश समझकर उससे माफी माँगेंगे और सब कागज-पत्र उसके सुपुर्द कर देंगे। बस, किसी ऐसे आदमीकी जरूरत है जो थोड़ी देरके लिए रमेश बनकर यहाँ आ जाय।

कमला—पर ऐसा आदमी तुम्हें मिलेगा कहाँ ? जब तुम्हें रसोई-दारकी जरूरत थी, तब वह तो तुमने होटलवालेसे कहकर मँगनी मँगवा लिया था। पर मियाँ तो कहीं रखे नहीं हैं जो मँगनीके मिल जायँगे !

कुसुम—हाँ बहन, यही तो ज़रा मुश्किल है।

कमला—मदन भी यहाँ नहीं हैं। नहीं तो मैं ही तुम्हें कुछ देरके लिए अपने मियाँ मँगनी दे देती। (खूब ज़ोरसे हँसती है।)

कुसुम—अगर वह यहाँ होते तो फिर बात ही क्या थी। सब काम ही बन जाता। कोई और आदमी सोचो।

कमला—(कुछ देरतक सोचकर) हाँ, खूब याद आया। अशोकसे भी काम चल सकता है।

कुसुम—कौन अशोक ? वही तुम्हारे चचेरे भाई जो कभी कभी तुम्हारे यहाँ आया करते हैं ? और जिनका उस दिन तुम जिक्र

छूट. करती थीं ?

बत कु(कमला—हाँ हाँ, वही !

कुसुम—उनसे काम चल सकेगा ? (कुछ आतुरतापूर्वक) वे इस समय होंगे कहाँ ? और यहाँ आवेंगे कैसे ?

कमला—अभी तो वे घरपर ही होंगे। अभी परसों लखनऊसे आए हैं और एक दो दिनमें कलकत्ते जानेवाले हैं।

कुसुम—बस बस, तब उन्हींको टेलिफोन करो।

कमला—(हाथमें टेलिफोन उठाकर) कौन ? अशोक भइया ? वाह, तुम्हींको तो मैं ढूँढ़ती थी। भइया, एक बहुत जरूरी काम आ पड़ा है। मेरी एक सहेली हैं। वे चाहती हैं कि कोई आदमी ऐसा मिले जो दो तीन घण्टेके लिए उनके पतिका स्वाँग बनकर एक आदमीसे कुछ बातें कर ले। (कुछ ठहरकर) पति बनकर। (फिर कुछ ठहरकर जरा ज़ोरसे) पति बनकर, पति बनकर! प-प-प-प-ति, पति, पति, पति। (ठहरकर) हाँ हाँ पति! (कुछ ठहरकर) नहीं, यह बात नहीं है। उसके पति तो मौजूद हैं। पर वे इस समय यहाँ हैं नहीं। वह चाहती हैं कि कोई आदमी यहाँ आ जाय और उनके पतिकी जगह होकर उनके नानाजीसे कुछ बातें कर ले। बस, इतना ही काम है। इसीके लिए तुम्हें तकलीफ देना चाहती हूँ। (कुछ ठहरकर कुसुमसे) वह कहते हैं कि मुझे बड़ी खुशीसे मंजूर है।

कुसुम—लाओ, जरा टेलिफोन मुझे दो। मैं भी उनसे बातें कर लूँ। (हाथमें टेलिफोन लेकर) हाँ, अशोकजी, अभी बहन कमला मेरे ही बारेमें आपसे कह रही थीं। (कुछ ठहरकर) मेरा मकान ? मेरा मकान बहन कमलाके मकानसे ठीक सटा हुआ है। नं० १२७ है। आपके पास सूट केस तो होगा ही। (कुछ ठहरकर) नहीं, उसमें कुछ सामान रखनेकी जरूरत नहीं है। खाली भी रहे तो कोई



हर्ज़ नहीं है। आप वही हाथमें लिए हुए चले आवें। दरवाजेपर आकर आवाज मत दीजिएगा। धड़धड़ाते हुए सीधे अन्दर चले आइएगा। मैं और बहन कमला दोनों यहाँ हैं ही। दरवाज़ेमें घुसते ही दाहिने हाथ बैठक है। उसीमें चले आइएगा। (कुछ ठहरकर) हाँ, दाहिने हाथ। मेरे नानाजी आये हुए हैं। उन्हींसे आपको कुछ बातें करनी होंगीं। यदि आपके आनेपर वे कमरेमें ही हों तो सिर्फ़ यह कह दीजिएगा कि मुगलसरायमें रेल छूट गई। रातभर वहीं रुकना पड़ता, इसी लिए मैं लौटकर घर चला आया। अब सवेरे जाऊँगा। क्या कहा? क्या कहते हैं?

कमला—क्या कहते हैं?

कुसुम—यहाँ तो कुछ जवाब ही नहीं मिलता। शायद चले तो नहीं गये। (फिरसे टेलिफोनका बटन अच्छी तरह दबाकर) हाँ, जरा जल्दी कीजिए। बस १५–२० मिनटके अन्दर यहाँ पहुँच जाइए। देखिए, ज्यादा देर न हो।

कमला—क्या कहा? आते हैं न?

कुसुम—(इस प्रकार मानों सिरसे कोई भारी बोझ टला हो) हाँ, बहन, आ रहे हैं। अब कहीं जाकर मेरी जानमें जान आई है। बस, इनसे सब काम हो जायगा।

कमला—वह आदमी बहुत होशियार हैं। बातचीत भी बहुत सहूलियतसे करते हैं। मैं उन्हें सब बातें समझा दूँगी। अब तुम फिक्र न करो। वे हैं भी बहुत सच्चरित्र।

कुसुम—नहीं, मैं यह सोचती थी कि कहीं वे नाटे तो नहीं हैं, क्योंकि मैं विमलाको लिख चुकी हूँ कि मेरे पति बहुत लम्बे-चौड़े

और हृष्ट-पुष्ट हैं। अब यदि ये नाटे निकले तो मैं क्या बहाना करूँगी और कैसे कहूँगी कि ये हाथ-भर छोटे हो गये हैं ? क्यों बहन, वे रमेशसे तो कदमें कुछ ही छोटे होंगे ?

कमला—लेकिन अब रमेशजीसे भी तो ये बातें कहनी होंगीं।

कुसुम—जरूर कहनी पड़ेंगीं। बिना उनसे कहे काम कैसे चलेगा ! मैं उन्हें अच्छी तरह समझाकर ठीक कर लूँगी। (कुछ ठहरकर) पर मैं सोचती हूँ कि अभी उनसे कुछ भी न कहूँ। उन्हें तो एक एक बात समझानेके लिए घण्टों बकवाद करनी पड़ती है और इतना समय नहीं है कि उनके साथ माथा-पच्ची की जाय। (पुकारती है) रामूँ !

[रामूँका प्रवेश]

रामूँ—जी हाँ।

कुसुम—देखो चार आदमियोंके लिए भोजनका इन्तजाम करना होगा।

रामूँ—बहुत अच्छा। (प्रस्थान)

[मोहनलालका प्रवेश।]

कुसुम—नानाजी, आपको बहुत भूख लगी होगी। मैं अभी भोजन परोसवाती हूँ। क्या कहूँ, बेचारी दुलारीकी तो तबीयत ही खराब हो गई। कहिए तो किसी डाक्टरको बुलवा दूँ।

मोहनलाल—हाँ, अगर पासमें कोई अच्छा डाक्टर मिल जाता तो बहुत अच्छा होता। और डाक्टरसे तो उसका ब्याह ही होनेको है।

कुसुम—क्या उसका ब्याह डाक्टरसे होना है ?

मोहनलाल—हाँ, जिससे दुलारीका ब्याह ठीक हुआ है, वह डाक्टर ही है। उसका नाम है डा० अशोककुमार। वह जब

लखनऊमें मेडिकल कालेजमें पढ़ता था, तभी दोनोंकी जान-पहचान हुई थी। बिलकुल तुम्हीं लोगोंकासा हाल था। मैंने भी समझ लिया कि आजकल नई रोशनीकी पढ़ी-लिखी लड़कियाँ अपने लिए आप ही वर पसन्द कर लेती हैं। अब मैं अपने हाथसे इनका ब्याह क्यों न कर दूँ। नहीं तो ये भी तुम्हारी तरह आप ही............। इससे अच्छा यही है कि मैं ही ब्याह कर दूँ। सुना है, लड़का भी अच्छा और लायक है। आजकल कलकत्तेमें रहता है। वहीं डाक्टरी करना चाहता है। मैं कलकत्ते पहुँचकर वहीं अपने हाथसे ब्याह करूँगा। इसी लिए मैं चाहता था कि कल सवेरे कलकत्ते चला जाऊँ। बस, ब्याह हो जानेके बाद मैं निश्चिन्त होकर या तो काशीवास करूँगा और या वृन्दावन जाकर रहूँगा।

कुसुम—अच्छा नानाजी, अब आप चलकर भोजन तो कर लें।

[अशोकका प्रवेश।]

[अशोक आते ही हाथका बेग जमीनपर फेंक देता है और जल्दीसे कुसुमके पास पहुँचकर उसका हाथ पकड़ लेता है।]

अशोक—प्यारी, क्या बतलाऊँ मुगलसरायमें गाड़ी छूट गई। मैंने सोचा कि व्यर्थ रात-भर यहाँ रहकर क्या करूँगा। इसीसे घर चला आया। अब सवेरे जाऊँगा।

(कमला धीरेसे अशोककी पीठपर चिकोटी काटती है। अशोक सहमकर कुसुमसे दूर हट जाता है।)

कमला—देखिए, लखनऊसे बहन कुसुमके नानाजी आये हुए हैं। वे बहुत देरसे आपको तलाश कर रहे थे। आप आ ही गये।

कुसुम—मैं तो तुम्हारे लिए बहुत चिन्तित हो रही थी। सोचती

थी कि तुम्हें कैसे और कहाँ खबर दूँ। नानाजी कहते थे कि जहाँ तक हो सके, उन्हें जल्दी बुलाओ।

[अशोक मोहनलालके पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम करता है और उनसे कुशल-समाचार पूछता है।]

मोहनलाल—आओ बेटा, बहुत अच्छा हुआ जो तुम आ गये। मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत थी।

[रामू और रमेश हाथमें थालियाँ आदि लेकर आते हैं और टेबुलपर रखते हैं।]

मोहनलाल—हैं! अरे यहाँ टेबुलपर बैठकर खाना पड़ेगा?

कुसुम—नानाजी, इसमें हर्ज ही क्या है। पूरी तरकारी ही तो है। कुछ दाल-चावल तो हैं नहीं जो आप चौकेके बाहर न खा सकें।

मोहनलाल—बेटी, तुम लोगोंके लिए मुझे अपना धर्म भी गँवाना पड़ा। खैर; ऐसा ही सही। इस बुढ़ापेमें टेबुल-कुरसीपर भी बैठकर खाना पड़ा।

कुसुम—(अशोकसे) आओ, पहले भोजन कर लो, तब और बातें होंगी।

[कुसुम अशोकका हाथ पकड़कर उसे बैठाती है। यह देखकर रमेशका चेहरा लाल हो जाता है। मारे क्रोधके उसके हाथसे थाली और कटोरियाँ जमीनपर गिर पड़ती हैं। साथ ही परदा गिरता है।]

दूसरा दृश्य



[स्थान:—वही कमरा। समय—एक घण्टे बाद। मोहनलाल, अशोक, कुसुम और कमला टेबुलके चारों ओर चार कुरसियोंपर बैठे हैं। एक ओर रामू और रमेश हाथ बाँधे खड़े हैं। रमेशके चेहरेसे बहुत दुःख, खेद और क्रोध प्रकट हो रहा है।]

अशोक—मिस्सरजी,

रमेश—जी हाँ।

अशोक—जरा ग्रामोफोनमें कोई अच्छासा रेकार्ड तो लगाना।

रमेश—बहुत अच्छा।

कुसुम—देखो, वह जोर जोरसे चिल्लाने और हँसनेवाला रेकार्ड मत लगाना। शोर-गुलसे नानाजीकी तबीयत बहुत घबराती है। (कुछ ठहरकर) हाँ, वह रामायणकी चौपाइयोंवाला रेकार्ड लगाओ तो जरा।

रमेश—जो हुकुम।

[रमेश कई रेकार्ड उलट-पुलटकर देखता है। अन्तमें एक रेकार्ड हाथमें लेकर पढ़ता है।]

रमेश—वह रामायणवाला रेकार्ड तो नहीं मिल रहा है। यह मीराबाईके खेलमेंका रेकार्ड बहुत अच्छा है। "मेरे तो गिरधर गोपाल.... ।"

कुसुम—हाँ, यह भी अच्छा है। चलो यही लगा दो।

[रमेश ग्रामोफोनपर रेकार्ड लगाता है। रामूँ हाथमें पानकी तश्तरी लेकर आता है। सब लोग उसमेंसे पान लेकर खाते हैं। ग्रामोफोनमें गाना शुरू होता है। "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।"]

कमला—क्यों नानाजी, आपको गानेका जरूर शौक होगा।

मोहनलाल—बेटी, मैं गाना-बजाना क्या समझूँ। मैंने तो उमरभर वही जमींदारी और खेती-बारीका काम देखा। हाँ, लखनऊमें रहना होता था, इस लिए कभी कभी दोस्तोंके यहाँ जलसे वगैरहमें जाना पड़ता था। वहाँ अलबत्ता गाना सुननेमें आता था। मैं समझता बूझता तो कुछ था नहीं। पर जब लोग तारीफ करते थे, तब मैं भी तारीफ कर देता था। इससे लोग समझते थे कि मैं भी गाना-बजाना समझता हूँ।

[ग्रामोफोनका रेकार्ड टूटा और पुराना होनेके कारण भाँ भाँ भाँ भाँ करने लगता है।]

अशोक—अरे मिस्टरजी, यह क्या वाहियात रेकार्ड लगाया है। जल्दी बन्द करो इसे।

मोहनलाल—क्यों बन्द क्यों, कराते हो? यह तो बड़ा अच्छा भजन है।

अशोक—जी हाँ, भजन तो बहुत अच्छा है, पर रेकार्ड टूटा हुआ है, इसीसे भाँ भाँ करता है।

मोहनलाल—ओह! अब समझा कि भाँ भाँ करता है। पहले मैंने समझा था कि यह भी गानेकी कोई तान है। खैर; अब फोनोग्राफ बन्द करो। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। अब दूसरी बातें होने दो।

अशोक—मिस्सरजी, ग्रामोफोन बन्द करो।

(अशोक ग्रामोफोन बन्द करता है।)

मोहनलाल—(अशोकसे) रमेशजी, तुम्हारा यह मकान तो बहुत बढ़िया है।

अशोक—अजी बढ़िया क्या है, यों ही मामूली-सा है। बढ़िया बंगला तो अभी मैंने परसाल खरीदा था। पर वह शहरसे दूर पड़ता है, इसलिए बेच दिया। अब इरादा है कि बगलवाला मकान खरीदकर अगले साल दोनोंको मिलाकर एक नया मकान बनवाऊँ।

मोहनलाल—पर कुसुम तो कहती थी कि बँगला किराये पर दिया है।

अशोक—(बात बनाकर) अभी कल ही उसका बयाना लिया है जो कुसुमको मालूम नहीं है। इसीसे वह समझती है कि किराएपर है और मैं कहता हूँ कि बेच दिया।

मोहनलाल—तब ठीक है। और क्यों जी, मुन्नूका क्या हाल है?

अशोक—मुन्नू कौन?

मोहनलाल—अरे वही बच्चा।

अशोक—बच्चा! किसका बच्चा?

कुसुम—(बात सँभालनेके लिए) मालूम होता है कि तुम्हारा दिमाग इस वक्त ठिकाने नहीं है। नानाजी हम लोगोंके बच्चे मुन्नूको पूछते हैं। (समझानेके लिए अशोकको सुनाकर नानाजीसे) नानाजी, मुन्नू तो आपकी दयासे यहाँ खूब मजेमें रहता है। उसपर यहाँकी सरदी गरमीका कोई असर ही नहीं होता। जबसे पैदा हुआ है, तबसे आज तक कभी बीमार ही नहीं पड़ा। अब तो वह परमात्माकी कृपासे सवा बरसका हो गया है। उसका नाम हम लोगोंने विनयकुमार रखा है।

पर प्यारसे सब लोग उसे मुन्नू मुन्नू कहते हैं। गोरा गोरा रंग है, शरीरसे भी अच्छा है...........।

मोहनलाल—बेटी, यह सब मुझे बतलानेकी जरूरत नहीं। मैं तो अभी उसे देख ही चुका हूँ।

कुसुम—आपने जिस समय उसे देखा था, उस समय तो वह सोया हुआ था न। जागतेमें तो आपने उसे देखा ही नहीं। मैं आपको यह बतला रही थी कि वह जागनेपर देखनेमें कैसा लगता है।

मोहनलाल—तो क्या बच्चे सोनेके समय कुछ और रहते हैं और जागनेपर कुछ और हो जाते हैं?

कुसुम—जी हाँ, यही बात है! बच्चोंके सोने और जागनेमें जमीन-आस्मानका फ़र्क पड़ जाता है। सबेरे जब वह सोकर उठेगा, तब उसे देखकर आप शायद पहचान भी न सकेंगे। है तो वह सिर्फ सवा बरसका, पर अभीसे बहुत समझदार है।

कमला—और बातें तो ऐसी प्यारी प्यारी करता है कि मैं आपसे क्या कहूँ।

मोहनलाल—अरे सवा बरसका बच्चा और बातें भी करता है?

कुसुम—जी हाँ, बातें ऐसी करता है कि आप सुनकर दंग हो जायँ।

कमला—(कुसुमसे) हाँ बहन, जरा उसकी वह सबेरेवाली बात तो नानाजीको सुना दो।

मोहनलाल—भाई, मैंने तो आज तक कभी नहीं सुना कि सवा बरसका बच्चा और बोलता हो।

कुसुम—नानाजी, मेरा यह मतलब नहीं है कि वह शब्दोंका



ठीक ठीक उच्चारण करता है। पर वह केवल गूँ गूँ करके ही अपने मनके सब भाव ऐसे अच्छे ढँगसे प्रकट करता है कि सब लोग देखते रह जाते हैं। और कभी कभी तो आदमी उसकी बातें सुनकर हँसते हँसते लोट-पोट हो जाता है। (अशोककी ओर संकेत करके) आज जिस समय ये यहाँसे जाने लगे थे, उस समय मैंने इन्हें नमस्कार किया था। उस समय उसने भी जिस ढँगसे दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाया था, उस समय अगर आप उसे देखते तो कहते कि अभीसे इसे इतनी अक्ल कहाँसे आ गई ?

अशोक—(सब बातें समझकर) नानाजी, मैं आपसे क्या अर्ज करूँ, एक बार जब वह खाली 'हूँ' कर देता है, तब उसकी उस 'हूँ' में भी इतना मतलब भरा होता है जितना हमारी-आपकी दस पाँच बातोंमें नहीं होता।

मोहनलाल—कुसुम, मैंने तो सुना था कि रमेश बहुत लम्बे-चौड़े और हृष्ट-पुष्ट आदमी हैं। शायद तुमने अपने किसी पत्रमें विमलाको लिखा भी था........।

कुसुम—अभी ये बैठे हैं, इसीसे ठिंगने मालूम होते हैं। पर जब उठकर खड़े होते हैं, तब बहुत लम्बे मालूम होते हैं।

कमला—(मोहनलालसे) क्यों नानाजी, आपने तो आखिर बच्चेको देखा है। अब आप बतलावें कि वह अपने बापपर पड़ा है या माँपर।

कुसुम—(जल्दीसे) मैं तो कहती हूँ कि वह हूबहू नानाजीपर पड़ा है, नानाजीपर। चेहरा-मोहरा सब ठीक नानाजीकी तरह है। वही नाक, वही नक्शा। क्यों नानाजी, ठीक है न ?

मोहनलाल—भई मेरी समझमें तो यह बात बिलकुल नहीं आती। बच्चोंके चेहरे-मोहरेका हाल तो तुम्हीं लोग समझ सकती हो। हम लोगोंको तो इन बातोंका ठीक ठीक पता ही नहीं चलता। पर फिर भी मेरे देखनेमें जहाँ तक आता है, वह अपने बापपर ही पड़ा है। (अशोककी ओर संकेत करके) बिलकुल इनकी आँखोंकी तरह उसकी आँखें हैं और नाक भी इन्हींकी तरह है।

[रमेश दुःख और क्रोधसे दाँत पीसता है। कुसुम उसके मनका भाव समझकर उसका ध्यान बँटाना चाहती है।]

कुसुम—मिस्सरजी, जरा अन्दरसे पान और ले आना। पर देखो, कत्था जरा ज्यादा रहे।

(रमेश अन्दर जाता है।)

कमला—मैं तो समझती हूँ कि उसका मुँह और ठोढ़ी बिलकुल कुसुमकी तरह है।

मोहनलाल—कुछ बातोंमें वह भले ही अपनी माँपर पड़ा हो, पर मैं तो समझता हूँ कि उसका सब कुछ (अशोककी ओर संकेत करके) इन्हीं रमेशजीकी तरह है।

कुसुम—नानाजी आजकल उसके दाँत निकल रहे हैं। इसीसे वह ऐसा मालूम होता है।

अशोक—लेकिन नानाजी, मैं तो यही कहूँगा कि वह बहुत कुछ आपहीपर पड़ा है।

मोहनलाल—(बिगड़कर) तुम मुझे बनाते हो! भला मुझपर वह कैसे पड़ सकता है?

अशोक—जी नहीं, मेरी मजाल है कि मैं आपको बनाऊँ। मेरा मतलब यह है कि कुसुम आपपर पड़ी है और वह लड़का कुसुम

पर पड़ा है। इसी लिए उसकी आकृति बहुत कुछ आपकी आकृतिसे मिलती जुलती है।

मोहनलाल—(कुछ प्रसन्न होकर और सिर हिलाकर) हाँ, यह बात मैं किसी हद तक मान सकता हूँ।

[रामूँका प्रवेश]

रामूँ—(कमलासे) आपकी मजदूरनी खिड़कीपर खड़ी है। कहती है कि कहींसे टेलिफोन आया है।

कमला—टेलिफोन और कहाँसे आया होगा। मदनने ही कहींसे अपनी खबर भेजी होगी। (कुसुमसे) बहन, जरा मैं देख आऊँ, क्या है।

कुसुम—हाँ हाँ जाओ, सुन आओ। पर देखो, जरा जल्दी आना। कहीं वहीं बैठकर बातें न करने लग जाना।

कमला—बहन, मैं वादा नहीं कर सकती। अगर उन्होंने किसी जरूरी कामके लिए कहा और मुझे रुक जाना पड़ा तो लाचारी है।

कुसुम—इस वक्त कौनसा जरूरी काम रखा है! यही कहते होंगे कि मैं कब आऊँगा।

कमला—जो हो। अगर छुट्टी मिली तो जरूर आऊँगी। [प्रस्थान।]

कुसुम—नानाजी, बहन कमला भी बहुत ही सज्जन हैं। और अभी इनके पति मदनको तो आपने देखा ही नहीं। वे तो निरे देवता हैं देवता। ऐसा भला आदमी तो मैंने कभी देखा ही नहीं। और हँसमुख ऐसे हैं कि कुछ कहनेकी बात नहीं। और दोनों मियाँ-बीबीमें प्रेम भी खूब है। कभी लड़ाई-झगड़ा तो सुननेमें ही नहीं आता।

मोहनलाल—नहीं, इसमें शक नहीं कि कमला है बहुत नेक। बहुत भले घरकी लड़की जान पड़ती है। इनके पति मदन क्या काम करते हैं ?

कुसुम—अजी उनके कामोंका कुछ न पूछिए। हैं तो वह एक कम्पनीमें नौकर और उसकी तरफसे इमारतोंका ठेका लेते हैं। पर इसके सिवा वे और भी कई काम करते हैं। कई जान-बीमा-कम्पनियोंके एजेण्ट हैं, एक बिस्कुट कम्पनीके भी एजेण्ट हैं। और न जाने कितने काम करते हैं। अभी उन्होंने जो नया मकान बनवाया है, उसमें चार गृहस्थियाँ बहुत मजेमें रह सकती हैं।

मोहनलाल—हाँ, फिर जब इतने काम करते हैं, तो पैसा भी तो खूब ही पैदा करते होंगे।

कुसुम—उनके दफ्तरका बड़ा साहब तो दिन-रात इनके सामने हाथ जोड़े खड़ा रहता है। बिना इनकी सलाहके कोई काम करता ही नहीं। बड़े बड़े रोजगारी इनके घर राय लेने आते हैं। दिन-भर आदमियोंका ताँता लगा रहता है ताँता।

मोहनलाल—हाँ भाई, जिसके पास अक्ल होगी, उसके पास दस आदमी जरूर ही सलाह लेने आवेंगे। मैं भी जब गाँवपर जाता हूँ, तब मेरे पास भी इसी तरह आदमियोंका ताँता लगा रहता है।

[हाथमें पानकी रिकाबी लिये हुए रमेशका प्रवेश।]

अशोक—(रमेशसे) टेबुलपर रख दो और जरा जाकर पीनेके लिए एक गिलास पानी ले आओ।

रमेश—बहुत अच्छा। [रमेश आँखें तरेरता हुआ जाता है।]

अशोक—नानाजी, रुपया तो आजकल ठेकेके काममें मिलता है। अगर आदमीके पास रोजगारमें लगानेको रुपया हो, तो मेरी समझमें

उसे इमारतोंके ठेके लेने चाहिएँ। बीस हजारका ठेका लिया दस हजारमें बनाकर इमारत खड़ी कर दी और बाकी दस हजार अपने नानाजीका हो गया।

[मोहनलाल अशोककी ओर घुरेरकर देखता है। अशोक अपनी भूल समझकर लज्जित होता है।]

कुसुम—(बात बनानेके लिए) तुम्हें बात करनेका भी शऊर नहीं है। यह क्यों नहीं कहते कि बाकी दस हजार अपना हो गया या अपने बापका हो गया?

अशोक—हाँ हाँ, मेरा यही मतलब था। यह तो एक मुहावरा था जो जल्दीसे मेरे मुँहसे निकल गया।

[रमेश पानीका गिलास लाकर देता है। अशोक हाथमें गिलास लेकर शानसे पीता है। जूठा गिलास रमेशकी तरफ बढ़ाता है। पर रमेश चुपचाप खड़ा रहता है।]

अशोक—(बिगड़कर) कैसा नामाकूल आदमी है। गिलास हाथमें क्यों नही लेता।

(रमेशकी त्योरी चढ़ जाती है।)

कुसुम—(ताड़कर अशोकसे) आज तुम्हें क्या हो गया है जो सभी बातें बहकी बहकी करते हो? अरे ये रामूँ नहीं मिस्सरजी हैं। ब्राह्मण होकर जूठा गिलास कैसे हाथमें लेंगे?

अशोक—(लज्जित होकर) ओह मैं भूल गया। मैंने समझा कि रामूँ है। खैर, मिस्सरजी, माफ करना। तुम अपने ही आदमी हो। अच्छा कोई बढ़िया रेकार्ड लगाओ तो।

मोहनलाल—नहीं रेकार्ड फेकार्ड रहने दो। कामकी बातें होने दो।

कुसुम—क्यों नानाजी, मौसी कैसी हैं? उनका हाल पूछना तो मैं भूल ही गई।



मोहनलाल—अच्छी तरह हैं।

कुसुम—अब तो वह बूढ़ी हो चली होंगी।

मोहनलाल—हाँ, अब पहलेकी तरह उनका शरीर नहीं चलता। फिर भी जैसे तैसे घरके सब काम कर ही लेती हैं।

कुसुम—यों शरीरसे तो अच्छी हैं न? पिछले पत्रमें उन्होंने लिखा था कि बुखार आता है।

मोहनलाल—हाँ, महिनों बुखार आता रहा। फिर दम फूलने लगा। पर आजकल अच्छी हैं।

कुसुम—मैं तो अक्सर (अशोककी ओर संकेत करके) इनसे उनका जिक्र किया करती हूँ।

अशोक—जी हाँ, यहाँ अक्सर मौसीजीका जिक्र हुआ करता है।

कुसुम (अशोकसे) तुमने पान मँगवाया था, पर अब तक खाया नहीं। लो, पान खा लो। (पान देती है)

अशोक—(पान लेकर, मानाजीसे) इन्हें हर बातमें बराबर मेरा ख्याल रहता है। ऐसी लक्ष्मी लोगोंको बड़े भाग्यसे मिलती है। इनके कारण मुझे किसी बातकी जरा भी तकलीफ नहीं होने पाती। इन्हें सदा यही चिन्ता रहती है कि मैंने भोजन किया या नहीं, मैंने पान खाया या नहीं, मैंने जलपान किया या नहीं। मुझपर इनकी जो कृपा रहती है, उसका बदला मैं नहीं चुका सकता।

[अशोक प्रेमसे कुसुमकी पीठपर हाथ फेरना चाहता है। कुसुम झिझककर पीछे हटती है। पर अशोक आगे बढ़कर कुसुमकी पीठपर प्यारसे हाथ फेरने लगता है यह देखकर रमेशके हाथकी पानकी तश्तरी जमीनपर गिर पड़ती है।]

मोहनलाल—मैं देखता हूँ कि रसोइया रखनेमें भी कम खर्च नहीं पड़ता।



[कुसुमकी दृष्टि रमेशकी ओर जाती है । रमेश तश्तरी उठाता है ।]

अशोक—नानाजी, हमारा रसोइया है तो बहुत होशियार । पर जरा जल्दबाज है, इसीसे अक्सर बहुतसी चीजें तोड़ फोड़ डाला करता है और बहुत नुकसान करता है ।

कुसुम—क्यों नानाजी, आपके लिए सोडा या लेमनेड मँगवाऊँ ।

मोहनलाल—नहीं बेटी, तुम जानती हो मैं तो ये सब चीजें छूता भी नहीं ।

कुसुम—और नानाजी, कपिलाका क्या हाल है ? वह तो अब खूब बड़ी हो गई होगी ।

मोहनलाल—हाँ, छह बरसकी हो गई है ।

अशोक—अब तो स्कूल जाने लगी होगी ।

[कुसुम और मोहनलाल आश्चर्यसे अशोककी ओर देखते हैं ।]

कुसुम—(बात बदलनेके लिए अशोकसे) क्यों रमेश, तुम्हें दोनोंमेंसे क्या पसन्द है ?

[नानाजी चकित होकर कुसुमका मुँह देखते हैं । अशोक भी समझता है कि कुसुमने मुझसे यह प्रश्न करके बड़ी भूल की है, इस लिए वह तेज नजरसे कुसुमकी ओर देखता है । कुसुमको भी अपनी भूल मालूम हो जाती है, इस लिए वह बात बनाती है ।]

कुसुम—देखनेमें यह बात विलक्षण मालूम होती है कि मैं इनसे पूछती हूँ कि तुम्हें क्या पसन्द है । पर वास्तवमें बात यह है कि इनकी पसन्द भी निराली है । जिस दिन घरमें चार चार बोतलें सोड़ेकी पड़ी रहती हैं उस दिन ये आदमीको बाजार भेजकर लेमनेड मँगाते हैं । जिस दिन लेमनेड घरमें रहता है, उस दिन सोड़ेकी फरमाइश करते हैं ।



अशोक—(शेखीसे) वह लोग बेवकूफ होते हैं जो सदा एक ही लीकपर चलते हैं। जब दुनियामें तरह तरहकी चीजें मौजूद हैं, तब मनुष्य बारी बारीसे उन सबका आनन्द क्यों न ले ? कुछ लोग जनम भर खाली चाय ही पीते हैं, कुछ लोग सिर्फ लेमनेडमें ही जिन्दगी बिता देते हैं। पर मैं सब चीजोंका मजा लेता हूँ। आज न मैं सोडा पीऊँगा और न लेमनेड। आज मुझे आइसक्रीम चाहिए।

कुसुम—रामूँ, जाओ चार बोतल आइसक्रीम ले आओ।

मोहनलाल—हैं ! चार बोतल ! चार बोतलोंका क्या होगा ?

अशोक—अजी नानाजी, आप इसकी फिक्र न करें। हमारे यहाँ तो दरजनों बोतलें रोज आया करती हैं। आज इन्होंने चार तो बहुत कम कही हैं। दो तीन तो मैं अकेला ही पी जाऊँगा।

[रामूँ अन्दरसे एक बोतल लाकर खोलता है और गिलासमें भरकर अशोकको देता है।]

अशोक—क्यों न हो। हमारी लक्ष्मीका भंडार ठहरा। इसमें हमेशा सब चीजें भरी रहती हैं। ईश्वर करे, ऐसी बी सबको मिला करे। (रमेश क्रोधपूर्ण दृष्टिसे अशोककी ओर देखता है।)

मोहनलाल—भई, इधर उधरकी तो बहुत सी बातें हो चुकीं। अब कुछ कामकी भी बातें होनी चाहिएँ। (अशोकसे) रमेश, यह तो तुम जानते ही हो कि मेरे पास थोड़ासा रुपया और कुछ जमींदारी है।

अशोक—जी हाँ, यह तो मुझे बहुत पहलेसे मालूम है।

मोहनलाल—तुम यह भी जानते हो कि मेरा कोई लड़का-बाला नहीं है और मैं बुड्ढा हो गया हूँ।

अशोक—मामाजी, आप बुड्ढे क्यों होने लगे। अभी आपकी उमर ही क्या है!

मोहनलाल—(बिगड़कर) यह सब मसखरापन रहने दो। कामकी बातोंमें हँसी अच्छी नहीं होती। मैं पहलेसे ही अपनी सारी सम्पत्ति कुसुमको देना चाहता था। पर जब मैंने देखा कि उसने मेरी मरजी-के खिलाफ अपनी इच्छासे तुम्हारे साथ ब्याह कर लिया, तब मैंने सोचा था कि यह सम्पत्ति किसी औरको दे दूँ।

अशोक—पर आपका यह सोचना ठीक नहीं था। मेरी समझमें आपको अपनी सारी सम्पत्ति................।

मोहनलाल—नहीं, इसमें तुम्हारी सलाहकी जरूरत नहीं। अब मैंने खुद ही निश्चय कर लिया है कि अपनी सारी सम्पत्ति तुम्हारे लड़के मुन्नूके नाम लिख दूँ। तुम उसके वली या अभिभावकके रूपमें सारी सम्पत्तिकी तब तक व्यवस्था करोगे, जब तक वह बालिग न हो जायगा।

अशोक—वाह वाह, यह तो आपकी मेहरबानी है।

मोहनलाल—नहीं, इसमें मेहरबानी-वेहरबानी कुछ भी नहीं है। तुम्हारे ब्याहके बाद मैंने तुम्हें एक पत्रमें जो कुछ कठोर बातें लिख दी थीं, उन्हींका मैं अब प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि अब तुम उन सब बातोंको भूल जाओगे।

अशोक—(हँसकर) अजी मैं तो उन सब बातोंको कभीका भूल चुका हूँ।

मोहनलाल—मैंने सब कागज-पत्र लिखा-पढ़ाकर ठीक कर रखे हैं। वे सब कागज मैं तुम्हें दिखलाना चाहता हूँ। वे मेरे कोटमें हैं। मैं अभी जाकर निकाल लाता हूँ। (मोहनलालका प्रस्थान।)

कुसुम—(अशोकके पास पहुँचकर) अशोकजी, आपको यह बात भूल नहीं जानी चाहिए कि आप इस समय रमेशके स्थानकी पूर्ति करनेके लिए बुलाये गये हैं। आपको अभी यहाँ आये दो घण्टे भी नहीं हुए और आप इतनी बेतकल्लुफीसे बातें करने लगे हैं। कभी मेरी पीठपर हाथ फेरते हैं, कभी मेरा हाथ पकड़ना चाहते हैं। आजसे पहले कभी मेरी आपकी देखादेखी भी नहीं हुई, जो आप आज इस तरह बढ़ बढ़कर हाथ चलाते हैं, यह क्या कोई अच्छी बात है?

अशोक—आप नाराज़ क्यों होती हैं? मैं तो जो कुछ करता हूँ, वह सिर्फ आपके लिए करता हूँ, आपके लड़केके लिए करता हूँ, आपके नानाजीके लिए करता हूँ। इतनी बेतकल्लुफीका कारण यही है कि आपके नानाजी यह न समझें कि मैं आपका पति नहीं हूँ, बल्कि मँगनी माँगकर लाया गया हूँ। मैं तो सिर्फ आपके नानाजीकी आँखोंमें धूल डालना चाहता हूँ, आप कुछ और मतलब न समझें। मैं तो सिर्फ वही बरताव करता हूँ जो असल मियाँको असल बीबीके साथ करना चाहिए।

कुसुम—तो क्या आप समझते हैं कि पतिको अपनी स्त्रीके साथ इसी प्रकारका व्यवहार करना चाहिए?

अशोक—हाँ, मैं तो यही समझता हूँ।

कुसुम—तब तो मैं समझती हूँ कि अभी इस विषयमें आपको बहुत कुछ सीखना बाकी है। स्त्रीपर पतिका जो प्रेम होता है, वह हृदयमें छिपाकर रखनेके लिए होता है। इस प्रकार ओछेपनसे और वह भी चार आदमियोंके सामने विशेषतः बड़े-बूढ़ोंके सामने प्रकट करनेके लिए नहीं होता।



अशोक—आपने मुझे जो यह शिक्षा दी है, इसके लिए मैं आपका बहुत अनुगृहीत हूँ और आपको अनेक धन्यवाद देता हूँ। अब शीघ्र ही मेरा भी ब्याह होनेवाला है, इसलिए यदि आप कृपा करके मुझे इस तरहकी कुछ और बातें बतला दें, तो........।

कुसुम—इस तरहकी बातें किसीके बतलाने या सिखलानेसे नहीं आया करतीं। सब लोगोंको स्वयं अपने मनसे सीखनी और समझनी पड़ती हैं; और आपको भी स्वयं ही सीखनी और समझनी पड़ेंगी। मैंने ये बातें सिखलानेके लिए कोई स्कूल नहीं खोल रखा है। पर मैं आपको सिर्फ एक बात बतला देना चाहती हूँ और वह यह कि आप बहुत ज्यादा न बोला करें। और जो कुछ बोलें, वह बहुत समझ-बूझकर बोला करें।

अशोक—तो क्या मेरे मुँहसे कोई ना-समझीकी बात निकल गई थी?

कुसुम—अभी आपने कहा था कि कपिला तो अब स्कूल जाने लगी होगी।

अशोक—तो इसमें ना-समझीकी क्या बात हुई?

कुसुम—ना-समझीकी बात यही हुई कि कपिला लड़की नहीं बल्कि गऊ है!

अशोक—ओह! तब तो जरूर बहुत बड़ी गलती हुई। मैंने समझा था कि शायद कपिला आपकी मौसीकी लड़की है।

कुसुम—इसी लिए तो मैं कहती हूँ कि आप पहले जरा बातको अच्छी तरह समझ लिया करें, तब बोला करें। बिना समझे-बूझे बहुत-सी बातें करनेमें यही तो सब खराबियाँ होती हैं।

[रमेशका प्रवेश ।]

अशोक—(बिगड़कर) मिस्सरजी, तुम भी बड़े बेवकूफ दिखाई पड़ते हो। तुम्हें इतनी समझ नहीं कि जहाँ मियाँ-बीबी बातें करते हों, वहाँ नौकर-चाकरोंको नहीं जाना चाहिए? बिना समझे-बूझे अन्दर घुसे चले आते हो। चलो हटो यहाँसे।

(रमेश बहुत क्रोधसे अशोक और कुसुमकी ओर देखता हुआ वहाँसे चला जाता है।)

अशोक—क्षमा कीजिएगा, पर सबसे बड़ी कठिनता तो यह है कि मैं अभी आपके यहाँका कुछ भी हाल नहीं जानता। इसीलिए मुझसे कभी कभी गलती हो जाती है। पर अब आगेसे मैं ऐसी गलती न करूँगा।

कुसुम—गलतियाँ तो जो कुछ करनीं थीं, वह सब आप कर चुके। खैर; अब भी जरा सँभल कर बातें कीजिएगा। बहुत ज्यादा बेतकल्लुफी मत दिखलाइएगा। और हर एक बातमें मेरी हाँमें हाँ भी मत मिलाइएगा। लोग समझेंगे कि आपमें कुछ भी बुद्धि नहीं है। कभी कभी किसी मौकेपर कोई बात मेरे कहनेके खिलाफ भी कहा कीजिए। मैं नानाजीको यह दिखलाना चाहती हूँ कि मेरे पति स्वतंत्र विचार रखते हैं। और जो कुछ कहना हो, बेधड़क होकर कहा कीजिए। मेहमानों या पराये आदमियोंकी तरह दबकर मत कहा कीजिए। इस ढंगसे बातें किया कीजिए जिसमें मालूम हो कि आप इस घरके मालिक हैं।

अशोक—बहुत अच्छा, अब आगे मैं ऐसा ही किया करूँगा। पर जरा यह तो बतला दीजिए कि आखिर यह स्वाँग मुझे कब तक इस तरह चलाना पड़ेगा?

कुसुम—बस, यही कल सुबह दस-ग्यारह बजे तक। जब

नानाजी यहाँसे चले जायँगे, तब फिर आपको तकलीफ करनेकी जरूरत नहीं रह जायगी।

अशोक—यही तो मैं भी चाहता हूँ कि कल सुबह मुझे छुट्टी मिल जाय। कल ही दोपहरकी गाड़ीसे मैं भी कलकत्ते जाना चाहता हूँ। वहाँ मेरे ब्याहकी बात-चीत चल रही है। जिससे मेरा ब्याह होनेको है, उसने मुझे बुलवाया है।

कुसुम—वाह, तो मैं देखती हूँ कि जितने कुआँरे और कुआँरियाँ हैं, उन सबका ब्याह कलकत्तेमें एक दो दिनमें ही हो जायगा। अच्छा, वह देखिए, दाहिनी तरफवाला कमरा आपके सोनेके लिए है।

[कमरेमें पहले-पहल आते ही अपना बेग जो जमीनपर फेंक दिया था, उसे उठाकर अशोक अपने कमरेमें जाना चाहता है।]

कुसुम—(अशोकका रास्ता रोककर) देखिए, अगर मेरे मुँहसे कोई ना-मुनासिब बात निकल गई हो तो आप बुरा मत मानिएगा। आप जानते हैं, इस समय मेरा चित्त ठिकाने नहीं है। आज आपने मेरा बहुत बड़ा काम किया है। इसके लिए मैं आपकी बहुत अनुगृहीत हूँ।

अशोक—जी नहीं, इसमें अनुगृहीत होनेकी कुछ बात नहीं है। आदमीका काम हमेशा आदमीसे ही चला करता है। पर हाँ, जरा यह तो बतलाइए कि आपका यह रसोइया मुझे इतनी बुरी तरहसे घूर घूरकर क्यों देखा करता है? और जरा जरा सी बातपर उसके हाथसे चीजें जमीनपर क्यों गिर पड़ती हैं?

कुसुम—आप इसीको गनीमत समझिए कि हमारे मिस्सरजी चीजोंको जमीनपर ही गिराकर रह जाते हैं और कोई चीज आपको नहीं खींच मारते। अच्छा, अब अपना बेग कमरेमें रख आइए।

[अशोक बेग लेकर अपने कमरेमें जाता है।]

कुसुम—रामूँ ! रामूँ !

[रामूँका प्रवेश ।]

रामूँ—जी हाँ !

कुसुम—देखो, ये सब बरतन वगैरह यहाँसे उठा के जाओ और माँज-धोकर रख दो ! रसोइयेसे बरतन माँजनेके लिए मत कहना ! एक तो वह ब्राह्मण ठहरा और दूसरे सिर्फ वह दो दिनके लिए रखा गया है ।

रामूँ—क्या आप दो दिन बाद उसे जवाब दे देंगी !

कुसुम—और नहीं तो क्या ! क्यों, तुम क्या चाहते हो कि मैं उसे जवाब न दूँ !

रामूँ—बेचारा रह जाता तो बहुत अच्छा होता । मुझे उससे बहुत मदद मिलती । उसे काम करना तो नहीं आता, पर आदमी बहुत होशियार मालूम होता है । और मसखरा भी अव्वल दर-जेका है ।

कुसुम—यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ !

रामूँ—मुझसे कहता था कि मेरी स्त्री नाटक करना खूब जानती है । नाटक वह सिर्फ करती ही नहीं, बल्कि आप ही नाटक बनाती है और आप ही देखती है ।

कुसुम—तुमसे ये सब बातें वह क्यों कहता था !

रामूँ—मैंने यों ही उससे पूछा था कि तुम्हारा मकान कहाँ है, तुम्हारे लड़के-बाले हैं या नहीं ! इसपर उसने कहा था कि मेरा घर यहीं है । एक लड़का भी है । पर मेरी स्त्रीको नाटक बनाने और खेलनेका शौक है, इसी लिए वह मेरी तरफ ज्यादा खयाल नहीं करती और इसी लिए मुझे यहाँ रसोइयेका काम करना पड़ता है ।

कुसुम—खैर; तुम्हें इन सब बातोंसे क्या मतलब ! तुम जाओ और अपना काम करो । और देखो, मेरा बिस्तर रसोईघरके बाहरवाले दालानमें कर देना । मैं आज वहीं सोऊँगी । और आज बच्चेका पालना तुम्हारी कोठरीमें रहेगा । और अब तुम लोग इधर मत आना, हम लोगोंको नानाजीसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं । (प्रस्थान ।)

रामूँ—मिसिरजी, जरा यहाँ आना ।

[रमेशका प्रवेश ।]

रामूँ—भइया, जरा यह टेबुल साफ करना है । तुम भी हाथ लगा दो तो जल्दी हो जाय । और तुम्हें एक मजेदार बात बतलाऊँ ।

रमेश—वह क्या ?

रामूँ—आज हमारे मालिक और मालकिनमें गहरा झगड़ा हुआ है ।

रमेश—यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

रामूँ—मालकिनने मुझसे कहा है कि मेरा बिस्तर रसोईघरके सामनेवाले दालानमें अलग लगाना ।

रमेश—ऐसी बात ?

रामूँ—हाँ जी, मैं ठीक कहता हूँ । और लड़का आज मेरे पास सोएगा । तुम्हें एक और बात बतलाऊँ । मालूम होता है कि मालकिन तुमसे भी नाराज हैं और जल्दी ही तुम्हें दूसरा घर देखना पड़ेगा ।

रमेश—क्या वह मेरे बारेमें कुछ कहती थीं ?

रामूँ—यही कहती थीं कि मिसिरजीको कुछ भी काम-धन्धा करना नहीं आता । मैंने सोचा कि कहीं तुम्हारी नौकरी न चली जाय, इसलिए मैंने उनसे कह दिया कि अगर मिसिरजी यहाँ न रहेंगे, तो मैं भी नहीं रहूँगा, उन्हींके साथ चला जाऊँगा ।

रमेश—तुमने यह बात मेरी....(सँभलकर) मालकिनसे कही थी ?

रामूँ—और नहीं तो किससे कहता ?

रमेश—तब फिर वह क्या बोलीं ?

रामूँ—बोलतीं क्या ? चुप हो रहीं। लो यह चादर पकड़कर तह तो करा दो।

[चादरके एक तरफके दोनों पल्ले रामूँ पकड़ता है और दूसरी तरफके दोनों पल्ले रमेश पकड़ता है।]

रमेश—हाँ, अब क्या करूँ ?

रामूँ—इसे तह करा दो।

[दोनों मिलकर चादर तह करते हैं। पर रमेशको ठीक तरहसे तह करना नहीं आता।]

रामूँ—तुम्हें तो चादर तह करना भी नहीं आता। लाओ मुझे दो। [रमेशके हाथसे चादर लेकर स्वयं तह करता है।]

रमेश—भाई, मैं तो तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि मुझे काम करना नहीं आता। मुझपर इस तरहकी नौकरीकी यह नई विपत पड़ी है। किसी तरह काम सँभाल दो, तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी हो।

[रमेश दुःखी होकर एक कुरसीपर बैठ जाता है।]

रामूँ—खैर, तुम घबराओ मत। मैं तुम्हें सब काम सिखला दूँगा। और अगर मालकिनने तुम्हें निकाल दिया, तो मैं भी नौकरी छोड़ दूँगा। फिर हम दोनों आदमी चलकर किसी होटलमें नौकरी कर लेंगे। आजकल नौकर मिलते कहाँ हैं ?

[टेलिफोनकी घण्टी बजती है। रामूँ दौड़कर टेलिफोन हाथमें उठा लेता है।]

रामूँ—(टेलिफोनमें) कौन ? (ठहरकर) रमेश बाबू यहाँ नहीं हैं।

क्या कहा ? अरे ज़रा जबान सँभालकर बातें कीजिए। आपको बात करनेका भी........।

रमेश—लाओ लाओ, मुझे दो। तुम्हें टेलिफोनसे बात करना नहीं आता।

रामूँ—(रमेशके हाथमें टेलिफोन देकर) लो भाई, तुम्हीं बात करो। मेरे तो बापने भी कभी इस तरह बातें न की होंगी।

[अशोकका प्रवेश।]

अशोक—(बिगड़कर) मिसिरजी, तुम्हें घास छीलनेका तो शऊर नहीं है और चले हो टेलिफोन उठाकर उसका सत्यानाश करने। चलो हटो यहाँसे।

रामूँ—सरकार, अभी टेलिफोनपर कोई आपको बुलाता था।

अशोक—(और भी बिगड़कर) तब मुझे बुलाना चाहिए था न कि लगे खुद ही तुम लोग अपनी अपनी लियाकत खर्च करने। लाओ, टेलिफोन मुझे दो और जाकर अपना काम करो।

[रमेश टेलिफोन अशोकके हाथमें दे देता है। रामूँ और रमेश दोनों वहाँसे चले जाते हैं।]

अशोक—(हाथमें टेलीफोन लेकर) हल्लो।........हाँ मैं हूँ रमेशचन्द्र।........हाँ, हमारे यहाँ एक रसोईदार तो है। पर वह अपना नाम भोला पाँडे नहीं, बल्कि भोला मिसिर बतलाता है।........हाँ यह हो सकता है कि वह हर जगह अपना नाम कुछ बदलकर बतलाता हो।........यहाँ उसके साथ कोई औरत तो नहीं है।........होगी। उसके घरपर या और कहीं इधर उधर होगी, पर यहाँ तो नहीं है।

[नानाजी हाथमें कुछ कागज-पत्र लेकर आते हैं ।]

अशोक—(टेलिफोनपर) क्या कहा ?........वह पुराना चोर है ?........हो सकता है । हम लोगोंको भी उसपर शक हो रहा था ।........लेकिन अगर वह चोर और बदमाश है तो आप उसे यहाँ आकर गिरफ्तार क्यों नहीं करते ?........हाँ, वह इस समय यहीं मौजूद है ।........अच्छी बात है । ऐसा ही सही । आपने बड़ी कृपा की जो हम लोगोंको सचेत कर दिया । अब हम लोग उसपर और भी कड़ी निगाह रखेंगे और ज्यों ही कोई ऐसी-वैसी बात होगी, त्यों ही आपको तुरन्त सूचना देंगे ।

मोहनलाल—हाँ देखो, यही सब जमीनके सम्बन्धके कागज-पत्र हैं और मेरा लिखा दानपत्र है । [सब कागज टेबुलपर रख देते हैं ।]

अशोक—नानाजी, पहले एक मजेदार बात तो सुन लीजिए । अभी कोतवालीसे थानेदारने टेलिफोन किया था । वह मेरे दोस्त हैं । कहते थे कि आपके यहाँ जो रसोइया है, वह बड़ा भारी चोर और पुराना बदमाश है ।

मोहनलाल—मुझे तो पहलेसे ही उसपर शक हो रहा था । तुमने देखा नहीं, कैसी बुरी तरहसे घूर-घूरकर वह हम लोगोंकी तरफ देखता था ? मैं भी चोरों और बदमाशोंकी निगाह खूब पहचानता हूँ ।

अशोक—शक तो मुझे भी पहलेसे हो रहा था । पर आज तो उसका सारा भेद ही खुल गया । थानेदार साहब कहते थे कि वह कई बार सजा काट चुका है और कहीं अपना नाम पाँडे बतलाता है और कहीं मिसिर । और बदमाश तो अक्सर ऐसा करते ही हैं । हर

जगह अपना नाम बदलकर बतलाते हैं। उसकी कोई स्त्री भी है, और वह भी ऐसी ही बदमाश है।

मोहनलाल—पर पुलिसको पता कैसे चला कि वह यहाँ है।

अशोक—आज शामको जब वह इस मकानमें आ रहा था तब किसी खुफियाने उसे देख लिया था। आप जानते हैं कि पुलिसके आदमी तो हर जगह मौजूद रहते हैं और उन्हें घर-घरकी एक एक बातका पक्का पता रहता है। अब तो मुझे इस रामूँपर भी कुछ शक हो रहा हैं। माळूम होता है कि दोनों सिद्ध-साधक बनकर इस घरमें घुसे हैं और मौका पाते ही यहाँसे माल गायब करके चलते बनेंगे।

मोहनलाल—यह तो बहुत खराब बात है। कुसुमको बुलाकर ये सब बातें उससे कह देनी चाहिए।

अशोक—नहीं, मेरी समझमें उससे कहनेसे कोई फायदा नहीं। उसका दिल बहुत कमजोर है। वह पुलिसका नाम सुनकर कहीं घबरा न जाय।

मोहनलाल—तुम इतने दिनोंसे उसके साथ रहते हो, पर फिर भी उसका मिजाज नहीं पहचानते?

अशोक—(सँभलकर) जी नहीं, मेरा मतलब यही था कि पुलिसका नाम सुनते ही वह घबरा जायगी।

मोहनलाल—तब माळूम होता है कि तुम उसका मिजाज कुछ भी नहीं पहचानते। वह इस तरहकी बातोंसे घबरानेवाली लड़की नहीं है। खैर, यह बतलाओ कि अब तुम क्या करोगे?

अशोक—मेरी समझमें तो कुछ भी नहीं आता कि क्या करना चाहिए।

मोहनलाल—मेरी समझमें तुम्हें उचित है कि तुम इसी समय उसको घरसे निकाल दो। देखते नहीं कि वह तुम्हारी तरफ ऐसे घूरता है, जैसे तुम्हें खा ही जायगा।

अशोक—यह सब तो मैं देखता हूँ, पर मेरी समझमें अभी उसे निकालना ठीक नहीं होगा। थानेदारने कहा है कि एक सिपाही इस मकानके आस-पास रहेगा और वह उसपर पूरी निगाह रखेगा। ज्यों ही वह कुछ इधर-उधर करेगा, त्यों ही सिपाही खुद ही आकर उसे पकड़ लेगा। और फिर बिना कुसुमसे सलाह किये कोई काम करना भी तो ठीक नहीं।

मोहनलाल—मैं देखता हूँ कि तुममें कुछ भी दम नहीं है। क्या तुम इस घरके मालिक नहीं हो जो इस तरह डरते और दबते हो? घरमें अव्वल दरजेका चोर और बदमाश घुसा है और तुम उसे निकाल भी नहीं सकते? और फिर नौकरोंको रखना और निकालना तो मरदोंका काम है। अगर तुम उसको नहीं निकाल सकते तो मैं उसे निकालूँगा। मुझसे यह नहीं देखा जायगा कि वह तुम्हारा या कुसुमका गला काटकर चलता हो।

अशोक—(विवश होकर) अगर आपकी यही सलाह है तो फिर मैं ही उसको निकालता हूँ। मैं अभी उसे बुलाकर कहता हूँ। पर मेरी समझमें आप जरा यहाँसे हट जायँ। कहीं ऐसा न हो कि वह बिगड़ खड़ा हो और आप ही पर........।

मोहनलाल—अजी तुमने मुझे क्या समझ रखा है! मैंने ऐसे ऐसे बहुतेरे बदमाश देखे हैं। अगर उसने ज़रा भी इधर उधर किया, तो मैं मारते मारते उसके धुर्रे उड़ा दूँगा। अब भी इन पुरानी

हड्डियोंमें बहुत कुछ दम है। मैं तुम्हारी तरह निरा बाबू नहीं हूँ। मैं जमींदार हूँ, जमींदार !

अशोक—अच्छी बात हैं। तो मैं उसे बुलाता हूँ। मिसिरजी ! मिसिरजी !

[रमेशका प्रवेश ।]

अशोक—(डरता हुआ) देखो मिसिरजी, अब हमें तुम्हारी जरूरत नहीं; इस लिए तुम अपना रास्ता देखो ।

रमेश—यह क्यों ?

अशोक—(रमेशको कुछ शान्त देखकर साहसपूर्वक) बस, बहस मत करो। जो कुछ कह दिया, वह सुनो। अब हम लोगोंको तुम्हारी जरूरत नहीं है, इस लिए सीधी तरहसे यहाँसे चले जाओ। मैं खूब समझता हूँ तुम रसोइये नहीं हो।

रमेश—हाँ, आपका यह कहना तो बिलकुल ठीक है कि मैं रसोइया नहीं हूँ। और मैंने पहले ही कह दिया था कि यह सब ढोंग नहीं चल सकेगा। पर आखिर आपको यह कैसे मालूम हुआ कि मैं रसोइया नहीं हूँ ?

अशोक—तुम्हें इन सब बातोंसे क्या मतलब ? जैसे हुआ, हम लोगोंको पता लग गया। मैंने तुम्हें भी पहचान लिया है और तुम्हारी औरत............।

रमेश—आप मुझे जो चाहें, वह कह लें। पर मैं आपको यह बतला देना चाहता हूँ कि इसमें मेरी स्त्रीका कुछ भी दोष नहीं है। यह सब स्वाँग मैंने ही रचा था।

अशोक—भोला पाँड़े, तुमने स्वाँग तो खूब रचा था, पर यह

समझ रखो कि हम लोगोंके सामने तुम्हारी चालाकी नहीं चल सकती। हम लोग दूध-पीते बच्चे नहीं हैं जो तुम्हारी चालाकियाँ न समझ सकें।

रमेश—क्या कहा ? भोला पाँड़े ! भोला पाँड़े कौन है ?

अशोक—तुम हो भोला पाँड़े और कौन है ? हम लोगोंको तुम्हारा सब पता लग गया है। अब छिपानेसे कुछ फायदा नहीं।

रमेश—लेकिन मैं कोई बात छिपाता तो नहीं।

अशोक—अरे तुम छिपा कहाँ तक सकते हो ? हम लोगोंने यहाँ तक पता लगा लिया है कि तुम्हें एक बार इलाहाबादमें छः महीनेकी और एक बार कलकत्तेमें दो बरसकी सजा हुई थी। और तुम्हारी स्त्रीका भी सब हाल हमें मालूम हो गया है।

रमेश—(और अधिक टोह लेनेके विचारसे) मेरी स्त्रीका आपको क्या हाल मालूम हुआ है ? और आपसे ये सब बातें कहीं किसने ?

अशोक—अरे पुलिससे सब बातें मालूम हुई हैं पुलिससे। तुमने हमें समझ क्या रखा है।

रमेश—तो फिर अब आप यह बतलाइए कि आप करना क्या चाहते हैं ?

अशोक—करना और क्या है ! अभी पुलिसको बुलाकर तुम्हें उसके सुपुर्द कर देंगे; और क्या करेंगे !

रमेश—आखिर मैंने कसूर क्या किया है ?

अशोक—कसूरका क्या पूछना है ! तुम और तुम्हारी स्त्री दोनों मिलकर घर घर चोरी करते फिरते हो और पूछते हो—कसूर क्या है ?

रमेश—लेकिन न तो मैं इस घरमें ताला तोड़कर आया हूँ और न मैंने यहाँ चोरी ही की है।



अशोक—बस, अब तुम अपनी बहस रहने दो। हम तुमपर यही मेहरबानी करते हैं कि तुम्हें पुलिसके हवाले नहीं करते और सिर्फ अपने घरसे निकाल देते हैं। बस, अब अपना बोरियाँ-बँधना समेटो और यहाँसे चलते-फिरते नजर आओ।

रमेश—इसी वक्त, इस अँधेरी रातमें?

अशोक—और नहीं तो क्या कल दोपहरको?

रमेश—लेकिन इस वक्त तो मैं यहाँसे नहीं जा सकता। बाहर इतने जोरोंका पानी बरस रहा है, इतनी तेज हवा चल रही है, भला इस आँधी-पानीमें कोई घरसे बाहर पैर रख सकता है! और फिर मुझे कई दिनसे जुकाम हुआ है। अगर इस वक्त मैं बाहर जाऊँगा तो मेरी तबीयत और भी ज्यादा खराब हो जायगी।

मोहनलाल—(बिगड़कर) बड़ा आया है तबीयत-खराबवाला! दुनियाँ भरका चोर और बदमाश और तिसपर यह मिज़ाज!

अशोक—अब तुम सीधी तरहसे यहाँसे जाते हो या मैं पुलिस बुलाऊँ?

रमेश—लेकिन पहले मेरी बात तो सुन लीजिए। हाँ, आपका क्या नाम है?

अशोक—(ऐंठकर) मेरा नाम है रमेशचन्द्र वर्म्मा!

रमेश—हाँ हाँ, माफ कीजिएगा, मैं आपका नाम भूल गया था। हाँ तो श्रीयुक्त रमेशचन्द्रजी, आपको जरा समझदारीसे काम लेना चाहिए। आपने मुझे अपने यहाँ रसोईदारकी जगह दी है और मैंने भी बहुत ईमानदारीके साथ आपकी नौकरी की है। आज मुझे आपके यहाँ बहुत मेहनत करनी पड़ी है। इस समय कृपा कर मुझे थोड़ा विश्राम करने दीजिए। फिर कल सुबह................।



अशोक—(मुँह चिढ़ाकर) आराम करने दीजिए ! बड़े रईस आराम करनेवाले ! तुम तो यहाँ आराम करो और हम लोग सारी रात जागकर बिलावें ?

रमेश—जी नहीं, आप लोग भी आराम कीजिए।

मोहनलाल—(मुँह चिढ़ाकर) आप लोग भी आराम कीजिए। अरे जब तक तुम इस घरमें हो, तब तक क्या हम लोगोंको नींद आ सकती है ? (अशोकसे) देखो जी रमेश, या तो तुम इसे अभी घरसे निकालो और या मैं यहाँसे जाता हूँ। मैं ऐसे चोर और बदमाशके साथ रातको एक घरमें नहीं रह सकता।

[कुसुम आकर देखती है कि कुछ हुज्जत हो रही है। वह एक एक करके सबको ध्यानसे देखती है।]

कुसुम—क्यों, क्या बात है ?

अशोक—नहीं, कोई खास बात नहीं है। बात सिर्फ यही है कि मैंने आज इस रसोइयेको बरखास्त कर दिया है।

कुसुम—बरखास्त कर दिया है ? (ठहरकर) नहीं, तुम इसे बरखास्त नहीं कर सकते।

मोहनलाल—कुसुम, जरा पहले सब बातें समझ तो लो।

कुसुम—नानाजी, चाहे जो कुछ हो, यह रसोइया बरखास्त नहीं किया जा सकता। मैंने इसे स्थायी रूपसे रखा है।

अशोक—लेकिन नौकरोंको रखना या छुड़ाना घरके मालिक और मरदोंका काम है। तुम इसमें दखल मत दो।

कुसुम—मैं दखल क्यों नहीं दूँगी ? तुम चाहते हो कि इस बेचारेको इस अँधेरी रातमें, ऐसी आँधी और पानीके समय, घरसे बाहर निकाल दो। नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। यह यहीं रहेगा।



…नलाल—कुसुम, जरा बात सुनो और समझ लो। इस आदमीको रातके समय अपने घरमें रखना ठीक नहीं है। हम लोग इसको खूब अच्छी तरह जानते हैं। यह मिसिर नहीं, पाँड़े है। इसका नाम भोला पाँडे है। यह यहाँ नाम और भेस बदलकर आया है। यह बड़ा भारी चोर और बदमाश है और कई बार जेल हो आया है।

कुसुम—कौन कहता है कि यह चोर और बदमाश है?

अशोक—मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह दो बार जेल हो आया हैं। और इसी लिए मैं इसे इसी समय घरसे निकालकर छोड़ूँगा।

कुसुम—लेकिन मैं कहती हूँ कि यह चोर और बदमाश नहीं है।

अशोक—घरका मालिक मैं हूँ। मैं इसे अभी निकालता हूँ। (रमेशसे) चलो, निकलो घरसे बाहर।

रमेश—साहब, पहले आप मेरी तनखाह तो चुकाइए, तब देखा जायगा।

अशोक—क्या कहा?

रमेश—कहता यही हूँ कि आप मुझे बिना कसूर निकाल रहे हैं, इस लिए पहले मेरी एक महीनेकी तनखाह चुकाइए। तब और बातें कीजिएगा।

अशोक—(कुसुमसे) प्यारी, तुम इसकी तनखाह चुका दो और बदमाशको घरसे निकाल बाहर करो।

कुसुम—मैं कहाँसे तनखाह चुकाऊँ? घरके मालिक तुम हो। तुम तनखाह चुकाओ।

अशोक—इसकी कितनी तनख्वाह हुई?

रमेश—तीस रुपये।

अशोक—(कुछ सोचकर) मेरी समझमें तो यही आता है कि अब इस वक्त यह मामला यहीं खतम किया जाय। फिर सवेरे जो होगा, वह देखा जायगा।

मोहनलाल—नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। रमेश, मैं तुमसे कहता हूँ, तुम अभी इसकी तनखाह चुका दो और इसे घरसे निकाल दो।

अशोक—ऐसे बदमाशको तो एक पैसा नहीं देना चाहिए। लेकिन नानाजी, जब आप ही कहते हैं, तब मैं इसे रुपये दे देता हूँ। (जेबसे दस दस रुपयेके तीन नोट निकाल कर और रमेशके हाथमें देकर) लो जी अपनी तनखाह और निकल जाओ घरके बाहर। अब अगर तुम फिर यहाँ दिखाई पड़े तो मैं तुम्हें सीधा कालेपानी भेज दूँगा। याद रखना!

[रमेश नोट जेबमें रखकर जाना चाहता है।]

कुसुम—(आगे बढ़कर) नहीं, मैं इस वक्त रातको इसे घरसे नहीं जाने दूँगी। इसे कई दिनसे बहुत तेज़ सरदी हुई है। बेचारा पानीमें भीगेगा तो और भी ज्यादा बीमार हो जायगा।

अशोक—(कुसुमकी पीठपर हाथ फेरकर) प्यारी, मैं देखता हूँ कि तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है और तुम कोई बात अच्छी तरह समझ नहीं सकती हो। मेरी समझमें तुम इस समय जाकर सो रहो और इसे यहाँसे जाने दो।

कुसुम—(तेजीसे अशोकका हाथ झटकारकर) मेरा दिमाग़ क्यों खराब होने लगा! तुम्हारा दिमाग़ खराब हो गया है। अब अगर तुमने

फिर इस तरह मेरे बदनपर हाथ रखा और मुझे 'प्यारी' कहा, तो अच्छा नहीं होगा।

अशोक—देखो कुसुम, अब तुम बहुत बढ़ती जा रही हो। अब तुम्हारी बातें मेरी बरदाश्तके बाहर होती जा रही हैं। मैं तो चुप हूँ और कुछ बोलता नहीं, और तुम जो जीमें आता है, वह कहती चलती हो। मैं तुम्हारे साथ वैसा ही प्रेमपूर्ण और सज्जनताका व्यवहार करता हूँ जैसा किसी सुशील पतिको अपनी पत्नीके साथ करना चाहिए। इस-लिए तुम्हें भी एक सुशील पत्नीकी तरह रहना चाहिए। मैं जोरूका गुलाम बनकर रहनेवाला आदमी नहीं हूँ। दुनियाकी कोई औरत मुझे इस तरह दबाकर नही रख सकती। पर तुम अपने इस प्रकारके व्यवहारोंसे अपनी भी हँसी कराती हो और मेरी भी। अब भलाई इसीमें है कि तुम चुपचाप अन्दर जाकर सो रहो। (उँगलीसे संकेत करता है।)

[कुसुमके चेहरेपर सन्ताप, अपमान, क्रोध आदिके भाव उत्पन्न होते हैं। पर वह बड़ी कठिनतासे अपना क्रोध दबाती है। वह अशोकको कुछ कठोर उत्तर देना चाहती है, पर कुछ समझ-बूझकर उसकी ओरसे मुँह फेर लेती है और कुछ ठहरकर अन्दर चली जाती है।]

रमेश—(जाती हुई कुसुमकी ओर बढ़कर) जरा एक मिनट....!

अशोक—(रमेशकी ओर बढ़कर दरवाजेकी तरफ उँगली दिखाता हुआ) बस इसी वक्त बाहर निकल जाओ।

[रमेश क्रोधभरी दृष्टिसे अशोककी ओर देखता है और इस प्रकार सिर हिलाता है जिससे सूचित होता है कि वह कह रहा है कि अच्छा किसी और मौकेपर मैं तुमसे समझ लूँगा। और तब वह बाहरवाले दरवाजेकी ओर जाता है।]

अशोक—नानाजी, मुझे इस बातका बहुत दुःख है कि मुझे आपके

सामने इस तरहकी बातें करनी पड़ीं। यों तो कुसुमका स्वभाव बहुत अच्छा है और वह बहुत सुशील तथा आज्ञाकारिणी है, पर कभी कभी वह बहुत बहक जाती है और मुझे उसे डाँटना पड़ता है और अपना उग्र रूप दिखलाना पड़ता है।

मोहनलाल—मैं तो तुम लोगोंका व्यवहार देखकर पहले ही समझ गया था कि तुम लोगोंका प्रेम दृढ़ और स्थायी नहीं है।

अशोक—जी नहीं, यह बात तो नहीं है। वह मुझसे प्रेम तो बहुत अधिक करती है। पर घर-गृहस्थीमें कभी कभी इस तरहकी बातें भी हो ही जाती हैं। खैर, अब इन सब बातोंको जाने दीजिए। हाँ, वह कागज निकालिए। जरा देखूँ कि उनमें क्या है।

[मोहनलाल कागज निकालकर अशोकके हाथमें देते हैं।
दोनों मिलकर दानपत्र पढ़ते हैं।]

परदा गिरता है।



तीसरा दृश्य



[स्थान–वही कमरा। दो घण्टे बादका दृश्य। कमरेकी और सब रोशनियाँ बुझी हैं, केवल एक रोशनी जल रही है। उसी रोशनीके पास एक आराम-कुरसीपर रमेश लेटा हुआ है। उसके एक हाथमें सिगरेट है और दूसरे हाथमें वह अखबार लिये पढ़ रहा है। बगलवाली खिड़कीपर कमला आती है और खटखटाती है। रमेश चारों ओर देखकर उस खिड़कीके पास पहुँचता है।]

रमेश—कौन कमला? आओ, चली आओ।

कमला—मैं बहुत देरसे इसी इन्तजारमें थी कि सब लोग सो जायँ तो आऊँ। सब लोग सो गये हैं न?

रमेश—और लोग तो सो गये हैं, पर कुसुम अन्दर दुलारीसे बातें कर रही है। बैठ जाओ।

[कमला उसी आराम-कुरसीपर बैठ जाती है जिसपर पहले रमेश लेटा था। रमेश दूसरी कुरसी खींचकर उसके पास आ बैठता है।]

रमेश—कहो क्या बात है?

कमला—अभी इलाहाबादसे मदनने टेलीफोन किया था। वह होटलका जो ठेका लेने गये थे, वह ठेका नहीं मिला। कलकत्तेकी किसी कंपनीको वह ठेका मिल गया है।

रमेश—यह तो बड़े दुःखकी बात है।



कमला—हाँ, दुःखकी बात तो अवश्य है। उनको पूरी आशा थी कि यह ठेका हमें अवश्य मिलेगा। वह इसी समय मोटरपर घर आ रहे हैं। यद्यपि वहाँ भी इस समय इसी तरह जोरोंका पानी बरस रहा है, पर फिर भी जैसे तैसे वे घर आ रहे हैं। पहले तो उनकी मोटर ही खराब हो गई थी, पर वह तो जैसे तैसे ठीक हो गई। पर चिन्ताकी बात यह है कि वहाँ उनकी तबीयत खराब हो गई है। उनका वही पुराना अजीर्ण रोग फिर उमड़ आया है। इधर उन्होंने कई कामोंमें हाथ डाला था, पर एक भी काम ठीक नहीं उतरा; इससे उन्हें बहुत चिन्ता हुई है और शायद उसी चिन्ताके कारण उनकी तबीयत भी खराब हो गई है। उनका मिजाज ही कुछ ऐसा है कि जरासी बातकी भी उनके दिलपर बहुत चोट बैठती है। अब यहाँ आनेपर उनका चित्त किसी प्रकार ठिकाने और शान्त होना चाहिए।

रमेश—हाँ, यह तो जरूरी बात है।

कमला—एक और कठिनताकी बात यह है कि इस समय हमारा सारा घर बिलकुल उजड़ा हुआ मालूम हो रहा है। हमारे यहाँका सब सामान तो यहाँ आ गया है और हमारा घर भायँ भायँ कर रहा है। यदि मदन आकर घरकी यह अवस्था देखेंगे तो उनका मिजाज और भी बिगड़ जायगा। जहाँ घरकी कोई चीज जरा भी इधर-उधर होती है, तहाँ वे चिड़चिड़ा उठते हैं। और इस समय तो वहाँकी सभी चीजें गायब हैं और तबीयत उनकी खराब है, इसलिए उन्हें सँभालना मुश्किल हो जायगा।

रमेश—बस कमला, अब तुम्हें कुछ अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हारा मतलब बहुत अच्छी तरह समझ गया। यह

तुम्हारी बहुत बड़ी कृपा थी जो तुमने अपने यहाँके परदे और सारा सामान कुसुमको दिया। और हम लोग कोई ऐसी बात नहीं करना चाहते जिससे तुम्हें या भाई मदनको किसी प्रकारका कष्ट पहुँचे या कोई बखेड़ा पैदा हो। हाँ, अब तुम यह बतलाओ कि मदन किस समय तक यहाँ पहुँचेंगे?

कमला—वे दस बजे इलाहाबादसे चले हैं और मैं समझती हूँ कि वे अधिकसे अधिक एक या डेढ़ बजे रात तक यहाँ आ पहुँचेंगे।

रमेश—और इस समय कितने बजे होंगे?

कमला—(हँसकर) तुम्हारी घड़ीमें तो अभी पौने सात ही बजे हैं। पर मैं समझती हूँ कि ग्यारह बज चुके हैं।

रमेश—अच्छा तो फिर तुम निश्चिन्त रहो। बारह बजे तक यह सारा सामान तुम्हारे घर पहुँच जायगा।

कमला—अच्छी बात है। पर यह तो बतलाओ कि नानाजी देखेंगे तो क्या कहेंगे?

रमेश—इसकी तुम जरा भी चिन्ता न करो। कुसुम बहुत होशियार है। वह कोई न कोई बात बनाकर नानाजीको समझा-बुझा लेगी।

कमला—तो फिर अच्छी बात है। अब एक एक करके सब चीजें यहाँसे समेटनी चाहिएँ।

[दोनों उठकर खड़े हो जाते हैं और सजावटके सब सामान एक एक करके उठाते और टेबुलपर जमा करते जाते हैं।]

कमला—रोशनी कम है। एकाध बत्ती और जला दी जाती तो अच्छा होता।

रमेश—नहीं, ऐसा मत करो। हम लोगोंको सब काम बिलकुल चुपचाप करना चाहिए। शायद तुम्हें यह नहीं मालूम है

कि मैं नौकरीसे छुड़ा दिया गया हूँ और सब लोग समझते हैं कि मैं यहाँसे चला गया हूँ।

कमला—तुम्हें नौकरीसे किसने छुड़ाया?

रमेश—मकानके उन्हीं नये मालिक साहबने जिन्हें मँगनी माँगकर कुसुमने अपना मियाँ बनाया है। क्यों कमला, तुम्हें मालूम है कि वह आदमी कौन है?

कमला—वह रिश्तेमें मेरा भाई होता है। उसका नाम अशोक है। क्यों, उसने कोई अनुचित व्यवहार तो नहीं किया?

रमेश—और तो जो कुछ किया, वह ठीक ही किया; पर कुसुमके साथ वह बहुत ज्यादा बेतकल्लुफीका बरताव करता था। नानाजीके सामने मैं स्वयं जिस तरहकी बातें कुसुमके साथ नहीं कर सकता था उस तरहकी बातें उसने कीं।

कमला—बात यह है कि अभी उसका विवाह नहीं हुआ है, इस लिए वह नहीं जानता कि और लोगोंके सामने पतिको अपनी स्त्रीके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। पर यह तो बतलाओ कि उसने तुम्हें छुड़ाया क्यों? मेरे जानेके बाद कोई और बात हुई थी? जब तक मैं यहाँ थी, तब तक तो वह सब बातें बहुत अच्छी तरह करता था।

रमेश—हाँ, तुम्हारे सामने तो कोई विशेष बात नहीं हुई थी। पर भोजनके बाद ही न जाने उसे क्या हो गया। ऐसा मालूम होता था कि वह कुछ नशा खा गया हो।

कमला—आखिर बात क्या हुई?

रमेश—उसने मुझे बुलाकर कहा कि तुम बड़े भारी चोर और

बदमाश हो। इस लिए यहाँसे निकल जाओ। इसपर कुसुमने उसे समझाना चाहा, पर वह उसपर भी बिगड़ बैठा और बोला कि तुम चुपचाप जाकर सोओ।

कमला—तब कुसुमने क्या कहा?

रमेश—वह अधिक क्या करती! एक बार क्रोधभरी दृष्टिसे उसकी ओर देखकर वहाँसे चली गई।

कमला—फिर तुमने क्या किया?

रमेश—मैं छाता लेकर बाहर चला गया और वहीं बहुत देर तक पानीमें खड़ा भींगता रहा और खूब हँसता रहा।

कमला—वाह, न हुई मैं वहाँ। नहीं तो मैं भी तुम्हें देखकर खूब हँसती; क्योंकि आज तक मैंने कभी तुम्हें हँसते हुए नहीं देखा।

रमेश—हाँ, तुम ठीक कहती हो। मुझे जल्दी हँसी नहीं आती। पर जिस समय उसने कुसुमसे कहा था कि तुम चुपचाप जाकर अपने बिस्तरपर सो रहो, उस समयकी कुसुमकी आकृति यदि कोई गधा भी देखता तो शायद वह भी जोरोंसे हँस पड़ता।

कमला—फिर जब तुम लौटकर घरमें आये, तब तुम्हारे आनेका किसीको पता नहीं चला?

रमेश—नहीं, कुसुमके सिवा और कोई नहीं जानता कि मैं कब और कैसे लौटकर घर आया। उसीने दरवाजा खोलकर मुझे अन्दर बुला लिया था। खैर, तुमने अपनी सब चीजें इकट्ठी कर लीं?

कमला—सब खास खास और जरूरी चीजें तो हो गई हैं। कुछ छोटी मोटी चीजें रह गई हैं, पर उनके बिना कोई हर्ज न होगा। बस ये परदे उतार लूँ। ये सब सामान तो मैं ले चलूँगी। तुम जरा ग्रामोफोन पहुँचा देना।

[रमेश एक कुरसी खींच लाता है। कमला उसपर चढ़कर परदे उतारती है। खिड़कीके पास बाहरकी ओर भोला पाँड़ेकी शकल दिखाई पड़ती है। पर ज्यों ही कमला कुरसीसे नीचे उतरती है, त्यों ही भोला पाँड़े वहाँसे चला जाता है। कमला सब सामान एक गठरीमें बाँध लेती है।]

कमला—अच्छा ये सब सामान तो मैं ले चलती हूँ। तुम जरा यह ग्रामोफोन और चाँदीके बरतनोंकी यह टोकरी पहुँचा दो।

रमेश—अच्छी बात है। तुम लेकर आगे बढ़ो। मैं भी अभी आता हूँ।

[कमला गठरी लेकर चली जाती है। रमेश चाँदीके बरतनोंकी दौरी उठाकर खिड़कीके पास रख आता है। इतनेमें अशोक वहाँ आ पहुँचता है। वह कमला और रमेशकी अन्तिम बातें तो सुन लेता है, पर कमलाको देख नहीं पाता। फिर एक बार खिड़कीपर भोला पाँड़े दिखाई पड़ता है, पर रमेशको अपनी ओर आता हुआ देखकर गायब हो जाता है। रमेश ग्रामोफोन उठाकर चलना चाहता है। हाथमें पिस्तोल लिये हुए अशोक सामने आ खड़ा होता है।]

अशोक—रखो जहाँका तहाँ।

रमेश—(ग्रामोफोन रखकर) ठहर जाओ। गोली मत चलाना।

अशोक—(बिजलीकी बत्तियाँ जलाकर) क्यों, कैसे ठीक वक्तपर तुम्हें गिरफ्तार किया! बचा सब सामान उठाकर जा रहे थे।

[रमेश और अशोक एक दूसरेकी ओर देखते हैं। इतनेमें पीछेवाली खिड़कीसे भोला पाँड़े आकर चुपचाप चाँदीके बरतनोंकी टोकरी और ग्रामोफोन उठाकर निकल जाता है।]

अशोक—क्यों, सारा सामान उठाकर उस सालीके हाथमें देकर गायब करा दिया न? पर अब तुम्हारी यह चालाकी नहीं चलेगी। (खिड़कीकी तरफ देखकर) अरे अभी अभी यहाँ बरतनोंकी टोकरी और ग्रामोफोन रखा था। वह भी इतनी देरमें गायब हो गया। वहीं

साली उठा ले गई है। खैर; जाती कहाँ है। जब तुम काबूमें आ गये तब उसे गिरफ्तार करना कौन बड़ी बात है।

रमेश—देखो भाई, तुम भूल कर रहे हो। मैं यहाँसे कोई चीज़ चुरा नहीं रहा था। यदि तुम मेरी स्त्रीको बुला दो, तो वह सब बातें तुम्हें बतला देगी।

अशोक—हाँ हाँ, मैं तुम्हारा मतलब खूब समझता हूँ। तुम चाहते हो कि इसी तरह मुझे चकमा देकर अपनी स्त्रीसे बातें करनेके बहाने तुम यहाँसे निकल जाओ और मैं चुपचाप खड़ा तमाशा देखता रहूँ। वह साली तो सब माल लेकर निकल ही गई। अब तुम भी भागना चाहते हो।

रमेश—जो सामान लेकर गई है, वह मेरी स्त्री नहीं है। मेरी स्त्री तो कुसुम है जो घरके अन्दर है।

अशोक—जबान सँभालकर बातें करो। कुसुम मेरी स्त्री है। वह आकर क्या करेगी? यही न कि फिर तुम्हें बचाना चाहेगी? अब तो मैं उसका और तुम्हारा सामना ही नहीं होने दूँगा। हाँ, अगर तुम अपनी सफाईका और कोई सबूत दे सकते हो तो अलबत्ता दो।

रमेश—तुम तो मुझपर पिस्तोल ताने हुए हो। पहले शान्त होकर मेरी बातें सुन लो।

अशोक—(पिस्तोल जेबमें रखकर) खैर, और बातें पीछे होंगी। पहले वह तीस रुपये तो निकालो जो अभी तुमने मुझसे लिये हैं। देखो, पिस्तोल तो मैंने जेबमें रख ली है। पर याद रखना, अगर तुमने जरा भी इधर उधर किया तो इसी जगह तुम्हारी लाश तड़पती हुई दिखाई पड़ेगी।

[रमेश जेबसे तीनों नोट निकालकर अशोकके सामने टेबुलपर रखता है।]



रमेश—अब यदि तुम शान्त होकर मेरी सब बातें सुनो तो सारा मामला तुम्हारी समझमें आ जायगा।

अशोक—कहो, मैं सुनता हूँ।

रमेश—अगर तुम कहो तो मैं बैठ जाऊँ।

अशोक—अच्छी बात है, बैठ जाओ।

रमेश—(बैठकर) असल बात यह है कि यह सारा मज़ाक़ था। और उस एक ज़रासे मज़ाक़से इतनी खराबियाँ और बखेड़े पैदा हुए हैं।

अशोक—लेकिन मैं देखता हूँ कि इस मज़ाक़में तुम्हारी बड़ी खराबी होना चाहती है।

रमेश—सबसे पहली बात तो यह है कि मैं रसोइया नहीं हूँ।

अशोक—हाँ, यह तो मैं भी जानता हूँ कि तुम रसोइये नहीं हो, बल्कि पुराने सजायाफ्ता चोर और बदमाश हो।

रमेश—नहीं, यह बात बिलकुल नहीं है। न मैं चोर हूँ, न बदमाश और न सजायाफ्ता। लेकिन अगर तुम इसी तरह बीच बीचमें मुझे टोकते रहोगे तो मैं अपनी बात पूरी न कर सकूँगा। इसलिए कृपाकर जरा शान्त होकर मेरी सब बातें सुन लो।

[कनटोप पहने और दुलाई ओढ़े हुए मोहनलालका प्रवेश]

मोहनलाल—हूँ। मैं तो पहले ही समझता था कि यह बदमाश अभी तक यहाँसे गया नहीं होगा और घरमें ही कहीं इधर-उधर छिपा होगा। इसी खुटकेमें तो मुझे अब तक नींद नहीं आ रही थी। (चारों ओर देखकर) और यहाँका सब सामान और परदे वगैरह क्या हुए?



अशोक—सब इसीने गायब करा दिये। मैंने तो बिलकुल आखिरी वक्तमें पहुँचकर इसे गिरफ्तार किया है।

मोहनलाल—बाप रे बाप! इस तरहकी चोरी तो मैंने आज तक अपनी जिन्दगीमें कभी देखी ही नहीं। अब आखिर यह कहता क्या है?

अशोक—यही कह रहा है कि आप शान्त होकर सुनें तो मैं अपना सारा हाल सुनाऊँ। आप भी जरा बैठ जाइए और सुन लीजिए। (रमेशसे) हाँ कहो, तुम क्या कहना चाहते हो?

रमेश—(नानाजीके सामने सब बातें कहनेमें संकोच होनेके कारण) नहीं, अब मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता।

अशोक—(हँसकर) यह तो मैं पहले ही समझता था कि जो आदमी चोरी करता हुआ पकड़ा गया हो, वह अपनी सफाई क्या दे सकता है! (नानाजीसे) अब टेलिफोनसे थानेमें खबर कर देनी चाहिए।

रमेश—(चकित होकर) हैं! आप थानेमें खबर क्यों भेजते हैं?

अशोक—तुम्हारा इन्तजाम करनेके लिए। (हाथमें टेलिफोन लेकर) हलो। कौन? थानेदार साहब? आपने शामको जिस भोला पाँड़ेके बारेमें कहा था, उसे मैंने अपने घरमें चोरी करते हुए पकड़ लिया है। आप मेहरबानी करके यहाँ आकर उसे गिरफ्तार कर लें। (ठहरकर) बस, ठीक है। पता तो आप जानते ही हैं। जरा जल्दी तकलीफ कीजिए। (टेलिफोन रखकर) बस, अब पुलिस आ रही है।

रमेश—(अशोकके पास पहुँचकर धीरेसे कानमें) अगर तुम मेरे साथ जरासा एकान्तमें चले चलो और मेरी बातें सुन लो तो बहुत अच्छा हो।



अशोक—तुम घबराओ मत। मैं अभी तुम्हारे एकान्तका इन्तजाम किये देता हूँ। ऐसा एकान्त मिलेगा कि जनमभर याद करोगे।

[कुसुमका प्रवेश]

कुसुम—(चारों ओर देखती हुई) क्यों, क्या बात है? यहाँका सब सामान क्या हुआ?

अशोक—सब चीजें बहुत ठिकानेसे हैं। जरासा चुपचाप रहो। अभी सब हाल खुल जाता है।

मोहनलाल—तुम सामानकी फिक्र मत करो। हाँ, आगेसे बड़ोंकी बात माना करो। तुम्हारा सब सामान (रमेशकी ओर संकेत करके) इसी बदमाशने यहाँसे गायब कर दिया है।

कुसुम—नानाजी, फिर आप वही बात कहने लगे! मैं जानती हूँ कि यह चोर या बदमाश नहीं है।

मोहनलाल—कुसुम, तुम्हें परमात्माने कुछ भी बुद्धि नहीं दी। अपनी आँखोंसे देख रही हो कि घरका सारा सामान गायब है; और फिर भी कहती हो कि यह चोर या बदमाश नहीं है। यही सब सामान यहाँसे हटा रहा था। रमेशने ही तो इसे गिरफ्तार किया है।

कुसुम—अगर इसने सामान हटाया है तो वह कहीं जायगा नहीं। (रमेशसे) हाँ, यहाँका सब सामान क्या हुआ?

रमेश—मैंने कमलाको दे दिया है।

मोहनलाल—भला तुम्हारी चीजें कमलाको देनेवाला यह कौन होता है?

रमेश—उसने मुझसे माँगा था, मैंने उसे दे दिया।



मोहनलाल—झूठा कहींका। कमला आधी रातको इससे सामान माँगने आई थी और इसने कमलाको सामान दे दिया। उसे इस वक्त सामानकी क्या जरूरत थी?

रमेश—वह अपने पतिको दिखलाना चाहती थी।

मोहनलाल—देखा? कैसी कैसी बातें गढ़ गढ़कर सुना रहा है। यह घरसे निकाल दिया जाता है। दरवाजा तोड़कर अन्दर आ घुसता है। घर भरका सब सामान चुराकर इकट्ठा करता है और कहता है कि मैंने पड़ोसमें रहनेवालीको दे दिया। और पूछो—क्यों दे दिया? तो कहता है कि वह अपने पतिको दिखलाना चाहती थी। चोरी, बदमाशी और झूठकी हद हो गई। बस कुसुम ही तेरी ऐसी बातोंका विश्वास करेगी। मुझसे तो इस तरहकी बातें सुनी भी नहीं जातीं।

कुसुम—(दृढ़तापूर्वक) मैं तो जरूर इसकी बातोंपर विश्वास करती हूँ।

मोहनलाल—बस तो फिर हो चुका।

अशोक—लेकिन यह कौन बड़ी बात है। इसका निपटारा तो कमलासे पूछकर अभी किया जा सकता है। कमलाके टेलिफोनका क्या नंबर है?

कुसुम—७२२

अशोक—(टेलिफोन उठाकर) सात दो दो। (कुछ ठहरकर) कौन, कमला? (ठहरकर) हाँ, मैं हूँ रमेश। हमारे यहाँका चाँदीका सब सामान और ग्रामोफोन गायब है और हमारा रसोइया कहता है कि उसने सब सामान तुम्हें दिया है। क्या यह बात ठीक है? (टेलिफोन रखकर) वह कहती है कि मुझे यह सामान नहीं मिला। थोड़ी देरमें वह स्वयं आकर सब हाल बतलाती है।

रमेश—(भयभीत होकर कुसुमकी ओर देखता हुआ) मैंने तो सब सामान बाँधकर यहीं खिड़कीके पास रख दिया था और ग्रामोफोन भी यहीं रखा था । पर यहाँ तो वे चीजें दिखाई नहीं देतीं। जरूर कमला उठा ले गई होगी । और कोई तो यहाँ था ही नहीं ।

अशोक—और कोई यहाँ क्यों नहीं था ? तुम्हारी स्त्री जो थी ।

कुसुम—इसकी स्त्री ?

अशोक—हाँ हाँ, इसकी स्त्री यहाँ आई थी। उसीको इसने सारा सामान दिया है ।

कुसुम—इसकी स्त्री कहाँसे आई ?

अशोक—एक औरत यहाँ आई थी । अब चाहे वह इसकी स्त्री हो चाहे आशना। दोनोंने मिलकर चोरी की है। वही अभी इस कमरेमें आई थी ।

कुसुम—क्या तुमने उसे देखा था ?

अशोक—नहीं, मैं उसे देख तो नहीं सका, पर यह उससे बातें कर रहा था; और मैंने उसकी आवाज़ सुनी थी। इन लोगोंने सब रोशनी बुझा दी थी, अँधेरेमें सब सामान हटा रहे थे और बातें कर रहे थे ।

कुसुम—(बहुत ही दुःखी और चिन्तित होकर कुरसीपर बैठती हुई) कैसा गोरखधन्धा है ! कुछ समझमें नहीं आता ।

[बाहरसे दरवाजा खटखटानेकी आवाज़ आती है ।]

अशोक—(प्रसन्नतापूर्वक सिर हिलाकर) नानाजी, जरा आप दरवाजा खोल दें ।

[मोहनलाल दरवाजा खोलनेके लिए बाहरकी तरफ जाते हैं। कुसुम समझ लेती है कि मामला बहुत बेढब है, इसलिए वह उठकर खड़ी हो जाती है और रमेश तथा अशोककी तरफ बहुत ध्यानसे देखती है ।]

कुसुम—(सशंकित और भयभीत होकर) क्यों, बाहर कौन आया है ?

अशोक—थानेदार और पुलिसके सिपाही।

कुसुम—तो क्या तुम लोग मिसिरजीको जेल भेजना चाहते हो ?

अशोक—जरूर !

कुसुम—नहीं नहीं, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। (रमेशके पास पहुँचकर धीरेसे) अब तो मैं समझती हूँ कि सब बातें खोलकर कह देनी चाहिएँ।

रमेश—नहीं, कुछ कहनेकी जरूरत नहीं। चुपचाप रहो।

[मोहनलाल, थानेदार और दो सिपाहियोंका प्रवेश।]

मोहनलाल—(उँगलीसे इस प्रकार संकेत करके जिससे स्पष्ट नहीं होता कि कौन अभियुक्त है) देखिए, यही वह बदमाश है।

थानेदार—आपको बतलानेकी जरूरत नहीं। मैं इसको खूब पहचानता हूँ। इसकी तो फोटो तक हमारे यहाँ मौजूद है। यह पुराना चोर और नामी बदमाश है। भला, मुझसे छिपकर यह कहाँ जा सकता है !

[थानेदार आगे बढ़कर अशोकका हाथ पकड़ लेता है। थानेदारकी इस भूलका कारण यह होता है कि रमेश तो कुरसीपर बैठा हुआ है और अशोक खाली एक धोती पहने हुए सामने खड़ा है। कुसुम भी रमेशके कन्धेपर हाथ रखे हुए खड़ी है। थानेदार अपने पुलिसवाले हथकंडेके अनुसार ही कह चलता है कि मैं इस बदमाशको खूब पहचानता हूँ।]

अशोक—(चौंककर) हैं ! यह क्या ?

थानेदार—अजी कुछ नहीं दोस्त, मैं तुम्हें अपनी गाड़ीपर बैठाकर हवा खिलाने ले चलूँगा।

अशोक—(थानेदारका हाथ झटककर) मैं भोला पाँडे नहीं हूँ।

थानेदार—(फिरसे अशोकके हाथ पकड़कर) नहीं नहीं, मैं तुम्हें खूब पहचानता हूँ। तुम मेरे साथ आओ तो सही।

मोहनलाल—दारोगाजी, आप गलती कर रहे हैं। यह भोला पाँडे नहीं हैं, बल्कि यह तो इस मकानके मालिक रमेशचन्द्र वर्म्मा हैं। (रमेशकी ओर संकेत करके) असल अपराधी तो यह है।

थानेदार—ओ हो! माफ कीजिएगा। मुझसे गलती हो गई। मुश्किल तो यह है कि आजकलके बदमाश भी बढ़िया बढ़िया कपड़े पहनकर बिलकुल जैण्टिलमैन और बाबू बने रहते हैं। और भले आदमियोंका पहनावा बिलकुल बदमाशोंकासा........। बाबू साहब, आप कुछ खयाल न कीजिएगा।

अशोक—जी नहीं, कोई बात नहीं है। (रमेशकी ओर संकेत करके) देखिए, चोर यह है।

थानेदार—(रमेशके कन्धेपर हाथ रखकर) चलो जी उठो।

कुसुम—नहीं, यह बिलकुल बेकसूर है। इसे आप गिरिफ्तार न करें।

थानेदार—तुम कौन हो?

कुसुम—मेरा नाम कुसुम है। इस मकानकी मालिक मैं हूँ।

अशोक—दारोगाजी, इस समय मेरी स्त्री कुछ........।

कुसुम—(बिगड़कर अशोकसे) देखोजी, अब इस तरहकी बातें मत कहना!

अशोक—आखिर तो तुम मेरी स्त्री ही ठहरीं। फिर इस तरह कहनेमें हर्ज ही क्या है?



कुसुम—मान लो कि मैं तुम्हारी स्त्री ही हूँ। पर इसका यह मतलब नहीं है कि तुम हर वक्त और हर आदमीके सामने इसका ढिंढोरा पीटा करो।

मोहनलाल—देखो बेटी, अब तुम और ज्यादा बेवकूफी न करो। इस कम्बख्त रसोइयेका ख्याल छोड़ो। इसीने तुम्हारे घरका कीमती सामान गायब करा दिया है।

कुसुम—आखिर सामान तो मेरा ही था न! मैं अपने सामानका इन्तज़ाम कर लूँगी। इसमें किसीको दखल देनेकी ज़रूरत नहीं।

थानेदार—जी नहीं, आप गलती कर रही हैं। चोरी करना कानूनन् जुर्म है। अगर आपका सामान चोरी गया है तो आप चोरको माफ कर सकती हैं। मगर कानून तो चोरको माफ नहीं कर सकता। भला, मैं इसे पाकर कैसे छोड़ सकता हूँ? क्या किया जाय! बेचारी औरतें रहमदिल हुआ करती हैं। लेकिन यह पुराना बदमाश है। इसपर जरा भी रहम नहीं करना चाहिए। इसकी अब तककी सारी ज़िन्दगी जेलमें बीती है और यह जेलके बाहर किसी तरह रह नहीं सकता। आज यहाँसे छूटेगा, कल दूसरी जगह फिर यही काम करेगा। इसे जेलमें जितना आराम मिलता है, उतना और किसी जगह मिल ही नहीं सकता।

कुसुम—आप गलती करते हैं। ये मेरे पति हैं। ये न कभी जेल गये हैं, न इन्होंने कभी चोरी की है और न ये बदमाश ही हैं।

मोहनलाल—हैं कुसुम! तुम्हें क्या हो गया है?

[अशोक बहुत चकित होता है और रमेश बहुत खिन्न और लज्जित होता है। थानेदार सकपका जाता है और उसकी समझमें नहीं आता कि क्या मामला है।]

थानेदार—(कुसुमसे) पर थोड़ी ही देर पहले तो आप (अशोककी ओर संकेत करके) इन्हें अपना पति बतला रही थीं।

कुसुम—हाँ, पर वह बात मैंने झूठ कही थी। अब मैं आप लोगोंको सब असल हाल बतलाना चाहती हूँ। (अशोककी ओर संकेत करके) ये मेरे वास्तविक पति नहीं हैं। ये तो मँगनीके आये हुए हैं। मैंने थोड़ी देरके लिए सिर्फ मज़ाक किया था।

थानेदार—मैं आपको यह बतला देना चाहता हूँ कि आप जो कुछ कहें, वह बहुत समझ-बूझकर कहें। अब मज़ाकका वक्त नहीं है।

मोहनलाल—कुसुम, तू पागल तो नहीं हो गई है ? (थानेदारसे) दारोगाजी, आप इस पागल लड़कीकी बातोंका कुछ भी खयाल न करें। इसका दिमाग़ ठिकाने नहीं है। जब यह जरा-सी बच्ची थी, तब भी अक्सर इसी तरहकी बहकी बहकी बातें किया करती थी। मैं समझता था कि अब इसका वह सिड़ीपन दूर हो गया होगा। लेकिन नहीं, देखता हूँ कि वह दिनपर दिन बराबर बढ़ता ही जाता है। इसकी कुछ आदत ऐसी है कि हर एक बातको नाटक और सिनेमाकी कहानी बना देती है। यह तो मेरे सामनेकी लड़की ठहरी, मैं इसकी आदत जानता हूँ।

थानेदार—जी हाँ, यह तो आपका कहना ठीक है, पर अपने मियाँको तो यही आपसे ज्यादा जानती है। इन दोनोंमेंसे एक तो इनके मियाँ हैं और दूसरा भोला पाँडे है। जो इनका मियाँ हो वह यहाँ रह जाय और जो भोला पाँडे हो, वह उठकर मेरे साथ चले। आखिर किसी एकको तो मैं अपने साथ ले ही जाऊँगा।



कुसुम—आप इन्हीं लोगोंसे पूछ देखिए।

थानेदार—जरूर पूछूँगा। (अशोकसे) क्यों साहब, आप बतलाइए कि आप इनके मियाँ हैं?

अशोक—(बहुत कुछ असमंजसमें पड़कर यह सोचता हुआ कि यदि मैं झूठ नहीं बोलता तो मुझे जेल जाना पड़ता है) हाँ।

कुसुम—नहीं, बिल्कुल झूठ बात है। मैं आपको बतला देना चाहती हूँ........।

थानेदार—(रमेशसे) अब बतलाइए जनाब, आप क्या कहते हैं?

रमेश—मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता। हाँ, यह जरूर है कि चाँदीके बरतन मैंने यहाँसे हटाये थे। इससे ज़्यादा मैं इस मामलेको बढ़ाना नहीं चाहता।

कुसुम—और मैं यह भी बतला देना चाहती हूँ कि इन्होंने वे बरतन क्यों यहाँसे हटाये थे। इन्होंने................।

रमेश—(बात काटकर) बस, अब तुम चुप रहो। मुझे जो कुछ बतलाना होगा, वह मैं आप ही बतला दूँगा।

कुसुम—(अशोकसे) यह सब आपकी ही गलती है। आरम्भसे अब तक सारा अनर्थ आपका ही किया हुआ है। अब तो आपको अपने घरमें बुलाकर मैं पछताती हूँ।

[दुलारी आकर अशोकके पीछे खड़ी हो जाती है।]

अशोक—(कुसुमको शान्त करनेके उद्देश्यसे) प्यारी, तुम जरा मेरी बात तो सुनो।

दुलारी—नानाजी, यह क्या माजरा है? यहाँ इतना शोर क्यों हो रहा है? मेरी तबीयत ख़राब है और मुझे नींद नहीं आ रही है।

[दुलारीकी आवाज़ सुनकर अशोक चौंक पड़ता है और पीछेकी ओर? यह दुलारीकी ओर देखता है। दुलारीको देखते ही उसका चेहरा उतर जाता है।) दुलारी भी अशोकको देखकर चौंक पड़ती है।]

दुलारी—हैं अशोक ! तुम यहाँ कहाँ ?

अशोक—और तुम यहाँ कहाँसे आ पहुँचीं ? (प्रेमपूर्वक उसकी ओर बढ़ता हुआ) यह तो बड़ी अद्भुत बात है।

दुलारी—(झिझककर पीछे हटती हुई) बस बस, दूर रहो। मुझसे बातें मत करो। अभी तो तुम कुसुम बहनको प्यारी प्यारी कह रहे थे।

अशोक—उसका मतलब कुछ और ही था जो मैं तुम्हें बतला दूँगा। पर वास्तवमें ये मेरी स्त्री नहीं हैं। यह तो एक मज़ाक था।

मोहनलाल—दुलारी, (अशोककी ओर संकेत करके) यह कौन है ?

दुलारी—यही तो वह डा० अशोक हैं जिनके लिए हम लोग कलकत्ते जा रहे थे।

मोहनलाल—तो क्या तुम भी पागल हो गई हो ? अरे यह तो कुसुमके पति रमेशचन्द्र वर्म्मा हैं। इनका तो पहले ही ब्याह हो चुका है। अब इनके साथ तुम्हारा ब्याह कैसे हो सकता है ?

दुलारी—(दोनों हाथोंसे अपना मुँह छिपाकर) हैं ! मैं यह क्या सुन रही हूँ !

अशोक—आप सब लोग चुप रहें तो मैं सब बातें समझा दूँ। यह सब मज़ाक है। मेरा अभी तक किसीके साथ ब्याह नहीं हुआ है।

दुलारी—नहीं, मैंने खूब अच्छी तरह समझ लिया है कि तुम्हारा ब्याह हो चुका है। अभी तो तुम झगड़ रहे थे। अगर तुमने ब्याह नहीं किया था, तो फिर तुम्हें झगड़नेकी क्या आवश्यकता थी ?

कुसुम—इसमें झगड़े या बहसकी कौन-सी बात है ? तुम्हारी कुसुम तो यहाँ मौजूद ही है। तुम इन्हींसे सब बातें समझ लो। (कुसुमसे) प्यारी....अरे नहीं भूल गया, कुसुम, अब तुम्हीं इस झगड़ेका फैसला कर दो। क्या हम लोगोंका ब्याह हुआ है ?

कुसुम—हाँ हुआ है।

अशोक—हैं ! यह तुमने कैसे कहा ?

कुसुम—मैं कहूँ न तो और क्या करूँ ! जब मैंने कहा कि मैं सब बातें समझा देती हूँ, तब तो तुमने मुझे बोलने नहीं दिया। अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।

अशोक—(घबराकर) नहीं दुलारी, मैं तुमसे सच कहता हूँ। यह सब मज़ाकके सिवा और कुछ भी नहीं है। तुम विश्वास रखो, मैं तो आजसे पहले इन्हें जानता भी नहीं था। मैं तो मज़ाकके लिए थोड़ी देरके वास्ते इनका मँगनीका मियाँ बन गया था।

कुसुम—दुलारी, तुम इनकी बातोंमें न आना। इनका तो दिमाग़ खराब हो गया है। [प्रस्थान।]

मोहनलाल—अब सब बातें मेरी समझमें आ गईं। (अशोककी ओर संकेत करके) यह चाहे जैसे हो, मेरी सारी सम्पत्तिपर अधिकार करना चाहता है। चाहे इसके लिए इसे बारी बारीसे घर-भरके साथ ब्याह क्यों न करना पड़े !

अशोक—जी नहीं, माफ़ कीजिए। मुझे आपकी सम्पत्तिकी जरा भी परवाह नहीं है। मैं आपकी सम्पत्तिको क्या समझता हूँ !

मोहनलाल—वाह, अभी तो तुम घण्टे भर तक मेरे साथ सिर-पच्ची कर रहे थे और कहते थे कि मैं दुलारीको एक पैसा भी न दूँ। तुम चाहते थे कि सारी सम्पत्ति तुम्हारे लड़केको ही मिले।

दुलारी—लड़का ! तो क्या इन्हें लड़का भी हो चुका है? यह तो मुझे बड़े धोखेबाज मालूम होते हैं। (उँगलीसे अँगूठी उतारकर) यह लीजिए आप अपनी अँगूठी । अब मैं आपसे बात भी नहीं करना चाहती। (मुँह फेर लेती है।)

अशोक—प्यारी, तुम फजूल नाराज़ होती हो। पहले मेरी बात तो सुन लो।

दुलारी—बस बस रहने दो। मैं तुम्हारी सब बातें सुन चुकी। (क्रुद्ध होकर चली जाती है।)

अशोक—अरे बात तो सुन लो। (दुलारीको रोकना चाहता है, पर वह चली जाती है।) नानाजी, अब आप ही जरा मेरी बात सुन लें।

मोहनलाल—खबरदार, अब मुझे नाना-बाना मत कहना। मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता। (प्रस्थान।)

(अशोक कुछ देरतक चकित होकर खड़ा रहता है और फिर जल्दीसे मोहनलालके पीछे अन्दर चला जाता है।)

रमेश—(मुस्कराकर) सभी लोग अपनी अपनी बात बतलाना चाहते हैं। पर मुश्किल तो यह है कि यहाँ कोई किसीकी सुनता ही नहीं।

थानेदार—देखो जी भोला पाँड़े, अभी मुझे बहुत से काम हैं। मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि मैं रातभर तुम्हारे फेरमें यहीं बैठा रहूँ। (कुछ ठहरकर) मैंने भी बड़े बड़े चोर देखे और पकड़े हैं और कई बार धोखा भी खाया है। पर यहाँ तो पता ही नहीं चलता कि कौन चोर है और कौन घरका मालिक है। ऐसा गोरखधन्धा मैंने आज तक कभी नहीं देखा था।

रमेश—अजी जनाब दारोगा साहब, आपने सब कुछ देखा होगा, पर कुसुम जैसी स्त्री कहीं न देखी होगी। खैर लीजिए, सिगरेट तो पीजिए।

थानेदार—(सिगरेट लेकर) भई बात तो तुम ठीक कहते हो। यह दुनियाँ भी अजीब जगह है। इसमें एकसे एक बढ़कर चालबाज और धोखेबाज भरे हुए हैं। सभी लोग दूसरोंका माल हड़प करना चाहते हैं। अब भोला पाँडे, तुम अपने आपसे ही सब बातें समझ लो। तुम्हारी सारी ज़िन्दगी इसी तरह दूसरोंका माल हड़प करते बीती है। बिना इसके तुम्हें चैन ही नहीं पड़ता। अगर दुनियामें तुम्हारे जैसे चोर-उचक्के न होते तो मुझे यह नौकरी कैसे मिलती!

रमेश—(सिर हिलाकर मुस्कराता हुआ) जी हाँ, यह तो आप बिलकुल ठीक कहते हैं।

[नेपथ्यमें दुलारी, नानाजी और अशोककी झगड़नेकी आवाज़ आती है। जिससे पता चलता है कि अशोक अपनी सफाई देना चाहता है। पर मोहनलाल और दुलारी दोनों उसे झूठा समझते हैं।]

थानेदार—अब इन्हीं दूसरे हज़रतको देखिए। इनके पास ऐसी अच्छी बीवी है, ऐसा अच्छा मकान है, पर फिर भी नानाजीके मालपर इनकी निगाह है। और दुलारीको जो ये हथियाना चाहते हैं, वह अलग। खैर हम लोगोंको इन सब बातोंसे क्या मतलब! अब तुम उठो और मेरे साथ चलो। (उठकर चलना चाहता है। रमेश भी उसके साथ दरवाजे तक जाता है।)

रमेश—दारोगाजी, और तो आप जो कुछ कहते हैं, वह सब ठीक है। मगर मैं आपको यह बतला देना चाहता हूँ कि आप जो मुझे भोला पाँडे समझते हैं, यह आपकी बड़ी भूल है।



थानेदार—खैर, इस वक्त तो तुम मेरे साथ चलो। अगर मुझे अपनी भूल माळूम हो जायगी तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। मैं भी शरीफ आदमी हूँ। मैं शरीफोंको ज्यादा तंग नहीं करता। पर इस वक्त मैं तुम्हें किसी तरह नहीं छोड़ सकता। (सिपाहियोंसे) ले चलो जी, इसको जबरदस्ती पकड़ कर ले चलो। और अगर यह यों न माने तो जबरदस्ती घसीट ले चलो। (दोनों सिपाही रमेशके दोनों हाथ पकड़ लेते हैं।)

रमेश—अच्छा, मैं चलता हूँ।

[रमेशको साथ लेकर थानेदार और सिपाहियोंका प्रस्थान।]



चौथा दृश्य



स्थान—वही कमरा। समय दस मिनट बाद।

[कुसुम बहुत ही चिन्तित और दु:खित भावसे कुरसीपर बैठी कुछ सोच रही है। अशोक उसके सामने खिन्नचित्त होकर इधरसे उधर टहल रहा है।]

कुसुम—अगर तुम्हें इसी तरह टहलना हो जिस तरह शेर पिंजड़ेमें टहलते हैं, तो मेहरबानी करके किसी दूसरे कमरेमें चले जाओ। मेरा खयाल बँट जाता है।

अशोक—पर मेरी समझमें यह नहीं आता कि जब मैंने तुमसे कहा था कि सब बातें साफ साफ कह दो, तब भी तुमने मज़ाक क्यों किया ? और यह क्यों कह दिया कि हाँ हाँ, हम लोगोंका ब्याह हुआ है ?

कुसुम—पर जरा यह तो याद करो कि जब इससे ठीक एक मिनट पहले मैंने सब बातें साफ साफ कहनेका विचार किया था, तब तुमने यह क्यों कहा था कि यह मेरी स्त्री है ?

रमेश—उस वक्त तो मुझे बिलकुल लाचारीकी हालतमें यह बात कहनी पड़ी थी। यदि मैं यह न कहता तो मुझे जेल जाना पड़ता। और मैं तुम्हारे मज़ाकके पीछे जेल नहीं जाना चाहता था।

कुसुम—जेल तो मेरे पति भी नहीं जाना चाहते थे, पर उन्हें जाना पड़ा।



अशोक—तो क्या वह बदमाश तुम्हारा पति है ?

कुसुम—नहीं, वह बदमाश नहीं हैं ?

अशोक—तो क्या रसोइया है ?

कुसुम—नहीं, वह रसोइये भी नहीं हैं।

अशोक—(खिजलाकर कुरसीपर बैठता हुआ) खैर, वह चाहे कोई हो, मुझे उससे मतलब नहीं। मैं तो सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम किसी तरह मेरी जान इस आफतसे छुड़ा दो।

कुसुम—अगर तुम इस आफतसे अपनी जान छुड़ाना चाहते हो, तो तुम्हें उचित है कि चाहे जैसे हो, पहले मेरे पतिको जेलसे छुड़ाओ।

अशोक—भला तुम्हीं सोचो कि मैं तुम्हारे पतिको जेलसे कैसे छुड़ा सकता हूँ ? और फिर जब तक दुलारीसे मेरी सफाई न हो जाय और मैं उसे सन्तुष्ट तथा प्रसन्न न कर दूँ, तब तक मैं मकानसे बाहर ही कैसे जा सकता हूँ ? उसने अपने कमरेमें जाकर अन्दरसे दरवाज़ा बन्द कर लिया है और मेरे लाख पुकारनेपर भी उत्तर तक नहीं देती। लेकिन आखिर वह कब तक उस कमरेके अन्दर बन्द रहेगी ? आखिर कभी तो उसे उस कमरेके बाहर निकलना ही पड़ेगा। और जब वह कमरेसे बाहर आवेगी, तब मैं उसे सब बातें समझानेका प्रयत्न करूँगा।

कुसुम—तुम लाख कहो, पर वह तुम्हारी बात किसी तरह मानेगी ही नहीं।

अशोक—हाँ, यह तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह मेरी बात कभी नहीं सुनेगी। जब तुम उसे सब बातें समझाओगी



तभी वह मानेगी। और इसी लिए तो मैं चाहता हूँ कि तुम उसे समझा-बुझाकर किसी तरह इस आफतसे मेरी जान छुड़ाओ।

कुसुम—पर मैं तो इस आफतसे तुम्हारी जान तभी छुड़ाऊँगी, जब तुम मेरे पतिको पुलिसके हाथसे छुड़ाओगे।

अशोक—देखो, तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम दुलारीको सब बातें समझा दोगी। अब क्या तुम अपना वह वादा पूरा नहीं करोगी?

कुसुम—मैं अपना वादा जरूर पूरा करूँगी और दुलारीको सब बातें साफ साफ समझा भी दूँगी। पर इससे पहले तुम्हें किसी तरह मेरे पतिको पुलिसके हाथसे छुड़ाना पड़ेगा।

अशोक—लेकिन इसके लिए तो बड़े बड़े वकीलों और बेरिस्टरोंकी ज़रूरत होगी। महीनों मुकद्दमा चलेगा और सफाइयाँ देनी होंगीं, तब कहीं जाकर काम होगा।

कुसुम—मैं तुम्हें कुछ आदमियोंके नाम बतलाती हूँ। तुम इब लोगोंसे मिलो तो वे जरूर रमेशको छुड़ानेका प्रबन्ध करेंगे।

अशोक—तो क्या यही रमेशचन्द्र वर्म्मा थे जिन्हें अभी पुलिस पकड़ ले गई है?

कुसुम—हाँ, यही मेरे पति रमेश हैं। सबसे पहले उन्हें छुड़ानेका प्रबन्ध होना चाहिए।

अशोक—यदि तुम दो एक ऐसे आदमियोंके नाम बतला दो जो रमेशकी जमानत कर सकते हों, तो मैं जाकर उनसे मिलूँ और रमेशको छुड़ानेका प्रबन्ध करूँ।

कुसुम—एक तो पड़ोसमें ही डा० सत्यचरण मुकर्जी रहते हैं और उनसे हम लोगोंकी बहुत घनिष्टता है। वे सम्पन्न भी हैं

और उनका प्रभाव भी बहुत अधिक है। ये थानेदार जो अभी आये थे, इन्हें भी मैंने कई बार उनके यहाँ आते जाते देखा है। यदि तुम उनसे मिलो तो वे अवश्य रमेशको छुड़ानेका कोई न कोई प्रबन्ध करेंगे।

अशोक—(खड़ा होकर) अच्छी बात है, मैं अभी डाक्टर साहबके पास जाता हूँ। वे मेरे भी मित्र ही हैं। पर देखो, यदि इस बीचमें दुलारी कहीं जाना चाहे तो उसे हरगिज जाने न देना।

कुसुम—अच्छी बात है। तुम जाओ। तुम्हारे आने तक मैं दुलारीको रोके रहूँगी। पर देखो, एक बातका ध्यान और रखना। नानाजीको तुम यह मत बतलाना कि मैंने तुम्हें यहाँ किस तरह बुलवाया था। इस सम्बन्धमें उनसे जो कुछ कहना होगा, वह सब मैं स्वयं ही कह दूँगी।

[अशोक चला जाता है। कुसुम कुछ देर तक सोचती हुई कमरेमें इधर उधर टहलती रहती है। थोड़ी देरमें दरवाज़ेके खटखटानेकी आवाज़ आती है। कुसुम जाकर दरवाजा खोलती है। सामनेसे रमेश आता है।]

कुसुम—(बहुत प्रसन्न होकर) अरे तुम इतनी जल्दी कैसे आ गये ?

रमेश—मैं यहाँसे निकलते ही डा० सत्यचरणके दवाखानेमें चला गया और वहाँ मैंने डाक्टर साहबको ऊपरसे बुलवाया। उन्होंने आकर मेरी शिनाख्त की। इन लोगोंने मुझे किसी भोला पाँडेके धोखेमें पकड़ा था। थानेदारके साथवाला सिपाही भोला पाँड़ेको पहचानता था। उसने भी थानेदारसे कहा कि भोला पाँड़े तो लँगड़ा है। लाचार होकर थानेदारको मुझे छोड़ देना पड़ा।

कुसुम—इन सारी खराबियोंकी जड़ वही हिन्दू होटलवाला है

जिसने भोला पाँड़ेको मेरे मकानपर भेजा था। अच्छा, मैं भी उससे समझूँगी।

रमेश—कौन हिन्दू होटलवाला? और भोला पाँड़े कौन?

कुसुम—वह बहुत लम्बा किस्सा है। फुरसतके वक्त सब बातें बतलाऊँगी। मेरी तो जान निकली जा रही थी।

रमेश—और तुम्हारे वे मियाँ कहाँ गये जिन्हें तुम मँगनी माँग-कर लाई थीं?

कुसुम—बस रहने दो, हर समयकी हँसी अच्छी नहीं माळूम होती। उसे मैंने तुम्हारी जमानत करानेके लिए डा० सत्यचरणके यहाँ भेजा है। शायद वह पिछवाड़ेवाली गलीसे गया है, इसी लिए रास्तेमें तुमसे मुलाकात नहीं हुई। वहाँ पहुँचते ही उसे पता लग जायगा कि तुम छूट गये, इस लिए वह तुरन्त लौटकर यहाँ आ जायगा।

रमेश—परमात्मा करे, अब वह यहाँ कभी लौटकर न आवे। मैं तो उसका मुँह भी नहीं देखना चाहता।

कुसुम—मुँह तो मैं भी उसका नहीं देखना चाहती, पर वह आवेगा अवश्य। उसे यहाँ लाचारी हालतमें आना पड़ेगा।

रमेश—क्यों, यहाँ उसका ऐसा कौनसा काम अटका है जिसकी वज़हसे उसे लाचारी हालतमें आना पड़ेगा?

कुसुम—बात यह है कि दुलारीपर उसका बहुत अधिक प्रेम है। उसीके साथ कलकत्तेमें दुलारीका ब्याह होनेको था और इसी लिए नानाजी दुलारीको साथ लेकर कलकत्ते जा रहे थे। दुलारी उससे बहुत सख़्त नाराज़ हो गई है और उससे बात भी नहीं करती। पर प्यारे, आज तुम्हें एक तकलीफ और करनी पड़ेगी।

रमेश—वह क्या ?

कुसुम—आज तुम्हें यहीं इस टेबुलपर सोना पड़ेगा। मैं इसीपर तुम्हारे लिए बिछौना कर देती हूँ।

रमेश—क्यों, अब मैं अपने कमरेमें क्यों न सोऊँ ?

कुसुम—बात यह है कि तुम्हारे कमरेमें मैंने अशोकका बिस्तर लगवा दिया है। (टेबुलपर बिस्तर बिछाती है।)

रमेश—अच्छी बात है। आजकी रात मैं किसी तरह टेबुलपर ही बिता लूँगा। पर मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें कहनी हैं। (कुरसी खींचकर) तुम इसपर बैठ जाओ तो। (कुसुमके बैठ जाने पर) अब तक तुमने जो कुछ किया, वह सब अच्छा ही किया; पर अब जो मैं कहता हूँ, वह करो।

कुसुम—कहो, क्या कहते हो ?

रमेश—कहता यही हूँ कि सबसे पहले तुम नानाजीसे सब बातें सच सच कह दो।

कुसुम—मैं तो पहले ही सब बातें उन्हें समझाना चाहती थी। पर वे इतने सख्त नाराज़ हो गये हैं कि मेरी बात ही नहीं सुनते। यही तो आज सबसे ज्यादा मुश्किल बात थी कि कोई किसीका कहना ही नहीं सुनता था।

रमेश—मैं तो तुम्हें शुरूसे यही समझाता आता हूँ कि हमेशा सच बोला करो। पर न जाने तुम्हारी कैसी आदत पड़ गई है कि बिना झूठके तुम्हारा खाना ही हजम नहीं होता। सच बोलना सभी अवसरोंपर बहुत अच्छा होता है। पर कुछ अवसरोंपर तो सच बोलनेसे और भी अधिक लाभ होता है।



कुसुम—मैं नानाजीसे सच कहनेके लिए तो तैयार हूँ, पर सब बातें सच सच नहीं कह सकती। उनके सामने यह बात कभी मेरे मुँहसे न निकलेगी कि मैंने जान-बूझकर धोखा देनेके लिए यह स्वाँग रचा था। अगर मैंने उनसे यह बात कह दी तब तो उनका गुस्सा जनमभर दूर न होगा। हाँ, जैसे होगा, यह मैं उन्हें जरूर समझा दूँगी कि तुम मेरे पति हो।

रमेश—यह तो तुम्हें कहना ही पड़ेगा, नहीं तो वे अपने मनमें सन्देह करेंगे कि यह अशोक यहाँ कहाँसे आ पहुँचा।

कुसुम—मैं यह सोचती हूँ कि नानाजीसे कहूँ कि हमारे यहाँ जो रामूँ नौकर है, वह कोई क्रान्तिकारी है और नौकरके भेसमें ही मेरे यहाँ आकर छिपा है। और डा० अशोक छिपकर उसका भेद लेनेके लिए मेरे यहाँ आकर मेरे पतिके रूपमें ठहरे थे। वे रामूँके विरुद्ध कुछ प्रमाण एकत्र करना चाहते थे।

रमेश—बस बस, रहने दो। तुम्हारी इसी तरहकी बातोंके कारण, तो आज यहाँ तक नौबत आ पहुँची। पर फिर भी तुम्हारी अक्ल ठिकाने नहीं आती और तुम इसी तरहकी शेख चिल्लियोंकीसी बातें करती हो। भला तुम्हीं सोचो कि ऐसी अवस्थामें जब कि दुलारीके साथ डा० अशोकका ब्याह होनेवाला है, तुम्हारी इन बातोंपर नानाजी और दुलारीको कहाँ तक विश्वास होगा? और फिर भी उन्हें मालूम हो ही जायगा कि ये सब बातें बिलकुल झूठ हैं।

कुसुम—लेकिन तुम अभी नानाजीको नहीं जानते। वे सच बात-पर जल्दी कभी विश्वास ही नहीं करते। जब तक कोई बात नमक मिर्च लगाकर उनसे न कही जाय, तब तक वह बात उनके मनमें बैठती ही नहीं।

रमेश—लेकिन यह तो वे लोग जानते ही हैं कि डा० अशोक खुफिया पुलिसके आदमी नहीं हैं। और फिर मुझे जो तुमने रसोइया बनाकर खड़ा किया था, इसका जवाब तुम क्या दोगी?

कुसुम—वाह! यह तो बहुत सीधीसी बात है। जब डा० अशोकको यहाँ मेरे पति बनकर रहना पड़ा, तब यह आवश्यक हो गया कि मैं तुम्हें भी रामूँकी नजरोंसे किसी तरह छिपाकर यहाँ रखूँ, इसी लिए तुम्हें रसोइया बनाना पड़ा।

रमेश—बस बस कुसुम, मैं तुम्हें हाथ जोड़ता हूँ, अब तुम अपनी इस तरहकी बातोंका अन्त करो। मुझे दुःख है कि इतनी विपत्तियाँ झेलनेपर भी तुम्हारी आँखें नहीं खुलतीं। मैं अब तक यही सोचकर तुम्हारी इस तरहकी बातोंकी ओर विशेष ध्यान नहीं देता था कि यह तुम्हारा अल्हड़पन है; और जब तुम सयानी होगी, तब तुम्हारी यह आदत आपसे आप छूट जायगी। पर मैं देखता हूँ कि ज्यों ज्यों तुम बड़ी होती जाती हो, त्यों त्यों तुम्हारी ये सब बातें और भी बढ़ती जाती हैं। अब मैं इन बातोंको, जैसे हो, सदाके लिए रोकना चाहता हूँ। मैं बहुत दुर्दशा भोग चुका हूँ। अब मुझसे नहीं सहा जाता।

कुसुम—पर प्यारे, यह तो तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैंने जो कुछ किया, वह अपनी समझसे अच्छा ही किया। कोई बात तुम्हें नुकसान पहुँचानेके लिए नहीं की, बल्कि तुम्हारी इज्जत बढ़ानेके लिए ही की।

रमेश—तुम तो अपनी समझसे सब कुछ अच्छा ही करती हो, पर इसमें मेरी जो दुर्दशा होती है, वह मैं ही जानता हूँ। अब

इसी मामलेमें देखो कि मुझे कितना अधिक अपमानित और लज्जित होना पड़ा है।

कुसुम—पर यह सब तो मैंने इसी लिए किया था जिसमें मुन्नूको नानाजीकी सारी ज़ायदाद मिल जाय।

रमेश—बस, यही तो तुममें सबसे बड़ा दोष है कि तुम धन और सम्पत्तिको ही सब कुछ समझती हो। तुम चाहती हो कि हमारे पास बहुतसा धन हो जाय, बहुतसी सम्पत्ति हो जाय, फिर उसके लिए चाहे कितने ही झूठ क्यों न बोलना पड़े, और कितना ही अधिक अपमानित क्यों न होना पड़े।

कुसुम—झूठ? झूठ मैं कब बोलती हूँ?

रमेश—यह सब झूठ नहीं तो और क्या है? तुम चाहे इन बातोंको अपने मनमें चालाकी और होशियारी भले ही समझ लो, पर दुनियाकी निगाहोंमें यह झूठ ओर सफेद झूठके सिवा और कुछ है ही नहीं। मैं तो इस सम्पत्तिको लात मारकर ठुकरा दूँ, पर इस तरहकी झूठी बातें कभी न कहूँ। मैं देखता हूँ कि तुम सिर्फ पैसेकी गुलाम हो।

कुसुम—प्यारे, तुम मुझे पैसेकी गुलाम बतलाते हो, पर एक बात तुम भूले जाते हो। यदि मैं सचमुच सिर्फ पैसेकी ही गुलाम होती तो अपने घरमें रहकर अपने नानाजीकी सारी सम्पत्ति भी अनायास ही पा सकती थी और साथ ही उस सेठसे ब्याह करके लाखों रुपयेकी मालिक बन सकती थी। मैंने सब सुखोंपर लात मारकर तुम्हारे साथ कैसे कष्टसे बरसों बिताये हैं, पर तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा। इतने दिनों तक घर-गृहस्थीका सारा काम मैं अकेली ही करती रही हूँ,

पर कभी मैंने तुमसे कोई शिकायत नहीं की और सब कष्ट बहुत ही प्रसन्नतापूर्वक सहे हैं। कभी घरके जरूरी खर्चोंके सिवा मैंने एक पैसा भी तुमसे ज्यादा नहीं लिया। और इतना सब कुछ होनेपर भी तुम कहते हो कि मैं पैसेकी गुलाम हूँ!

(टेबुलपर रखे हुए तकियेपर सिर रखकर रोने लगती है।)

रमेश—नहीं प्यारी, तुम रोओ मत। तुमने मेरी बातका मतलब नहीं समझा। मैं तो तुम्हारे पीठ पीछे सब लोगोंसे तुम्हारी निष्ठा और प्रेमकी हृदयसे प्रशंसा करता हूँ। खैर, अब जाने दो और मुझे माफ करो।

कुसुम—बस बस रहने दो, मैं सब समझती हूँ। अब तुम अपनी उसी आशनाके पास जाओ जो अभी थोड़ी देर पहले यहाँ आई थी और जिसे तुमने चाँदीकी थालियाँ वगैरह उठाकर दे दी थीं।

रमेश—प्यारी कुसुम, तुम्हें आज क्या हो गया है? मैंने तो वह सब सामान स्वयं कमलाको दिया था।

कुसुम—कमलाको कहाँ दिये थे? झूठ, बिलकुल झूठ!

रमेश—नहीं प्यारी, तुम जानती हो कि मेरी झूठ बोलनेकी आदत नहीं है। मैं तुमसे बिलकुल सच कहता हूँ। मदनका टेलिफोन आया था और वे आज ही रातको एक बजे तक यहाँ आनेको थे। इसी लिए कमलाने आकर सारा हाल मुझसे कहा। वह बोली कि मदन आकर देखेंगे कि यहाँ सामान नहीं है तो वे नाराज़ होंगे। इसी लिए मैंने वह सब सामान कमलाको दे दिया। बस, इसके सिवा न तो यहाँ और कोई आया और न कोई दूसरी बात हुई।

कुसुम—अच्छा तो अब तुम इन सब बातोंको जाने दो और मुझे माफ कर दो।

[मोहनलाल कपड़े वगैरह पहनकर और हाथमें बेग लिए हुए बाहर जानेको बिलकुल तैयार होकर आ पहुँचते हैं। उन्हें देखते ही रमेश कुसुमको छोड़कर दूर हट जाता है।]

मोहनलाल—कुसुम, तुम्हें लज्जा नहीं आती ! इसी लिए तुम इस रसोइयेको जेल नहीं जाने देना चाहती थीं !

कुसुम—(भयभीत होकर) नानाजी, आप कपड़े पहनकर कहाँ जानेके लिए तैयार हुए हैं ?

मोहनलाल—बस, मैंने अच्छी तरह समझ लिया कि तू कुलटा है। अब मैं तेरा मुँह भी नहीं देखना चाहता। यही सब देखना बाकी रह गया था। सो आज यह भी देख लिया। पर अब इससे ज्यादा न तो मैं और कुछ देखना चाहता हूँ और न तेरी कोई बात सुनना चाहता हूँ। एक रसोइयेके साथ इस तरह बातें करते हुए तुझे लज्जा नहीं आती ?

कुसुम—मगर नानाजी, ये रसोइये नहीं हैं।

मोहनलाल—यह रसोइया नहीं बहुत बड़ा राजा महाराजा ही सही। पर इससे क्या ? मैं तो सिर्फ तेरे ये लच्छन देखता हूँ।

कुसुम—नानाजी, आप जरा शान्त होकर पहले मेरी सब बातें सुन लें तो फिर सब कुछ आपकी समझमें आ जायगा।

मोहनलाल—मैं कुछ भी समझना बूझना नहीं चाहता।

[अशोकका प्रवेश]

मोहनलाल—लो, ये आ गये हैं। इन्हींको जो कुछ समझाना हो वह समझाओ। मैं सब कुछ समझ-बूझकर बैठा हूँ। (अशोकसे) रमेश, अपनी करतूतोंका फल देखो। तुम तो इधर उधरकी औरतोंके पीछे मारे मारे फिरते हो और यहाँ तुम्हारी आस्तीनके अन्दर ही एक काला नाग घुसा हुआ बैठा है।

अशोक—(चकपकाकर) नानाजी, काला नाग कैसा ? मैं आपका मतलब नहीं समझा।

मोहनलाल—यही तुम्हारा रसोइया, दुनिया भरका चोर और बदमाश, जिसे तुमने अपने सारे घरका मालिक बना रखा है।

अशोक—(अपने आपको रमेशके रूपमें प्रकट करनेके लिए रमेशसे) देखो जी, यह तुम्हारी नालायकी मुझे अच्छी नहीं लगती। अगर फिर कभी मैं तुम्हारी कोई शिकायत सुनूँगा तो तुम्हें कान पकड़कर घरसे निकाल दूँगा।

मोहनलाल—बस, जो कुछ कहना था, वह कह चुके ?

अशोक—जी हाँ, इससे ज़्यादा मैं और क्या कह सकता हूँ ? मैंने इसको सचेत कर दिया है।

मोहनलाल—बस, इससे ज़्यादा तुम और कुछ नहीं कर सकते ?

अशोक—अब इससे ज़्यादा मैं और क्या कर सकता हूँ ! मैंने तो इसे घरसे निकाल दिया था और यहाँ तक कि जेल भी भेज दिया था। पर देखता हूँ कि यह फिर यहाँ आ पहुँचा है। अब आप ही बतलाइए कि मैं इसका क्या इलाज करूँ ?

रमेश—(मोहनलालसे) नानाजी, भूल-भुलैयामें तो सब लोग बहुत भूल चुके। पर अब मैं चाहता हूँ कि सब बातोंकी सफाई हो जाय और आप लोग समझ लें कि असल बात क्या है।

[दुलारीका प्रवेश]

अशोक—हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ कि सब बातोंकी सफाई हो जाय, जिसमें (दुलारीकी ओर संकेत करके) इनके मनका सन्देह भी निकल जाय।

दुलारी—जी नहीं, आप मेहरबानी कीजिए। बहुत सफ़ाई हो चुकी। अब आप अपनी घर-गृहस्थी लेकर आरामसे रहें। हम लोग यहाँसे जा रहे हैं।

अशोक—दुलारी, यह घर-गृहस्थी मेरी नहीं है, बल्कि रसोइयेकी है।

दुलारी—बस, आपको यही कहना है या कुछ और भी?

अशोक—नहीं, सिर्फ यही कहना है और यह बात मैं तब तक कहता रहूँगा, जब तक तुम्हें इसपर पूरा पूरा विश्वास न हो जाय। और फिर घर-गृहस्थीके मालिक यहाँ मौजूद हैं। इन्हींसे पूछ देखो।

दुलारी—(रमेशसे) आपका क्या नाम है?

रमेश—रमेशचन्द्र वर्म्मा।

दुलारी—आपकी स्त्रीका क्या नाम है?

रमेश—कुसुम।

दुलारी—(अशोककी ओर संकेत करके) और ये कौन हैं?

रमेश—मैं नहीं जानता।

मोहनलाल—क्यों रमेश, आखिर तुमने सब बात कह देना ही मुनासिब समझा? खैर, यह भी अच्छा ही किया।

रमेश—पर नानाजी, आपने यह कैसे जाना कि मैं सचमुच रमेश ही हूँ और इस समय मैंने जो कुछ कहा है वह सच है।

मोहनलाल—तुम मुझसे पूछते हो कि मैंने यह कैसे जाना कि तुम सचमुच रमेश हो? भला, इसका क्या पूछना है! ब्याहके थोड़े ही दिनों बाद कुसुमने एक फोटो मेरे पास भेजा था जिसमें तुम

कुरसीपर बैठे थे और तुम्हारे पीछे तुम्हारे कन्धेपर हाथ रखे कुसुम खड़ी थी। तभीसे मैं तुम्हारी शकलसे वाकिफ हूँ और डा० अशोकको भी मैं खूब पहचानता हूँ। इनके कई चित्र दुलारीके कमरेमें हैं।

कुसुम—तो फिर नानाजी, आपने यह बात पहले ही क्यों न कह दी?

मोहनलाल—जब मैंने देखा कि तुम लोग मज़ाक कर रहे हो, तब सोचा कि मैं भी क्यों न चुप रहकर अच्छी तरह यह तमाशा देखूँ।

कुसुम—नानाजी, मैं तो पहले ही आपसे सब बातें कहना चाहती थी, पर आपने मेरी बातें सुनी ही नहीं।

मोहनलाल—मुझे सुननेकी ज़रूरत ही क्या थी! मैं तो शुरूसे ही जानता हूँ कि तुम इसी तरह नाटकोंकी रचना और अभिनय किया करती हो। मैं भी मजेमें तमाशा देखता रहा।

कुसुम—तो फिर आप अभी यहाँसे जानेके लिए क्यों तैयार हो रहे थे?

मोहनलाल—तो तुमने क्या समझा था कि मैं सचमुच यहाँसे चला जा रहा था? अरे बेवकूफ, मैं तो सिर्फ थाने तक जा रहा था और चाहता था किसी तरह रमेशकी ज़मानत वग़ैरहका इन्तज़ाम करके उसे छुड़ा लाऊँ।

कुसुम—पर नानाजी, आप सब कुछ जान-बूझकर भी इस तरह चुपचाप तमाशा देखते रहे, यह आपने अच्छा नहीं किया।

मोहनलाल—मैं तो सिर्फ यही जानता था कि ये रमेश हैं और ये अशोक हैं। इसके सिवा और कुछ तो मुझे मालूम नहीं था। मेरी समझमें तो अब तक यह न आया कि तुम लोग क्यों मुझे इस तरह धोखा देना चाहते थे।

कुसुम—नानाजी, सच बात तो यह है कि मैं आपको धोखा नहीं देना चाहती थी। यह सारा बखेड़ा उसी कम्बख़्त विमलाके कारण हुआ है। वह मुझे जो पत्र भेजा करती थी, उसमें खूब शेखियाँ बघारा करती थी। लिखती थी कि मेरा ऐसा आलीशान मकान है, ऐसी मोटर है, इतने नौकर-चाकर हैं, वगैरह वगैरह। और मैं उससे इस तरहकी बातोंमें कभी दबना नहीं चाहती थी, इस-लिए मैं भी उसे इसी तरहके जवाब दिया करती थी। और मैं जानती थी कि वह मेरे सब पत्र मौसीको जरूर दिखला-ती होगी। बस, इसीलिए मुझे ये सब बखेड़े करने पड़े थे।

मोहनलाल—क्या विमला भी तुम्हारे पत्रोंमें शान जतलाया करती थी?

कुसुम—जी हाँ, उसी कम्बख़्तने तो यह सिलसिला शुरू किया था।

मोहनलाल—हाँ, अब समझा। तो अब जरा उसका भी हाल सुन लो। आजकल वह रतनचन्दके साथ दो रुपये महीने किरायेकी एक गन्दी और अँधेरी कोठरीमें रहकर बहुत ही मुश्किलसे अपना गुज़ारा कर रही है। अब मुझे इस बातकी खुशी होती है कि तुम्हारा ब्याह रतनचंदके साथ नहीं हुआ।

कुसुम—(चकित होकर) क्या वह किरायेकी अंधेरी और गन्दी कोठरीमें रहती है? उसके पतिके पास तो बहुत अधिक सम्पत्ति थी।

मोहनलाल—वह सारी सम्पत्ति उसने सट्टेमें गँवा दी और अब वह पैसे पैसेको मोहताज हो गया है। खाने तकका ठिकाना नहीं है।

कुसुम—और उसकी वह मोटरें और बँगले वगैरह क्या हुए?

मोहनलाल—कहाँकी मोटर और कहाँका बँगला। अरे पागल, कह तो रहा हूँ कि खाने तकका ठिकाना नहीं है।

कुसुम—(दुःखी होकर) राम राम! पर अभी दो महीने पहले

तक उसके पत्र आते थे, उनमें भी इसी तरहकी बातें होती थीं। पर इधर तो उसका कोई पत्र आया ही नहीं।

मोहनलाल—उन लोगोंकी यह हालत तो तीन चार बरसोंसे चल रही है। और अब बेचारी किसी तरह अपना पेट पाले या तुम्हें पत्र भेजे। खैर, चलो अच्छा हुआ कि यह भी मुझे मालूम हो गया। नहीं तो मैं अभी तक यही समझता था कि तुम लोगोंने यह सारा जाल मेरी सम्पत्ति हथियानेके लिए ही फैलाया है।

कुसुम—जी नही, आपकी कृपासे परमात्माका दिया हुआ जो कुछ मेरे पास है, उसीसे मैं सन्तुष्ट हूँ। पर अब मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि इस ज़िन्दगीमें कभी झूठ न बोलूँगी और न कभी किसीके सामने झूठी शेखी बघारूँगी।

[कमलाका प्रवेश]

कुसुम—(खूब हँसती हुई) आओ बहन, यहाँ तो सारा भंडा ही फूट गया। नानाजी पहले ही जानते थे कि असली रमेश कौन हैं और अशोक कौन हैं। पर वे भी चुपचाप तमाशा देख रहे थे। और तुम्हें एक खुशीकी खबर सुनाऊँ। तुम्हारे भाई अशोकजीसे ही मेरी बहन दुलारीका ब्याह होनेवाला है।

कमला—यह तो बड़ी अच्छी बात है। पर यह तो बतलाओ कि मेरे चाँदीके बरतनोंका क्या झगड़ा है?

रमेश—वे सब बरतन तो एक टोकरीमें रखकर मैंने यहीं खिड़कीके पास रख दिये थे और साथ ही ग्रामोफोन भी रख दिया था। क्या वे सब सामान तुम ले नहीं गई?

कमला—ना, बिलकुल नहीं।

कुसुम—तो फिर वे सब चीजें गई कहाँ?

कमला—मैं क्या जानूँ !

कुसुम—(बहुत ही दुःखी और चिन्तित होकर) वाह ! यह तो बड़े ताज्जुबकी बात है।

रमेश—मैं तो यही समझता था कि तुमने वे सब चीजें उठा ली होंगीं। (हँसकर) लेकिन सच बतलाओ कमला, कहीं तुम भी तो मज़ाक नहीं कर रही हो ?

कमला—(बहुत गम्भीरतापूर्वक) नहीं नहीं, मैं सच कहती हूँ। मैं इसी इन्तज़ारमें थी कि तुम वे सब चीजें लेकर आ रहे हो।

रमेश—(चिन्तित भावसे) तो फिर आखिर वे सब चीजें यहाँसे ले कौन गया ?

कुसुम—रामूँको बुलाकर उससे पूछो।

रमेश—हाँ, यह हो सकता है कि उसीने कहीं उठाकर वे सब चीजें रख दी हों। (पुकारती है) रामूँ, रामूँ !

[रामूँका प्रवेश।]

रामूँ—जी हाँ।

रमेश—अभी मैंने यहाँ खिड़कीके पास ग्रामोफोन और एक टोकरीमें चाँदीके बरतन रखे थे। तुम्हें माल्रम है कि वे सब कहाँ हैं ?

रामूँ—जी मुझे तो नहीं माल्रम। पर जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह उसी बदमाश भोला पाँड़ेका काम है जो शामको यहाँ रसोइया बनकर आया था।

कुसुम—हाँ, तुम ठीक कहते हो। वह जरूर चोर था। पर इस वक्त वह यहाँ आया कहाँसे ?

रामूँ—जी, यह न पूछिए। मैंने घण्टे-डेढ़-घण्टे पहले एक बार उसे बाहरवाली खिड़कीसे अन्दरकी ओर झाँकते हुए देखा था।

कमला—तब यह जरूर उसीका काम है। पर मुश्किल तो यह है कि अब किया क्या जाय और उसका पता कैसे चले !

कुसुम—उसी हिन्दू होटलवालेसे पूछना चाहिए जिसने उसे यहाँ भेजा था।

कमला—पर मदनके आनेमें अब देर नहीं है। और मैं चाहती थी कि उनके आनेसे पहले सब सामान घरमें पहुँच जाय।

रमेश—तो क्या पुलिसमें रिपोर्ट करनी चाहिए?

रामूँ—पुलिसमें भी रिपोर्ट करनी चाहिए और हिन्दू होटलवालेसे भी पूछना चाहिए।

[बाहर दरवाज़ा खटखटानेका शब्द होता है।]

रमेश—रामूँ, देखो बाहर कौन है।

[रामूँ जाकर दरवाज़ा खोलता है और दो भले आदमियों और भोला पँड़िको साथ लिये हुए आता है। भोला पँड़िके सिरपर बरतनोंकी टोकरी है और हाथमें ग्रामोफोन है।]

पहला आगन्तुक—रमेशचन्द्र वर्म्माका यही मकान है?

रमेश—जी हाँ, मैं ही रमेश हूँ। कहिए क्या आज्ञा है?

आगन्तुक—(भोलाकी ओर संकेत करके) यह आपका नौकर है?

कुसुम—यह नौकर नहीं चोर है। हमारे यहाँसे सामान चुराकर भागा है। हम लोग तो अभी थानेमें रिपोर्ट करने जा रहे थे।

दूसरा आगन्तुक—मैं तो पहले ही इसकी बातोंसे समझ गया था कि यह चोर है। कम्बख्त कहता था कि बाबूसाहबके साथ यह सामान लेकर स्टेशन जा रहा था। जब हम लोगोंने इसे बहुत धमकाया और कहा कि हम तुमको थानेमें ले चलेंगे, तब यह बहुत रोने और गिड़गिड़ाने लगा और बोला कि जहाँका सामान है, वहीं पहुँचा देता हूँ। इसी लिए हम लोग इसे अपने साथ लेकर यहाँ तक आये हैं।

रमेश—यह तो आप लोगोंकी बहुत बड़ी कृपा है । और आप लोगोंने यहाँ तक आने का कष्ट किया, इसके लिए मैं आप लोगोंका बहुत अनुगृहीत हूँ ।

पहला आगन्तुक—जी नहीं, इसमें धन्यवाद देने या अनुगृहीत होनेकी कोई बात नहीं है । हम लोग सेवा-समितिके सदस्य हैं और लोगोंकी इस प्रकारकी सेवाएँ करना अपना कर्तव्य समझते हैं । (भोलासे) रख बे सब सामान यहाँ !

[भोला पाँड़े ग्रामोफोन और सिरसे टोकरी उतारकर धीरेसे जमीनपर रखता है और जल्दीसे भागकर बाहर चला जाता है । दोनों आगन्तुक उसका पीछा करने जाते हैं, पर रमेश उन लोगोंको रोक लेता है ।]

रमेश—जाने दीजिए । आप पहले ही बहुत कष्ट कर चुके हैं । वह किसी गलीमेंसे भागकर दूर निकल गया होगा । इस अँधेरी रातमें पानीमें भीगते हुए आप लोग उसे कहाँ ढूँढ़ने जायँगे !

दू० आगन्तुक—निकलकर जायगा कहाँ ! वह लँगड़ा है, ज्यादा तेजीसे चल भी तो नहीं सकता ।

मोहनलाल—भाई जाने दो, फिर भी ब्राह्मण है । उसपर दया करो । गरीब है ।

आगन्तुक—ऐसे बदमाशोंको तो सीधे पुलिसमें भेज देना चाहिए ।

अशोक—पुलिस तो खुद ही उसकी तलाशमें है । शामको थानेसे यहाँ उसके बारेमें टेलीफोन आया था और थानेदारने कहा था कि इस मकानके आसपास एक सिपाही भी तैनात रहेगा जो उसे देखता रहेगा ।

आगन्तुक—अजी पुलिसवालोंको क्या पड़ी है कि इस पानीमें भीगकर उसका पता लगाते फिरेंगे । और फिर यदि पुलिस उसके

पछि लगी है, तो वह आज नहीं तो कल और कल नहीं तो चार दिन बाद गिरफ्तार हो ही जायगा।

रमेश—अच्छा अब आप लोग उसकी चिन्ता छोड़ दें और जरा बैठकर आराम करें।

आगन्तुक—जी, यह आराम करने या सुस्तानेका समय नहीं है। रात बहुत हो गई है और हम लोगोंको अभी बहुत दूर जाना है।

[दोनों आगन्तुक सब लोगोंको अभिवादन करके बिदा होते हैं। सब लोग उन्हें दरवाज़े तक पहुँचाने जाते हैं और लौटकर फिर कमरेमें आ जाते हैं।]

रमेश—(कमलासे) कमला, तुम बड़ी भाग्यवान् हो। तुम्हारा सब सामान इतनी जल्दी और इतने सहजमें घर बैठे मिल गया।

अशोक—(रमेशसे) अजी ज़नाब, भाग्यवान् तो आप अपने आपको समझें। अगर यह सामान न मिलता तो इसका दाम आपको चुकाना पड़ता।

कमला—नहीं, दाम तो मैं किसीसे न लेती। पर हाँ, सैकड़ों रुपयोंकी चीजोंका नुकसान तो हो ही जाता।

कुसुम—पर बहन, यह भोला पाँड़े भी बड़ा पक्का चोर निकला।

रामूँ—जी, मैंने तो पहले ही कह दिया था कि यह भारी चोर और बदमाश मालूम होता है।

कमला—देखा नहीं, कैसी कैसी बातें बनाता था और कैसा गरीब और सीधा बनता था!

कुसुम—और चलते वक्त मुएने त्यौरियाँ कैसी बदली थीं!

मोहनलाल—खैर जो कुछ हुआ, वह बहुत अच्छा हुआ। (रमेशसे) देखो रमेश, अब मैंने अपना विचार कुछ बदल दिया है। मैं चाहता हूँ कि अपनी आधी ज़ायदाद तुम्हें और आधी डा० अशोकको दे दूँ। तुम्हारी क्या राय है?

रमेश—जैसी आपकी इच्छा। मुझे यदि आप आधी भी न दें, तो भी मैं प्रसन्न हूँ।

मोहनलाल—नहीं नहीं। यह तो कभी हो ही नहीं सकता। मैंने जो कुछ निश्चय किया है, वही बिलकुल ठीक है। और कल सवेरे इसकी पक्की लिखा-पढ़ी हो जायगी।

अशोक—(कुसुमसे) पर तुमने जो (दुलारीकी ओर संकेत करके)—इनको नाराज़ कर दिया है, उसका भी तो कुछ इन्तज़ाम करोगी या मुझे यों ही सजा मिलती रहेगी?

कुसुम—अब तो कुछ इनाम दिलवाइए तो काम चले।

अशोक—व्याहमें जो कुछ दहेज मिलेगा, उसमेंसे आधा तुम्हारा।

रमेश—अशोकजी, आप तो व्यर्थ ही चिन्तित हो रहे हैं। यह तो नानाजी पहले ही निश्चय कर चुके हैं कि कल आपके साथ दुलारीका व्याह होगा; तब फिर आपको फिक्र किस बातकी है?

अशोक—हाँ, आपका यह कहना तो ठीक है। पर मैं चाहता हूँ कि पहले (दुलारीकी ओर संकेत करके) इनके दिलकी सफाई हो जाय।

कुसुम—जब आपने आधी रकम मुझे देनेको कहा है तो फिर समझ लीजिए कि सफाई हो गई।

अशोक—यह तो मैं भी समझता हूँ कि सफाई हो गई, पर यह भी तो अपने मुँहसे कुछ कहें।

दुलारी—अब असली सफाई तो तभी होगी जब मैं भी किसी दिन बहन कुसुमकी तरह कहींसे मँगनीके मियाँ माँगकर लाऊँगी।

[परदा गिरता है।]

समाप्त